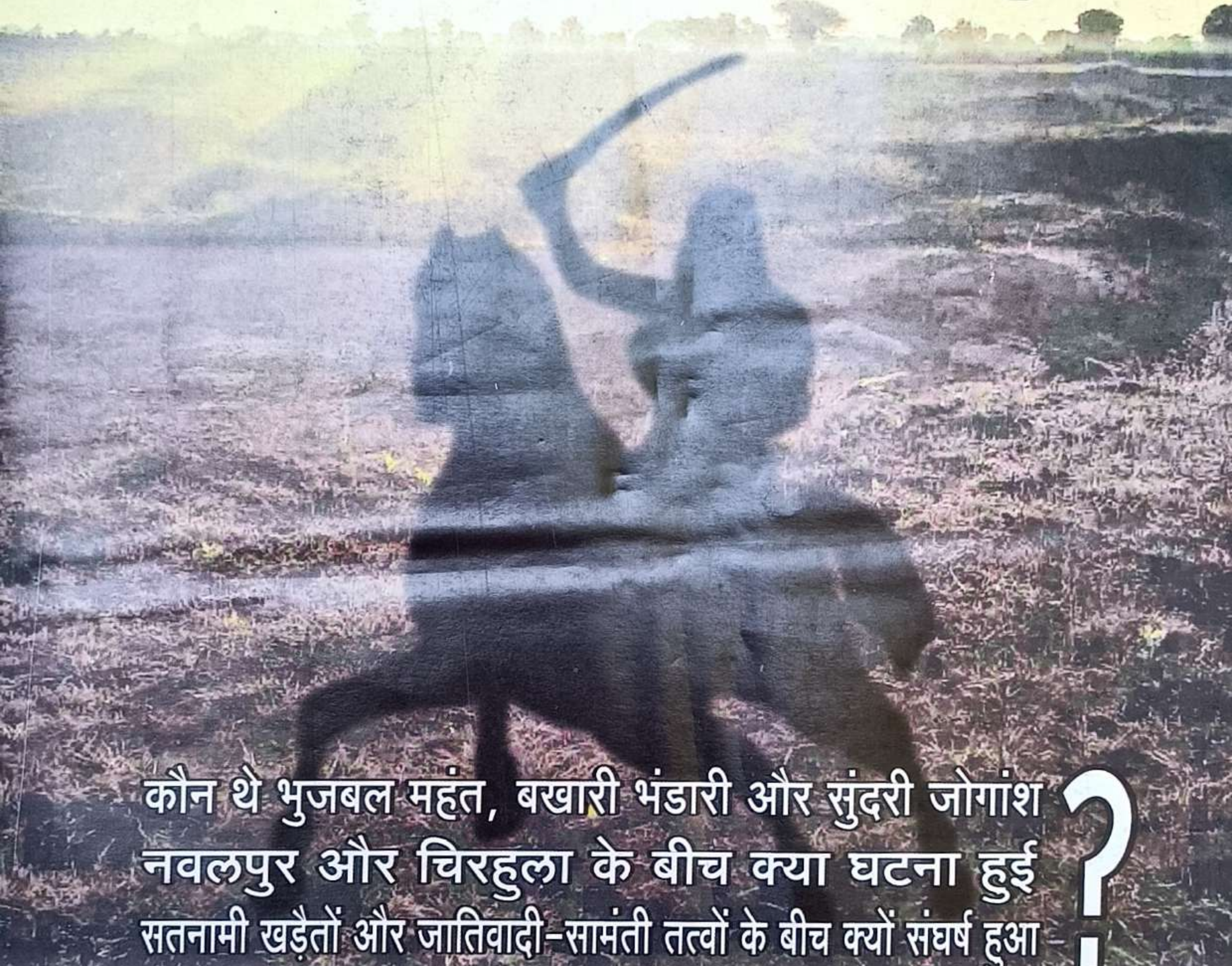
अभी तो ये आगाज़ है, अंजाम तक ले जायेंगे।
स्वाभिमान की शौर्यगाथा, जन-जन तक पहुँचायेंगे।।

मिशन उड़ान

26 अप्रैल : महान् ऐतिहासिक अभियान की स्मृति में

मानवाधिकार स्वाभिमान दिवस



कौन थे भुजबल महंत, बखारी भंडारी और सुंदरी जोगांश ?
नवलपुर और चिरहुला के बीच क्या घटना हुई ?
सतनामी खड़ैतों और जातिवादी-सामंती तत्वों के बीच क्यों संघर्ष हुआ ?

ब्रिटिश काल में जातिवादी-सामंती-असमानतावादियों के खिलाफ सन् 1883 ई. में सतनामी खड़ैतों (योद्धाओं) द्वारा मानवाधिकार व स्वाभिमान के लिए किया गया महान ऐतिहासिक अभियान

सहयोग राशि : ₹ 40/-

सादर समर्पित

यह स्मारिका / पत्रिका साहेब भुजबल महंत, साहेब बखारी भंडारी और साहिबा सुन्दरी जोगान्स के साथ ही उन सभी ज्ञात व अज्ञात सतनामी खड़ैतों / योद्धाओं को समर्पित है, जिन्होंने मानवाधिकार और स्वाभिमान के लिए जातिवादी-सामंती-असमानतावादी तत्वों से संघर्ष करते हुए सतनाम-दमन-काल के सन् 1883 ई.के अप्रैल माह में टेसुआ नदी के किनारे दमनकारी-शोषकों को आमने-सामने के सशस्त्र संघर्ष में हराया और अपने मानवाधिकार व स्वाभिमान की रक्षा की।

- लेखक / संपादक मंडल

स्मारिका का नाम	:	मानवाधिकार स्वाभिमान दिवस
संस्करण	:	प्रथम संस्करण, अप्रेल 2018
प्रकाशन वर्ष	:	दिसम्बर 2018
प्रेरणास्रोत	:	दिवंगत साहेब भुवनलाल रात्रे (सतनामी इतिहास के महान खोजकर्ता)
लेखक / संपादक मंडल / रचनाकार	:	कुमार (रामकुमार लहरे), हरीश पांडल, जगतारन डहरे, दुर्गाप्रसाद मेरसा, टेकचंद पांडल, गणेश महंत, चिंतामणी देशलहरे व राजेश कोसले
अतिथि रचनाकार	:	श्रीमती ननकी पात्रे
सहयोग राशि	:	₹ **40/-** (चालीस रुपये मात्र) स्मारिका निजी वितरण हेतु
प्रधान संपादक	:	हरीश पांडल
मुख्य लेख, आवरण चित्र, स्मारिका परिकल्पना	:	कुमार (रामकुमार लहरे)
प्रूफ रीडिंग	:	भरतलाल कुर्रे
स्थल दौरा सहयोगी	:	कुमार (रामकुमार लहरे), हरीश पांडल, टेकचंद पांडल, इन्द्रकुमार भारद्वाज, कोमल दिवाकर, सत्यनारायण माथुर, गंगा जोशी, जगतारन लहरे, दुर्गाप्रसाद मेरसा, रुपेश बंजारे व सतीश बर्मन
फोटोग्राफी	:	इन्द्रकुमार भारद्वाज
टाईप सेटिंग	:	एम.एल.श्रीवास, मास्टर ग्रॉफिक्स, बिलासपुर (छ.ग.)
कानूनी सलाहकार	:	ओमप्रकाश गंगोत्री
प्रकाशक	:	सतनाम पुनर्जागरण मिशन (SPM), बिलासपुर (छ.ग.)
सम्पर्क वाट्सएप नम्बर	:	9752197165, 7898992499
ई-मेल	:	**kumarlahare@gmail.com**
पत्राचार एवं स्मारिका हेतु डाक पता	:	हरीश पांडल, म.नं.1583, वार्ड नं,08, पांडल निवास, सांईबाबा हॉस्पिटल के सामने, रिंग रोड नं.02, गौरवपथ, बिलासपुर (छ.ग.) 495001
न्यायालयीन क्षेत्र	:	बिलासपुर, छत्तीसगढ़ (छ.ग.)

- सभी लेखक / कवि / रचनाकार / सहयोगी व कर्मचारी अवैतनिक है

इस ऐतिहासिक अभियान-गाथा को प्रकाशित करने का उद्देश्य किसी भी कथित जाति-वर्ग का समर्थन या विरोध करना नहीं है, बल्कि जातिवादी-सामंती-असमानतावादी विचारधारा के विरुद्ध समानतावादियों के जीत को प्रतिष्ठित कर मानवाधिकार और समतावादी विचारधारा को प्रोत्साहित करना है - **लेखक / संपादक**

संपादकीय



सतनामियों का अपना स्वर्णिम इतिहास रहा है, लेकिन ऐसा क्या कारण है कि उस महत्वपूर्ण इतिहास को दबाने-छिपाने का प्रयास किया गया। आज सतनामी जिस इतिहास से परिचित हैं, वह पूर्णरुप से काल्पनिक, मिथकीय और अंधविश्वास से ओत-प्रोत किस्सा कहानी से ज्यादा कुछ भी नहीं है। यह विडंबना ही है कि किसी भी साहित्यकार या बुद्धिजीवी ने इस महत्वपूर्ण ऐतिहासिक पहलुओं पर ध्यान नहीं दिया। सवर्णो की साम-दाम-दण्ड-भेद की नीति का शिकार होकर रह गया, सतनामियों का इतिहास।

सवर्ण कुल के बाहर के गौरवशाली व उज्जवल तथ्यों को चाहे वह कितना भी महत्वपूर्ण क्यों न हो उसे सवर्ण उजागर नहीं होने देते। इसका कारण है उनका यह डर कि देश के पिछड़ों-मूल निवासियों को उनके इतिहास का एक भी झलक मिल जाए तो बाद में किसी न किसी तरह मंजिल तक ये उपेक्षित शोषित पीड़ित लोग पहुंचकर ही दम लेंगे। और अगर ये लोग अपना इतिहास जान गये तो इनमें आत्मगौरव व स्वाभिमान जाग उठेगा। जिस गुलामी की बेड़ियो को संस्कृति, धर्म और वर्ण व्यवस्था के नाम पर उन्होंने इनके पैरों पर डाल रखी है। स्वयं के गौरव और स्वाभिमान को वापस हासिल करके ये बगावत कर देंगे और यही कारण है कि देश का वर्तमान इतिहास एक गहरे षड़यंत्र के तहत मात्र सवर्ण राजसत्ता से भरा पड़ा हुआ है।

यहां ये प्रश्न उठता है कि क्या देश का पिछड़ा वर्ग अपना इतिहास जानते हैं? क्या इन लोगों ने पूर्व में कोई ऐतिहासिक शौर्यपूर्ण कार्य नहीं किये होंगे? क्या इनका खून पानी था? क्या ये केवल गुलाम ही थे सदियों से? नहीं बिल्कुल नहीं, इन लोगों ने भी ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण कार्य सम्पूर्ण समाज के लिए किये हैं लेकिन उसे दर्ज नहीं किया गया। पूर्व में लोगों ने यदि अपने इतिहास को लिपिबद्ध किया होता तो अवश्य ही आज के लोगों को अपने गौरवशाली इतिहास की जानकारी होती।

एक कहावत है 'जब जागे तभी सबेरा' आज हम उन महापुरुषों के किये गये ऐतिहासिक कार्यो की समाज व दुनिया कि सामने साहित्य के माध्यम से सामने ला रहे हैं।

सतनामियों में पूर्व से ही समता, समानता और बंधुत्व की भावना और मूल्य गहरे तक मन मस्तिष्क में पैठ कर चुका है। वे अपने को न तो किसी से उच्च या श्रेष्ठ समझते हैं न ही किसी को अपने से कमतर मानव मानव के बीच असमानता की भावना इनमें दूर-दूर तक नहीं है। इनमें धर्म- संस्कृति, भाषा, बोली, शादी विवाह, पर्व त्यौहार हंसी मजाक नृत्य-गीत जैसे सामूहिक कार्यो में कभी भी ऊंच-नीच, भेद-भाव, छुआछुत की परंपरा नहीं रही है। पक्षपातिय भावनाओं और कमजोरों पिछड़ों के शोषण पर आधारित सिद्धांत के द्वारा नियंत्रित करने की बाहरी दुर्गुणों को सतनामियों ने हमेशा अस्वीकार किया हैं।

एक समय था जब सतनामी किसी का गुलाम नहीं था, लेकिन आज तो सभी लोग सतनामियों को अपना गुलाम बनाना चाहते हैं। गैर सतनामियों तथा कुछ नामधारी सतनामी दलाल अपने स्वार्थ में डूबे तत्व सतनामियों को सामाजिक, सांस्कृतिक धार्मिक आर्थिक और राजनैतिक रुप से अपने अधीन करना चाहते हैं। जिसमें वे काफी हद तक कामयाब भी हुए हैं। ऐसे लोगों की दिली ख्वाहिश है कि सतनामी उनके कदमों के नीचे रहें।

इन्हीं सब परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए हमे इतिहास के उन स्वर्णिम पहलुओं को जानना नितांत आवश्यक हो जाता है। जब सतनामियों का भी अपना गौरवशाली स्थिति था। उनके महत्वपूर्ण ऐतिहासिक जानकारियों कार्यो को जानने-बताने के लिए स्वयं को उनके द्वारा किये गये महान कार्यो को जानना बहुत जरुरी हो जाता है।

गुरु घासीदास, गुरु अमरदास, गुरु बालकदास, सहोदरा माता, साहेब भुजबल महंत, साहेब बखारी भंडारी, साहिबा सुंदरी जोगांस, सरहा, जोधाई आदि हमारे महापुरुषों के कार्यो और इतिहास से लोग परिचित नहीं हैं।

पूर्व में हमने गुरुबालकदास जी के शहादत गाथा को साहित्य के माध्यम से लोगों के समक्ष लाया। अब हम ईस्वी सन् 1883 में मानवाधिकार और स्वाभिमान के लिये किये गये साहेब भुजबल महंत, साहेब बखारी भंडारी और साहिबा सुंदरी जोगांस के ऐतिहासिक कार्यो को SPM के मिशन उड़ान के माध्यम से लोगों के सामने प्रस्तुत कर रहे हैं।

दिनांक : 25-04-2018
स्थान : बिलासपुर (छ.ग.)

हरीश पांडल
प्रधान संपादक
मिशन उड़ान (SPM)

दो शब्द



प्रिय कुमार लहरे जी नमस्कार,

बड़े हर्ष की बात है कि 'सतनाम पुनर्जागरण मिशन' (SPM) के द्वारा 'स्वाभिमान दिवस स्मारिका' प्रथम संस्करण, अप्रैल 2018 का प्रकाशन किया जा रहा है। आपको व SPM संगठन को ढेरों बधाई एवं शुभकामनाएं। मानवाधिकार व स्वाभिमान के लिए किये गये ऐतिहासिक अभियान की स्मृति में प्रकाशित इतिहास से स्पष्ट है कि सदियों से सामंती जातिवादी और ब्राम्हण वादियों के जुल्म-अत्याचार के खिलाफ सतनामी संघर्ष करते रहे हैं।

गुरु बालकदास के 1860 ई. में परिनिर्वाण के बाद सतनाम दमनकाल का दौर (जो आज तक चल रहा है) के सन् 1883 ई. में तत्कालीन सतनामियों के प्रमुख साहेब भुजबल महंत ने साहेब बखारी भंडारी के सहयोग और साहिबा सुन्दरी जोगान्स के अदम्य साहस व सतनामी खड़ैतों के सहयोग से मानवाधिकार व स्वाभिमान के लिए उनके कार्यो को प्रमुखता के साथ समाज के समक्ष लाकर सभी को शिक्षित करने की जरुरत है। सदियों से जो जातिवाद, वर्णवादी, सामंती तथा पूंजीवादी गुलामी के जंजीरों से संवैधानिक मार्गो पर चलते हुए हमें मुक्त होने की जरुरत है, और समता, स्वतंत्रता, बंधुत्व व न्याय पर आधारित नए समाज के निर्माण के लिए आगे बढ़ना होगा। शिक्षित होकर पल-पल संघर्ष करते हुए एकजुट बने रहें। इस दिशा में गंभीरता से सोचते हुए वर्तमान में शासक वर्ग की चालाकियों और गुलामी से मुक्त होने के रास्तों को तलाश कर उनकी नीतियों का पर्दाफाश करते हुए सामाजिक परिवर्तन के लिए नई राजनैतिक परिवर्तन के दिशा में हमें संघर्ष करते रहना हैं।

ऐतिहासिक अभियान की स्मृति में स्मारिका का प्रकाशन ही नहीं बल्कि यह परंपरा जीवित रहे इस हेतु हमें पूरे शक्ति के साथ समाजोत्थान के कार्य में आगे बढ़ना होगा।

आपका साथी

उत्तम कुमार

संपादक-दक्षिण कोशल

(मासिक पत्रिका)

दिनांक : 20-04-2018

स्थान : राजनांदगांव (छ.ग.)

दो शब्द

सतनाम पुनर्जागरण मिशन (SPM) के सभी साथियों को जय जोहार- जय सतनाम!



सतनाम पुनर्जागरण मिशन के द्वारा मिशन उड़ान के नाम से लोकसमाज के ऐतिहासिक अभियानों, तथ्यों और महापुरूषों के कार्यो को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है। इसके पूर्व गुरु बालकदास शहादत दिवस नामक पत्रिका प्रकाशित किया गया था। जिसमें गुरु बालकदास जी के महान शहादत गाथा को उजागर किया गया है। आज भी बहुत से लोगों को पता नहीं है कि गुरु बालकदास जी कौन थे उन्होंने क्या कार्य किया था, उनको क्यों और किनके लिए अपना शहादत देना पड़ा।

प्रस्तुत पत्रिका में जातिवादी , सामंतवादी तत्वों के विरुद्ध मानवाधिकार और स्वाभिमान के लिए सन् 1883 ई.में भुजबल महंत के नेतृत्व में किये गये महान ऐतिहासिक अभियान जिसमें सतनामियों की जीत और जातिवादियों की हार हुई थी, के गौरव गाथा का वर्णन किया गया है।

देश में आज भी लोग समानता व संविधान प्रदत्त अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहे है। मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, बिहार व अन्य कई राज्यों में वंचित, पिछड़े वर्ग के लोग शान के साथ बारात नहीं ले जा सकते। घोड़ी में दुल्हा नहीं बैठ सकता। कहीं मुछ के लिए, कहीं पगड़ी के लिए, तो कहीं घोड़े में चढ़ने नाम पर इनका हत्या तक कर दिया जाता है।

यह पत्रिका उन सभी लोगों के लिए जो मानवाधिकार और समानता के लिए संघर्षरत हैं प्रेरणा प्रदान करेगा।

SPM के साथी ऐसा ही कार्य करते रहें जिससे देश के सभी वंचित उपेक्षित पीड़ित वर्ग के लोग एक मंच पर आयें और अपने अधिकारों के लिए साझा संघर्ष करें, इसी कामना के साथ...

आपका साथी
रमेश ठाकुर
संपादक-गोंडवाना स्वदेश
(मासिक पत्रिका)

दिनांक : 22-04-2018
स्थान : रायपुर (छ.ग.)

लेखकीय : सतनाम पुनर्जागरण मिशन (SPM) की ओर से साहेब भुवनलाल रात्रे जी का आभार ...



संसार के नक्शे को देखें तो इंग्लैंड एक बहुत ही छोटा सा भू-भाग है सभी तरफ समुद्र के अथाह जलराशि से घिरा हुआ वहां रहने वालों की जनसंख्या विश्व के जनसंख्या के अनुपात में बहुत कम हैं इसके बाद भी यह जानकर-पढ़कर बड़ा आश्चर्य होता है कि अंग्रेजों ने संसार के अधिकांश भू-भागों पर अपना अधिकार कर लिया था। हमने पढ़ा है कि अंग्रेजों के राज्य में कभी सूर्य अस्त नहीं होता था। उनमें ऐसी क्या खूबी रही होगी की एक नामालूम से स्थान के लोगों ने दुनिया में इतना नाम कमाया की लगभग हर देशों में अंग्रेजों की काबिलियत का लोहा आज भी माना जाता है।

मुठ्ठी भर अंग्रेज व्यापारियों ने हमारे देश में आकर व्यापार किया और बड़े-बड़े शक्तिशाली राजाओं-नवाबों को हरा दिया। अंग्रेजों की कई विशेषताओं में से एक महत्वपूर्ण विशेषता उनका खोजी प्रवृत्ति भी रहा है इसी प्रवृत्ति के चलते उन्होंने नये-नये अविष्कार किये और यह सब संभव हुआ उनके लिखने-पढ़ने और परिवर्तन के प्रति झुकाव से उन्होंने जो भी देखा-सिखा-अनुभव किया उनको लिपिबद्ध किया। इसीलिए उनके पास जानकारी का खजाना है दूसरे देशों से संबंधित जानकारी भी अंग्रेजों-यूरोपियनों के द्वारा दिया गया हम अपने देश भारत से संबंधित जानकारी के लिए भी अंग्रेजों का मुंह ताकते हैं जबकि हमारे तथाकथित कवि-लेखकों ने अपने आश्रयदाता राजा-महाराजाओं के सिर्फ बढ़ा-चढ़ाकर प्रशंसा के ही गीत गाये हैं।

सतनामियों से संबंधित विवरण भी कुछ अंग्रेजों के अलावा किसी भी भारतीय के द्वारा नहीं लिखा गया है। जिसके कारण हमारे इतिहास को दबाने के षड़यंत्र में दुश्मन कामयाब हुए है। आज हमारे युवा पढ़-लिख रहे हैं लेकिन जब सामाजिकता और खोजी प्रवृत्ति की बात आती है तो वे दूर-दूर तक कहीं भी दिखाई नहीं देते हैं। इसमें उनका कोई दोष नहीं है, क्योंकि हमारे अपने कहे जाने वाले मुखियाओं ने ऐसा कोई सिस्टम विकसित नहीं किया कि लोगों को अपने ऐतिहासिक गौरव गाथा तथा इतिहास से सबक लेकर आगे की योजना बनाने की सोच विकसित हो पाता। कुछ चालबाज लोगों ने आम जनता को अज्ञानता के अंधेर में ढकेलकर उन्हें अपने स्वार्थ के लिए इस्तेमाल किया और आज भी समाज सेवा के नाम पर ऐसा कर रहे हैं लेकिन उन्हें वास्तविक रूप से शिक्षित करने का कभी भी प्रयास नहीं किया।

मैं लेखक / संपादक मंडल और सतनाम पुनर्जागरण मिशन (SPM) के तरफ से दिवंगत साहेब भुवनलाल रात्रे जी का आभार व्यक्त करना चाहता हूं। जिन्होंने लोक-समाज के दबाये -छिपाये गये ऐतिहासिक तथ्यों की खोज करने व उसे जनसामान्य को उपलब्ध कराने के उद्देश्य से सन् 1998 ई. में एक शोध संगठन का स्थापना किया था। जिससे हमारे मन में भी खोजी प्रवृत्ति के प्रति रुची उत्पन्न हुआ। रात्रे जी के प्रेरणा से हमने पूर्व में गुरु बालकदास शहादत दिवस स्मारिका का प्रकाशन कर उनके शहादत गाथा को दुनिया के सामने लाया। प्रस्तुत स्मारिका मानवाधिकार स्वाभिमान दिवस भी उसी का एक कड़ी है। जिसमें मानव अधिकार और समानता के लिए किये गये एक महान ऐतिहासिक अभियान के गाथा को लोगों के सामने लाया गया है। सतनाम पुनर्जागरण मिशन (SPM) के खोजी दल ने इससे संबंधित सभी तथ्यों को सामने लाने का प्रयास किया है। उपलब्ध तथ्यों को लिपिबद्ध करने का कार्य संगठन द्वारा मुझे सौंपा गया। मैं कोई लेखक या कवि होने का दावा नहीं करता। इस कार्य में मुझे अपने घर-परिवार और संगठन का पर्याप्त सहयोग व समर्थन मिला जिससे लेखन का कार्य पूरा कर सका। यह बताते हुए मुझे व्यक्तिगत रुप से काफी दुख हो रहा है कि गुरु बालकदास शहादत दिवस और मानवाधिकार स्वाभिमान दिवस स्मारिका दोनों के प्रकाशन कार्य के समय अपने को एक जनवादी संगठन के पदाधिकारी व कार्यकर्ता कहने वाले लोगों के द्वारा हमें मानसिक रुप से काफी परेशान किया गया। जिसके कारण प्रस्तुत स्मारिका के प्रकाशन में विलम्ब हुआ लेकिन पूर्व स्मारिका को आम जनता ने जिस तरह समर्थन दिया था, उससे उत्साहित होकर नये जोश के साथ इस स्मारिका को पूरा करने में लगे रहे और सफल हुए।

इस अभियान से संबंधित कई महत्वपूर्ण तथ्य हमारे पास उपलब्ध है जिसे स्थानाभाव के कारण उल्लेख नहीं किया जा सका। आगामी संस्करण में शामिल करने का प्रयास किया जायेगा। अपने बात को खत्म करने से पूर्व मैं पुनः साहेब भुवनलाल रात्रे जी का पूरे संगठन के ओर से आभार व्यक्त करता हूं। जिनके द्वारा गुरु घासीदास व सतनाम से संबंधित तथ्यों, इतिहास की खोज के लिये किये गये कार्यो से प्रेरित होकर हमने यह कदम उठाया।

दिनांक : 25-04-2018
स्थान : बिलासपुर (छ.ग.)

कुमार (रामकुमार लहरे)
मुख्य लेखक-मिशन उड़ान (SPM)

अनुक्रमणिका

विचार आमंत्रण

इस पत्रिका / स्मारिका के मुद्रण में काफी सावधानी बरती गयी है। इसके बाद भी कुछ गलतियां हो सकती है। हमने इस ऐतिहासिक अभियान के विषय में उपलब्ध विवरण इस स्मारिका में दिया है। अगर आपके पास साहेब भुजबल महंत, साहेब बखारी भंडारी, साहिबा सुन्दरी जोगांश व इससे संबंधित अन्य किसी भी प्रकार का कोई भी विचार, ऐतिहासिक जानकारी, लेख, फोटो, कार्टून, गीत, कविता, नाटक, कहानी आदि हो तो हमें भेजें। चयनित सामग्री को अगले संस्करण में प्रकाशित किया जायेगा। यह पत्रिका आपको कैसा लगा इस पर भी आप पाठकों से विचार आमंत्रित है। इससे संबंधित प्रशंसा, सुझाव या आलोचना हमें जरुर भेजें। इससे हमें आगामी संस्करण को अधिक अच्छा व त्रुटि रहित बनाने की प्रेरणा मिलेगी।

—संपादक

26 अप्रेल मानवाधिकार स्वाभिमान दिवस

हमारे भारत देश में हजारों वर्ष पूर्व से कुछ ऐसे विचारधारा के लोग हर समय काल में रहे हैं जो अपने को श्रेष्ठ तथा दूसरों को हीन समझते आये है। उन्होंने अपने स्वार्थ के लिए ऐसे नीति-नियम बनाये जो उनके विचारधारा को मजबूती प्रदान करता रहा है। ऐसा नहीं है कि दूसरे देशों में इस तरह का सामाजिक-धार्मिक कुरीति नहीं रहा हो कम-ज्यादा रुप में लगभग पूरे विश्व में असमानतावादी विचारधारा का प्रभाव रहा है। जैसे-जैसे मानव सभ्यता का विकास होता गया, संसार में लोगों ने पुराने समाज विरोधी नीति-नियम का परित्याग कर अपने देश-समाज के लिए आधुनिक और समतावादी नवीनतम विचारधारा को स्वीकार करते गये। अधिकांश देश अब अपने सभी पुराने अनुपयोगी समाज विरोधी नियम-कानून को हटाकर आधुनिक समतावादी विचारों को अपनाया है। हमारे देश में भी अंग्रेजों के आने के बाद कई सुधार कार्य हुआ। 26 जनवरी सन् 1950 ई. को हम भारतीयों ने अपने संविधान को स्वीकार किया जिसमें समानता, स्वतंत्रता व बंधुत्व को स्थान दिया गया। सभी देशवासियों ने इसके पालन करने का शपथ लिया।

देश में भारतीय संविधान के लागू होने के बाद भी प्राचीन समय से लेकर आज तक ऐसे तत्व समाज में हावी हैं जो सभी मानवोचित सुख-सुविधा का उपयोग सिर्फ अपने कुछ खास लोगों/वर्गो के लिए करना चाहते हैं, जैसे पगड़ी पहनना, मूंछ रखना, अच्छे पोशाक पहनना, जूता पहनना, सवारी के लिए घोड़े आदि जानवरों का उपयोग करना विवाह में घोड़ी और डोला का उपयोग करना इन सभी का उपयोग वे करना चाहते हैं और करते हैं, लेकिन जब इसका उपयोग शोषित वंचित जन सामान्य वर्ग के लोग करते हैं या करना चाहते हैं तो उनको बहुत दुख पहुंचता है और उसे रोकने के लिए ये किसी भी हद तक जा सकते हैं।

पंजाब केसरी, संपादकीय, 13 अप्रेल 2018 के अनुसार- गुजरात, भावनगर जिले के टिम्बा गांव के रहने वाले 21 वर्षीय युवा प्रदीप राठौर का हत्या इसलिए किया गया कि उसके पास घोड़ी था और उसका सवारी करता था। उसे कई बार ऐसा करने से मना किया गया था। आखिर में उसका हत्या कर दिया गया, उसके घोड़ी को भी मार दिया गया।

राजस्थान में पिछले 3 वर्षो में 38 मामले दर्ज किये गये, जिसमें दुल्हे को घोड़ी में चढ़ने से रोका गया, यह जानकारी राजस्थान के गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया ने विधानसभा में दिया।

यश भारत व टाईम्स नाव न्यूज डॉट-कॉम हिन्दी (टाईम्स ऑफ इंडिया) 18 अप्रेल 2018 के अनुसार-मध्यप्रदेश में उज्जैन जिला के महीदपुर के पास ग्राम-नाग गुराड़िया के संजय चौहान के बारात को ट्रैक्टर अड़ाकर रोक दिया गया। दुल्हे को घोड़ी से उतारकर बरातियों के ऊपर हमला कर दिया गया। वेब दुनिया 15 जुलाई 2013 के अनुसार- दमोह जिला, देहात थाना क्षेत्र के ग्राम सिहोरा, पड़रिया में पथरिया गांव के लक्ष्मण अहिरवाल को घोड़ी से उतारकर उनके व बारातियों से मारपीट किया गया और पैदल जाने को कहा। आज तक भोपाल 12 सितम्बर 2018 के अनुसार -मध्यप्रदेश शिवपुरी जिला मुख्यालय से 50 कि.मी.दूर महोबा गांव में 3 सितम्बर 2018 को सरदार सिंह जाटव को पगड़ी पहनने के कारण मारपीट किया गया, और उस्तरे से उसके सिर के चमड़ी को उतार दिया गया। पंजाब केसरी 1 अप्रेल 2018 के अनुसार-मध्यप्रदेश के रतलाम में दुल्हे को घोड़ी से उतार दिया गया और उनके ऊपर पथराव किया गया। बाद में पुलिस ने दुल्हे को हेलमेट पहनाकर निकाला।

हरियाणा के कुरुक्षेत्र में बारात पर हमला किया गया क्योंकि दुल्हा घोड़े की बग्गी पर सवार था।

बीबीसी न्यूज हिन्दी 24 फरवरी व 13 अप्रेल एएनआई यूपी व आजतक 15 जुलाई वायर एनडी टीवी इंडिया व अमर उजाला 16 जुलाई 2018 के अनुसार-उत्तरप्रदेश के कासगंज जिला के निजामपुर गांव में संजय जाटव और शीतल के विवाह के बारात को रोकने का काफी प्रयास किया गया। मामला हाईकोर्ट तक चला, सैकड़ों की संख्या में पुलिस बल तैनात होने के बाद ही बारात आ सका। यहाँ पुलिस ने कोर्ट में अधिकारिक तौर पर बारात को शांति के लिए खतरा करार दिया था।

ये कुछ उदाहरण हैं, जो हमारे देश खासकर हिन्दीभाषी प्रदेशों-मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान, हरियाणा, उत्तरप्रदेश व अन्य स्थानों पर लगभग हर दिन घटित होता है। ऐसी घटनाएं हजारों की संख्या में होती है। जब किसी को मानवीय गरिमा

के अनुरुप जीवन-यापन के लिए रोक लगाई जाती है। ऐसा व्यक्तिगत या सिर्फ कुछ लोगों के ही द्वारा नहीं किया जाता बल्कि इसके लिए जातिवादी- सामंती- असमानतावादी तत्व सामूहिक रुप से एक हो जाते हैं। इनके अलावा अन्य कथित जाति-वर्ग का व्यक्ति अगर घोड़े/घोड़ी पर बैठना चाहें तो उसकी ये हत्या तक कर देते है। बारात में अपने बेटे/दामाद को घोड़ी पर बैठा के ले जाना चाहे तो उसे हमारे देश का कानून तो सैद्धांतिक रुप से मान्य करता है। लेकिन व्यवहारिक रुप से उनका सहायता करने में असमर्थ होता है। सिर्फ पुलिस प्रशासन ही नहीं बल्कि हमारे देश का न्याय व्यवस्था भी उसका सहायता नहीं कर सकता। इन तत्वों का ऐसा प्रभावशाली दखल हमारे देश में है।

आज की स्थिति में ऐसी घटनाएं भारत को छोड़कर किसी भी अन्य देश में देखने-सुनने को नहीं मिलेगा। ये बड़े दुख की बात है ऐसी घटनाएं तब हो रही है जब हम अपने को स्वतंत्र देश का स्वतंत्र नागरिक कहते है। कल्पना कीजिए कि उस समय काल का जब सन् 1860 ई. में गुरु बालकदास जी के शहादत के बाद सतनाम दमन काल शुरु हो चुका था जातिवादी-सामंती तत्वों के हौसले भारतीय संविधान के लागू होने से पूर्व काफी बुलंद रहे होंगे। उस परिस्थिति में सन् 1883 ई. में साहेब भुजबल महंत और साहेब बखारी भंडारी के नेतृत्व में सतनामी खड़ैतों (योद्धाओं) ने मानवाधिकार और स्वाभिमान के लिए दुश्मनों के तगड़े प्रतिरोध के बाद भी इस ऐतिहासिक अभियान को सफलतापूर्वक अंजाम दिया और इतिहास में मिशाल कायम किये। यह अभियान मनुष्यों के अधिकार और स्वाभिमान के लिए किया गया था। जिसमें असमानतावादी-जातिवादी-सामंतों को बुरी तरह से हार का सामना करना पड़ा।

आम लोक समाज में अपने स्वाभिमान को जागृत व जिंदा बनायें रखने और हमारे लिए संघर्ष करने वाले हमारे पूर्वजों के कार्यों को सम्मान देने के लिए मानवाधिकार स्वाभिमान दिवस का आयोजन आवश्यक रुप से करना चाहिए। जिससे मानवाधिकार व स्वाभिमान के प्रति सामान्य लोगों में चेतना का विकास हो। मानवाधिकार के लिए कार्य करने वाले कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़े तथा किसी के सामान्य अधिकारों को छिनने का प्रयास करने वाले किसी भी व्यक्ति या संगठन के गतिविधियों को सामूहिक रुप से मिल-जुलकर विफल किया जा सके।

--00--

02 भूमिका/प्रस्तावना

प्रस्तुत पत्रिका/स्मारिका में जिस ऐतिहासिक गौरव गाथा का उल्लेख किया गया है। वह एक बहुत ही रोमांचित कर देने वाली घटनाक्रम है, हमें बचपन में बुजुर्ग इस घटना के बारे में बताते थे लेकिन आज इसके जानकार नहीं मिलेंगे। इसे दुनिया के सामने लाने का विचार हमारे मन में तब आया जब हमने अनुभव किया की हमारे विचारधारा, रीति-रिवाज, संस्कृति, भाषा आदि पर दीखुओं (बाहरी लोगों) के विचारधारा का प्रभाव व्यापक रुप से बढ़ा है। हमारे मूल विचार को खत्म करने का उनका षड़यंत्र सदा से रहा है। जिसमें वे काफी हद तक सफल भी हुए है। आज ऐसा स्थिति आ चुका है कि अब हम अपने इतिहास, महापुरुषों, संस्कृति, भाषा, रीति-नीति को पराया और विरोधी विचारधारा, महापुरुषों, संस्कृति, भाषा, रीति-नीति में अपनापन महसूस करने लगे है।

लोक समाज में अपने इतिहास गौरव के प्रति चेतना का विकास हुआ हैं ये बड़ी खुशी और संतोष की बात है कि आज दुनिया एक छोटे गांव या मोहल्ले में बदलता जा रहा है। विज्ञान और तकनीक ने लोगों को आपस में जोड़ने, विचारों के आदान-प्रदान करने को काफी सरल बना दिया है। प्रिंट, इलेक्ट्रानिक और सोशल मीडिया में मौजूद हमारे मित्रों ने लोक समाज के छिपाये-दबाये गये इतिहास को सामने लाने के प्रयास में हमें काफी समर्थन दिया है।

पूर्व में स्मारिका गुरु बालकदास शहादत दिवस मार्च 2018 प्रथम संस्करण प्रकाशित किया गया। जिसमें पहली बार गुरु बालकदास जी के महान शहादत गाथा को दुनिया के सामने प्रस्तुत किया गया। आम जनता ने जिस तरह से पूर्व प्रकाशित

पत्रिका/स्मारिका को हाथों हाथ लिया उससे हमें एहसास हुआ कि लोगों में अपने इतिहास को जानने के लिए कितनी तड़प है। जन भावना को देखकर हमने तय किया कि स्वाभिमान दिवस पत्रिका/स्मारिका प्रकाशित किया जाये इसके लिए हमने बहुत से लोगों से संपर्क किया गुरु बालकदास शहादत दिवस स्मारिका में विज्ञापन दिया। फेसबुक और वाट्सएप पर भी इस घटना से संबंधित लेख/विचार, कहानी, कविता, फोटोग्राफ्स आदि आमंत्रित किया। आज लोग इसके विषय में कुछ भी नहीं जानते है। हमने हर संभावित स्त्रोतों, व्यक्तियों, स्थानों से जानकारी लेने का प्रयास किया।

इस लेख में हमने अलग-अलग स्त्रोतों/लोगों से प्राप्त विवरण को स्थान दिया है। स्मारिका में सर्वप्रथम कुंजराम लहरे पिता समयलाल उर्फ समेलाल के द्वारा बताये गये विवरण को प्रमुखता से स्थान दिया गया हैं क्योंकि उन्होंने जो जानकारी लेखक कुमार (रामकुमार लहरे) को दिया था वह काफी विस्तृत है। कुंजराम लहरे अपने निवास सतनामी पारा, ग्राम-कुदुदण्ड, बिलासपुर, छ.ग. से ग्राम- मेढ़पार (बाजार) वि.खं. व तहसील-तखतपुर, जिला-बिलासपुर छ.ग.आ गये थे और अपने मृत्यु पर्यन्त तारीख 20 जुलाई 2009 तक यहीं रहे। इनका जन्म सन् 1929 ई. था। इस अभियान से संबंधित किसी भी प्रकार का इंटरव्यू उनसे नहीं लिया गया था। माह मार्च सन् 1994 में 27 तारीख को जब लेखक मेढ़पार गया था। तब उन्होंने अपने घर में इस घटना का जिक्र किया था। उनको इस घटना के संबंध में चिरहुला, मुंगेली के किसी आदमी ने बताया था, यह भी संभव है कि कुछ बातें छूट गयी हों उनके बताये विवरण को स्मरण कर लिपिबद्ध किया गया है।

दूसरे क्रम में साहेब भुवनलाल रात्रे जी (जन्म 3 जुलाई 1956 व मृत्यु 16 जुलाई 2018) जिन्होंने गुरु घासीदास व सतनाम विचारधारा के ऊपर खोज करने के लिए सन् 1998 ई. में एक शोध संगठन का स्थापना किया था और जिन्हें सतनामी इतिहास के एक महान् खोजकर्ता के रुप में जाना जाता है। उनसे उनके निवास स्थान भारतीय नगर चौक, बिलासपुर (छ.ग) में दिनांक 16 अप्रेल 2018 को **SPM** खोजी दल (में शामिल) कुमार लहरे, हरीश पांडल, टेकचंद पांडल, इन्द्रकुमार भारद्वाज व कोमल दिवाकर) द्वारा लिये गये साक्षात्कार को रखा गया है।

तीसरे क्रम में गणेश महंत निवासी ग्राम-नवलपुर (ढारा), जिला-बेमेतरा (छ.ग.) द्वारा दिये गये विवरण को रखा गया है, जिसे दिनांक 18 अप्रेल 2018 को प्राप्त किया गया। ये भुजबल महंत के वंशज हैं, उनसे इनका संबंध इस प्रकार है। गणेश पिता सूबेदास, माँ सुकरित बाई पिता कलियास, पिता भुजबल। इस प्रकार ये भुजबल के तीसरे पुत्र कलियास की बेटी सुकरित के वंशज हैं। इनका साक्षात्कार कुमार लहरे व हरीश पांडल के द्वारा लिया गया।

चौथे क्रम में हमने लोक कलाकार भगत गुलेरी के द्वारा इस घटनाक्रम पर गाये गये गीतों और संवादों को लिया है, इनके रचनाकार , गायक व अधिवक्ता भगत गुलेरी , गायिका जानकी गुलेरी, व कु. सोनिया पता पामगढ़ जिला जांजगीर-चांपा (छ.ग.) के गाये गीतों को एसबी म्यूजिक कोरबा, जिला-कोरबा (छ.ग.) द्वारा रिकार्ड किये गये भुजबल महंत के डोला नामक सीडी कैसेट जिनमें सात गीतों 1. ढार नवलपुर के धरती म जन्में 2. समता अऊ सम्मान के खातिर 3. मेछा वाले 4. दुश्मन बैरी के छाती 5. पगड़ी बांधे तब्बल धरे 6. देख बरतिया दुश्मन अड़गे व 7. बहु बिहा के लाये, में भुजबल महंत के ऐतिहासिक अभियान को भगत गुलेरी ने अपने तरीके से वर्णन किया है। उस सीडी में जो भी गाना या संवाद है उसे ज्यों का त्यों जयसूर्य कुमार लहरे पिता रामकुमार लहरे निवासी ग्राम-अमेरी बिलासपुर (छ.ग.) द्वारा अप्रैल 2018 को पत्रिका/स्मारिका के लिए लिखा/लिपिबद्ध किया गया।

हमने चिरहुला के बहुत से लोगों से संबंधित जानकारी के लिए संपर्क किया उन लोगों के द्वारा बताया गया कि ऐसे ज्यादा जानकार लोग आज नहीं हैं उनका मृत्यु हो चुका है। सिर्फ एक व्यक्ति है जो अभी मौजूद लोगों में सबसे ज्यादा जानकारी दे सकता है, उनसे संपर्क कर हमने साक्षात्कार लिया। इस लेख के पांचवें क्रम में श्यामलाल जोगांश निवासी ग्राम-चिरहुला, वि.ख.तहसील व जिला-मुंगेली (छ.ग.) से प्राप्त जानकारी को लिया है। श्यामलाल जोगांस उर्फ श्यामलाल जोशी इनके पिता का नाम दयाराम और दादा का नाम बखारी है। इस अभियान की नायिका साहिबा सुन्दरी जोगांस उर्फ सुन्दरिया इनकी बुआ, पिता दयाराम की बहन और दादा बखारी उर्फ बखरिया की बेटी है। उनका इंटरव्यू (साक्षात्कार) हमारे खोजी दल जिसने कुमार (राम कुमार लहरे), हरीश पांडल, टेकचंद पांडल, कोमल दिवाकर व इंद्र भारद्वाज शामिल थे, ने ग्राम चिरहुला, वि.खं. व जिला-मुंगेली (छ.ग.) में उनके निवास स्थान में जाकर दिनांक 15 अप्रैल 2018 को लिया। साक्षात्कार में उसने जो भी बताया, उसे वह अपने पिता से सुना था। वह कई बातों को भूल चुका है उसे जो भी याद है उसने हमें बताया।

इस लेख का छठवाँ विवरण हमने गंगा जोशी से लिया है, ये भी चिरहुला के निवासी हैं। उनका घर उसी स्थान पर है, जहां कभी बखारी भंडारी का विशाल घर हुआ करता था। इनके द्वारा बताया गया जानकारी श्यामलाल के बताये जानकारी से मिलता है। इनके द्वारा कुछ अन्य जानकारी व सहयोग भी मिला है। गंगा जोशी भी बखारी भंडारी के वंशज हैं, इनका बखारी से संबंध इस प्रकार है। गंगा प्रसाद पिता विष्णु प्रसाद, पिता माधो प्रसाद, पिता शंभू, पिता दयाराम, पिता बखारी है। इनका साक्षात्कार भी SPM खोजी दल ने दिनांक 15 अप्रैल 2018 को लिया।

सातवें क्रम में भानदास जोशी निवासी-चिरहुला, मुंगेली (छ.ग.) से लिये गये साक्षात्कार को रखा गया है। ये बखारी के भाई घासी के वंशज हैं। उनसे इनका संबंध इस प्रकार है- भानदास पिता पिलादास, पिता शिवलाल, पिता घासी (घासी व बखारी दोनों भाई) इनसे 18 अक्टूबर 2018 को इनके निवास स्थान में संबंधित विवरण प्राप्त किया गया।

आगे के क्रम में महाजन जोशी पिता नेपाल, पिता भगदुल, पिता घासी। रंजन जोगान्स पिता मदन, पिता भगदुल, पिता घासी व झुमुकदास सोनवानी व अन्य सभी निवासी चिरहुला, मुंगेली (छ.ग.) से तारीख 18 अक्टूबर 2018 को साक्षात्कार लिया गया, को शामिल किया गया है इस दिन SPM खोजी दल में कुमार (रामकुमार लहरे), हरीश पांडल, कोमल दिवाकर, टेकचंद पांडल, इन्द्रकुमार भारद्वाज, जगतारन डहरे, दुर्गाप्रसाद मेरसा, रुपेश बंजारे व सतीश बर्मन शामिल थे।

चिरहुला, मुंगेली के कुछ लोगों के द्वारा बताया गया कि इस विषय पर कई दशकों पूर्व किसी पुस्तक जिसका नाम सत्यकथा बताया गया, में लिखा गया है। वह पुस्तक यहां चिरहुला में उपलब्ध हैं हमारे खोजी दल के द्वारा कई बार उस पुस्तक को देखें जाने के आग्रह के बाद भी संबंधित व्यक्तियों के द्वारा उपलब्ध नहीं कराया जा सका। इस प्रकार संबंधित घटना का किसी पुस्तक में उल्लेखित तथ्यों को प्राप्त करने का हमारा इच्छा अधूरा ही रह गया।

सतनाम पुनर्जागरण मिशन (SPM) के खोजी दल ने इस ऐतिहासिक अभियान के संबंध में चिरहुला, नवलपुर और पुरान गांव का दौरा मार्च व अप्रैल 2018 में कई बार किया। गाइड हमें हर उस स्थान पर ले गया जिस स्थान का थोड़ा सा भी संबंध इस घटना से रहा है। इस तरह हमारे दल ने उस क्षेत्र के चप्पे-चप्पे को छान मारा है। हमने उस स्थान को देखा जहां कभी भुजबल महंत और बखारी भंडारी का निवास हुआ करता था। उस स्थान को जहां जातिवादी सामंत और भुजबल महंत का विवाद हुआ था और उस स्थान पर भी गये जहां सतनामी खड़ैतों और जातिवादी सामंती तत्वों के बीच संघर्ष / युद्ध हुआ था। SPM के खोजकर्ताओं ने अपने तरफ से संबंधित जानकारी, विवरण प्राप्त करने में कोई कसर नहीं छोड़ा है। इन्होंने बहुत परिश्रम किया है। जिसके परिणाम स्वरुप हम इस महान ऐतिहासिक अभियान गाथा को दुनिया के सामने लाने में सफल हुए।

--00--

03 अभियान का तिथि निर्धारण

तिथि निर्धारण★1-इस महान ऐतिहासिक अभियान के संपूर्ण विवरण प्राप्त करने के लिए साहेब भुवनलाल रात्रे जी ने आज से लगभग बीस वर्षो पूर्व पहली बार अपने खोजी दल के साथ चिरहुला का दौरा किया था। उस समय वहां के सबसे अधिक जानकार लोगों से उसने साक्षात्कार लिया था। उसके कुछ वर्षो के बाद दूसरी बार भी दौरा किया और इस घटना के संबंध में विस्तृत विवरण प्राप्त करने का प्रयास किया था। उन्होंने साक्षात्कार से प्राप्त विवरण का विश्लेषण करते हुए इसके समयकाल का निर्धारण किया तब 1882-1883 ई. प्राप्त हुआ अंत में 1883 ई. को निश्चित किया। इस निष्कर्ष का आधार उन्होंने जानकारी प्रदान करने वालों के उम्र और बखारी भंडारी से उनके संबंधों को बनाया था।

SPM के खोजी दल ने मार्च व अप्रेल 2018 को रात्रे जी के प्रथम चिरहुला दौरे के बीस वर्षो बाद वहां के कई लोगों का वंशावली प्राप्त किया हैं जिसे बखारी और घासी से संबंधों के आधार पर काल गणना का प्रयास किया गया। इस गणना के अनुसार जो निष्कर्ष प्राप्त हुआ है उसका काल भी सन् 1883 ई. के आसपास ही ठहरता है इसलिए रात्रे जी द्वारा निर्धारित सन् 1883 ई. को हमने मान्य कर लिया।

अब आते हैं इस अभियान के माह पर इसके लिए रात्रे जी ने छत्तीसगढ़ में पुराने समय से चले आ रहे विवाह के समय / माह पर ध्यान केन्द्रित किया और इससे संबंधित विवरण प्राप्त किया। इस पर उन्होंने पाया कि उस समय जब यह ऐतिहासिक अभियान हुआ था और वर्तमान में भी खेती-किसानी के कार्यो से मुक्त होने के बाद ही विवाह कार्य सम्पन्न किया जाता है वह समय होता है ठंड के बाद और बरसात के मौसम के पूर्व का समय इस तरह से उन्होंने अप्रेल माह के अंतिम सप्ताह के प्रारंभिक दिवस को इसका तिथि निर्धारित किया।

SPM खोजी दल द्वारा इस संबंध में चिरहुला दौरा कर विवरण प्राप्त करने का प्रयास किया गया। वहां विभिन्न लोगों के द्वारा कोई निश्चित तिथि नहीं बताया जा सका। एक व्यक्ति ने उसका माह बैसाख बताया। दूसरे व्यक्ति के द्वारा जेठ माह में होना बताया गया।

चूंकि सन् 1883 ई.में हुए इस अभियान के 115 वर्षो के बाद सन् 1998 ई. में इस संबंध में खोज किया गया। तत्कालिन जानकार लोगों ने इसका कोई निश्चित तिथि नहीं बताया। रात्रे जी ने गणना कर जो निष्कर्ष निकाला उसके अनुसार वह ऐतिहासिक तिथि 26 अप्रेल सन् 1883 ई. है। हमारे संगठन SPM के द्वारा इस संबंध में विवरण प्राप्त करने का काफी प्रयास किया गया लेकिन कोई विश्वसनीय जानकारी प्राप्त नहीं हुआ।

अतः जब तक इस तिथि के अलावा कोई नया तिथि प्रमाणित नहीं हो जाता, तब तक इस घटना का तिथि 26 अप्रैल सन् 1883 ई. को ही अंतिम रुप से मान्य करना उचित होगा। *[1]

--00--

04 मुख्य पात्रों का संक्षिप्त परिचय व महत्वपूर्ण शब्दों का विस्तार

4.1 मुख्य पात्र–

भुजबल महंत : ये तात्कालीन सतनामियों के प्रधान थे। जिसका चुनाव गुरु बालकदास जी के शहादत के बाद बेमेतरा, नवागढ़ और मुंगेली राज के सतनामियों ने किया था। ये राजमहंत भी थे। यह अभियान के प्रधान नेतृत्वकर्ता थे। इनका निवास नवलपुर बेमेतरा में था। ये भुजबल महंत के नाम से प्रसिद्ध हुए।

करिया : ये भुजबल महंत के चाचा भूलीदास के पुत्र व भुजबल महंत के चचेरे भाई थे। इस अभियान में हुए संघर्ष में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

गजरी : गजरी भी भुजबल महंत के चाचा भूलीदास के पुत्र थे। इनका भी इस अभियान में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

दयाल : ये भुजबल महंत के पुत्र थे। इनके विवाह से संबंधित दौरे के समय ही भुजबल महंत से विवाद हुआ था। जो आगे चलकर संघर्ष का रुप धारण कर लिया।

बखारी: ये चिरहुला के भंडारी थे इनकी बेटी सुंदरी का विवाह दयाल से होना तय हुआ था। बखारी इस अभियान के प्रमुख नायकों में से एक है। इनको बखरिया के नाम से भी लोग जानते हैं।

घासी: घांसी उर्फ घसिया बखारी के रिश्ते में भाई थे। इस अभियान में उन्होंने बहादुरी से दुश्मनों का मुकाबला कर उनको भगा दिया था।

सुन्दरी जोगांस : सुन्दरी जोगांस बखारी की बेटी थी। यह एक प्रशिक्षित खड़ैत थी उसने शक्तिशाली पुरुष दुश्मनों का मुकाबला कर उन्हें पीछे हटने पर मजबूर कर दिया था इस अभियान की मुख्य नायिका है।

अमोली सिंह : ये पुरान ग्राम के रहने वाले थे। इस अभियान के मुख्य खलनायक थे। इसने जातिवादी-सामंती-असमानतावादियों का सतनामियों के विरुद्ध नेतृत्व किया था।

4.2 महत्वपूर्ण शब्दों का विस्तार

आगे कुछ शब्द दिये जा रहे हैं। जिनका उपयोग इस लेख में किया गया है।

सतनामी : सतनाम पुनर्जागरण मिशन (SPM) द्वारा प्रकाशित किसी भी लेख में अगर जहां कहीं भी सतनामी शब्द का उल्लेख हो तो उसे व्यापक रुप से समझा जाये न की वर्तमान संकीर्ण जाति व्यवस्था के सतनामी जाति के रूप में। खोज से सिद्ध हुआ / हमारा मान्यता है कि 28 दिसम्बर सन 1820 ई. में गुरु घासीदास जी ने अन्याय-अत्याचार, शोषण, गरीबी, भूदास-प्रथा, देवदासी प्रथा, ऊंच-नीच, जाति भेद व अन्य कुरीतियों के खिलाफ मानवाधिकार के लिए सतनाम आंदोलन प्रारंभ किया जिसे विभिन्न कथित जाति समूह के लोगों ने अपने मूल जाति समूह को छोड़कर सतनाम आंदोलन का हिस्सा बने और अपनी सम्पत्ति और सम्मान की रक्षा कर सके। बाद में जब यह समूह बड़ा हो गया और क्योंकि ये किसी ईश्वर पर नहीं बल्कि सतनाम विचारधारा को मान्य करते थे इसलिए उनको सतनामी कहा गया। इस प्रकार सतनामी कोई जाति नहीं बल्कि एक नीति-जन आंदोलन से विकसित धर्म-संस्कृति है, अतः सतनामी को इसी रुप में समझा जाये न की संकुचित वर्तमान सतनामी जाति के रूप में।

राजमहंत: सतनाम आंदोलन के समय से ही संगठन को मजबूत बनाने आपसी तालमेल स्थापित करने एवं विभिन्न सांगठनिक गतिविधियों के सुचारु रुप से संचालन व नियंत्रण के लिए राजमहंत बनाये जाते थे। इनका वर्तमान राज्यपाल की तरह का अपने संगठन में प्रभाव होता था।

महंत: यह पद राजमहंत के सहायक के रूप में होता था ये अपने क्षेत्र का बड़ा पदाधिकारी होता था। ये गांव स्तर के पदाधिकारियों और राजमहंत के बीच का कड़ी होता था इनके सभी कार्य राजमहंत की तरह अपने क्षेत्र में होता था।

भंडारी : सभी गांवों में सतनामियों के नेतृत्वकर्ता और मुखिया का पद होता था, जिसे भंडारी कहते थे। ग्राम स्तर में आखरी निर्णय इनके द्वारा ही लिया जाता था। जिसे सभी मान्य करते थे।

छड़ीदार या साटीदार : यह गांव स्तर का पद होता था। छड़ीदार गांव के लोगों और भंडारी के बीच का कड़ी होता था। सभी लोगों से सतत् संपर्क बनाये रखना अपने गांव में होने वाले अपराध, विवाद आदि की सूचना भंडारी को देना मीटिंग (बैठक) का व्यवस्था करना आदि मैदानी कार्य छड़ीदार के द्वारा ही सम्पन्न होता था।

सतनामी खड़ैत : सन् 1820 ई. में सतनाम आंदोलन प्रारंभ हुआ। आम जनता के ऊपर तत्कालीन शासक वर्ग और उनके सैनिकों व स्थानीय दलालों, चापलूसों के द्वारा दमन के लिए खुलकर हथियारों का प्रयोग किया जाता था लेकिन जनता को हथियार रखने पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। इस स्थिति से निपटने के लिए सतनाम आंदोलनकारियों को सशस्त्र प्रशिक्षण दिया जाने लगा जिससे ये किसी कुशल सैनिक की तरह प्रशिक्षित हो जाते थे। तलवारों के साथ ही विभिन्न हथियारों का प्रयोग करते थे। ये सतनामी संगठन के निर्देश पर ही कार्य करते थे। इन्हें किसी प्रकार का वेतन या भत्ता नहीं दिया जाता था। हथियार या घोड़े इनके स्वयं का रहता था। इन्हें कोई राजा, जमींदार या सामंत आदेश नहीं दे सकता था। इनका कोई नियमित सेना नहीं था। प्रत्येक सतनामी परिवार से खड़ैत होते थे। ये एक तरह के जनसेना के सैनिक होते थे। इन खड़ैतों ने ही अत्याचारी, शोषक, पेशवाशाही-मराठा आतंक का मुकाबला किया था। और तत्कालीन छत्तीसगढ़ के पचास प्रतिशत मैदानी क्षेत्रों से उनको बेदखल कर दिया था। ये सतनामी खड़ैत एक आह्वान पर ही किसी खास अभियान पर तत्काल कार्यवाही करने के लिए तत्पर रहते थे। खड़ैत सन् 1820 ई. से सन् 1860 ई. तक काफी सक्रिय थे। SPM के लेख में जहां भी खड़ैत या सतनामी खड़ैत शब्द का उपयोग किया गया है। उसे सतनामी योद्धा या सैनिक समझा जाये।

पंथी : सतनामियों में एक नृत्य लोकप्रिय है व है पंथी नृत्य, पंथी नृत्य का विकास गुरु घासीदास जी के द्वारा सन् 1820 ई. से चलाये गये महान सतनाम आंदोलन के दौरान हुआ। इस आंदोलन में आदिवासियों ने प्रारंभ से ही सहयोग-समर्थन दिया था। उनमें करमा नृत्य लोकप्रिय था। उसी प्रकार मैदानी क्षेत्रों में जब इस आंदोलन का प्रभाव बढ़ा तब अहीर (रावत-यादव) सबसे ज्यादा शामिल हुए। उनमें भी एक नृत्य लोकप्रिय था, वह था राउत नाच या नावत नाच। इस

प्रकार करमा, रावत नाच तथा सतनाम आंदोलनकारियों के युद्ध शैली के सम्पर्क से एक नये तरह का लोकनृत्य विकसित हुआ। यह नृत्य करमा, रावत व युद्ध नृत्य का सम्मिश्रण था, इसी को पंथी नृत्य कहा गया, जिसे पुरुष-महिला एक साथ या अलग-अलग जैसा चाहे नाच सकते थे। आज पंथी नृत्य अपने मूल स्वरुप से अलग हो चुका है। इस लेख में जहां भी नृत्य या नाच-गान का उल्लेख किया गया है, इसी नृत्य से संबंधित है। आज के वर्तमान पंथी, करमा, या रावत नाच से अलग अपने मूल स्वरूप का पंथी नृत्य।

--00--

05 ऐतिहासिक अभियान

तारीख **26 अप्रैल, सन् 1883 ई., सूर्योदय के पहले का समय**, स्थान-**पुरान गांव, टेसुआ नदी का तट** मुंगेली, छत्तीसगढ़, भारत।

टेसुआ नदी पार कर एक हथियार बंद बड़ा समूह आ रहा है। यह समूह कई छोटे-छोटे दलों में विभाजित था जिसका योजनाबद्ध रुप से अनेक लोग नेतृत्व कर रहे थे। नदी पार कर जैसे ही वे लोग पुरान पहुंचे नदी से कुछ दूर आगे रास्ते में कटीली झाड़ियों से रास्ता रोक दिया गया था। रास्ता बदलकर आगे बढ़ने का प्रयास किया गया कुछ आगे बढ़ने पर वहां भी अवरोध मौजूद था। इस स्थिति से निपटने के लिए कुछ लोग एक स्थान पर इकट्ठे होते है। आपस में विचार विमर्श किया जाता हैं आगे की रणनीति निश्चित कर कुछ दलों को पीछे हटकर दूसरे रास्ते से आगे बढ़ने का निर्देश दिया जाता है अधिकांश लोग उसी स्थान में रास्ता नहीं मिलने के कारण परेशान दिखते हुए खड़े रहे। उसमें से बहुत से लोग कुछ पीछे हटकर उस मार्ग में ही सावधानी से मोर्चा जमा लिये चुने हुए छापामार अग्रिम दस्ते चुपके से दूसरे घुमावदार रास्तों का प्रयोग करते हुए पहले से बताये गये लक्ष्यों की ओर आगे बढ़ते आ रहे हैं उनके सामने कई बड़े -बड़े खंदक खूदे हुए हैं खंदकों की ओर खड़ैत धीरे-धीरे घेरा कसते हुए जा रहे है। उधर से रास्ता भी साफ हैं अचानक खड़ैतों ने खंदकों में धावा बोल दिया। उन खंदकों में दुश्मन आक्रमण के ताक में छुपे हुए थे। सतनामी खड़ैतों के अचानक हमले ने आक्रमण करने की तैयारी में छुपे हुए दुश्मनों को सम्भलने का अवसर नहीं दिया खड़ैतों के हमले से बदहवास दुश्मन चीखते-चिल्लाते जान बचाने के लिए भागने लगे।

अपने साथियों के चीख-पुकार सुनकर आक्रमण के लिए तैयार पुरान गांव में मोर्चाबंदी किये दुश्मन के सभी साथी भी बहुत बड़ी संख्या में आ गये। उनका मोर्चाबंदी आगे चलकर उनके ऊपर ही कहर बरसाने वाला साबित हुआ। वे खुद चारों तरफ से घिर चुके थे। एक तरफ के रास्ते को उन लोगों ने कांटेदार झाड़ियों से बंद कर दिया था। बाकी स्थानों में सतनामी खड़ैतों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही थी। दोनों तरफ से कई टुकड़ियों में संघर्ष शुरु हो गया। रास्ता बंद करने के लिए स्थान-स्थान पर कांटों के ढेर लगाया गया था। उसमे आग लगा दिया गया। कांटेदार झाड़ियां जलने लगी। शुरुआत में दोनों तरफ से मुकाबला लगभग बराबरी पर चलता रहा। लगातार खड़ैत अपने साथियों के सहायता के लिए अलग-अलग रास्तों से छोटे-छोटे दल के रुप में आकर मिलते गये जिससे स्थिति में परिवर्तन होते गया और खड़ैतों का पलड़ा भारी होते गया। पैदल और घुड़सवार खड़ैतों का मुकाबला दुश्मन नहीं कर सके, कम रोशनी का फायदा उठाकर बहुत से आक्रमणकारी मैदान छोड़ दिये। इधर रास्ते में लगा हुआ आग धीमा हो रहा था। उस रास्ते से भी खड़ैत आगे बढ़ने लगे। लगातार मार खाने के कारण दुश्मन कमजोर पड़ने लगे अपने साथियों के मैदान छोड़कर भागने और लगातार संख्या कम होने के कारण उनका हौसला टूट गया था। शुरु से ही उन्होंने सतनामियों को कमजोर समझने का जो भूल किया था। वह उनके ऊपर काफी भारी पड़ा। खड़ैत युद्धकला में उनसे भी ज्यादा निपुण, तेज और हौसले वाले निकले।

डोला में सवार सुन्दरी के तरफ अचानक दुश्मनों का एक समूह दांत पिसता और भयंकर आवाज निकालता हुआ तेजी से आगे बढ़ने लगा। सुन्दरी और उसके सुरक्षा में तैनात खड़ैत सतर्क हो गये ।सभी ने अपने हथियार संभाल लिये जैसे ही

दुश्मन नजदीक आये सुन्दरी डोला में रखे हुए तलवार को अपने हाथ में लेकर बाहर निकली और खड़ैतों के साथ स्वयं ही मुकाबला करने लगी। दुश्मनों ने जब उसे तलवार चलाते देखा तो उनका आंख आश्चर्य से फटा का फटा रह गया। अब दुश्मनों ने पूरा जोर सुन्दरी को गिरफ्तार करने में लगा दिया था। लेकिन वे पूरा जोर लगाने के बाद भी उसके नजदीक नहीं पहुंच पा रहे थे, जो भी उसके नजदीक पहुंचता वह घायल होकर चीखते हुए वापस भागता था। इस स्थिति को देखकर दुश्मनों का एक बड़ा समूह जो रणक्षेत्र छोड़कर भाग रहा था उन्हीं में से एक दल उसके तरफ बढ़ने लगा।

सभी मोर्चो से दुश्मन लड़ाई छोड़कर भाग रहे थे। घोड़े पर सवार भुजबल, करिया, गजरी, दयाल, बखारी, घासी,जैसे खड़ैत दुश्मनों के ऊपर अपने साथियों के साथ टूट पड़े थे। बहुत से दुश्मन जमीनों पर गिरे हुए थे। दुश्मन रणक्षेत्र से दूर भाग रहे थे। खड़ैत उनका पीछा कर रहे थे। जब उन्होंने भागते हुए दुश्मनों के एक दल को सुन्दरी के तरफ दौड़ते हुए देखा तो भुजबल और करिया अपने साथियों के साथ दुश्मनों को बीच रास्ते में ही रोक लिया और उनसे भीड़ गये। बखारी और घासी भी दुश्मनों को परास्त कर वापस आ रहे थे। उनके वापस सुंदरी के निकट पहुंचने से पहले ही दुश्मनों ने अपना पीठ दिखा दिया था।

सूर्योदय हो चुका था। पूर्व दिशा में सूर्य के प्रकाश से क्षितिज में लालिमा फैल चुकी थी। ऐसे दुश्मन जो अंधेरे में छिपे हुए थे, वे अब अपने सामने विजयी, शक्तिशाली सतनामी खड़ैतों से डरकर दूर भागते हुए दिखाई दे रहे थे। सुंदरी डोला के पास खड़ी हुई थी, घोड़े पर सवार बखारी ने गर्व के साथ सुंदरी को देखा। अपने ओर देखता पाकर सुंदरी ने अपने तलवार को ऊपर की ओर उठाते हुए मुस्कुराई, बखारी ने भी अपने तलवार को आसमान की ओर उठाया। उसी समय कुछ दूर घोड़े पर सवार भुजबल ने अपना तलवार उठाते हुए कहा-जय सतनामी!

सभी खड़ैतों ने भी अपनी हथियार आसमान की ओर उठाते हुए जवाब दिया-जय सतनाम!

भुजबल महंत-जय सतनामी!

सभी खड़ैत-जय सतनाम!

भुजबल महंत-जय सतनामी!

सभी खड़ैत-जय सतनाम!

कई स्थानों पर दुश्मन जमीन पर गिरे हुए थे। एक खड़ैत ने जमीन पर पड़े हुए एक दुश्मन को देखकर उसके निकट गया और उसे उलटकर देखा तो वह दुश्मनों का नेतृत्व करने वाला मुखिया निकला। वह हिल-डुल भी नहीं रहा था। खड़ैत ने अपना हथियार ऊंचा किया और तेज आवाज में कहा-

शेर-शेर कहिथे संगी, शेर कहां से आये हो!
सतनामी के शेर ढिलागे, सामंत कहां लुकाय हो!!
(शेर-शेर कहते हैं साथी शेर कहां से आया!
सतनामियों का शेर निकला है, सामंत कहां छिप गया।।)

सभी लोग खुशी से हथियार लहराते और नाचते हुए अपने विजय का उत्सव मना रहे थे। जोर-जोर से विजयी ढोल बजना शुरु हो गया।

--00--

06 सतनामियों का संक्षिप्त इतिहास

इससे पहले कि इस घटना के विस्तार में जाने के लिए विभिन्न लोगों के द्वारा बताये विवरण का अध्ययन करें। हमें सतनामियों के इतिहास के संक्षिप्त जानकारी पर दृष्टि डालना होगा, जिससे इस अभियान के विभिन्न तथ्यों को समझा जा सके।

सन् 1741 ई. में पूर्व तक छत्तीसगढ़ में कलचुरी राजवंश के द्वारा स्थानीय आदिवासी जमींदारों के सहयोग से शासन सत्ता संचालित था। यहां के लोग आपसी प्रेम-भाईचारा के साथ रहते थे। शासन द्वारा आम जनता के ऊपर टेक्स (लगान) का ज्यादा दबाव नहीं था उतना ही टेक्स लिया जाता था। जितना लोग आसानी से दे सके। रतनपुर का राजा भी नाम मात्र का सालाना टैक्स दिल्ली भेजता था। कोई बड़ी सेना नहीं होने के कारण उनका खर्च भी कम था। जनता के सामाजिक-सांस्कृतिक मामलों में कोई हस्तक्षेप नहीं किया जाता था। कुल मिलाकर यहां के लोगों का जीवन सुख व शांति से गुजर रहा था।

सन् 1741 में पेशवाशाही मराठा सेना ने भास्कर पंत के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ पर आक्रमण किया। रतनपुर के शासक ने बिना युद्ध किये मराठों के लिए रतनपुर की गद्दी को खाली कर दिया। रतनपुर में अधिकार होने के बाद मराठों ने छत्तीसगढ़ के सभी क्षेत्रों पर अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया। सिर्फ सोनाखान क्षेत्र ही एकमात्र ऐसा राज्य था जिसने मराठों की अधीनता को स्वीकार नहीं किया।

छत्तीसगढ़ में अधिकार करने के बाद मराठों ने यहां की जनता के ऊपर दबावपूर्वक अपने धार्मिक-विचारधारा के अनुसार आर्थिक, सांस्कृतिक-धार्मिक-सामाजिक मामलों में हस्तक्षेप करना शुरु कर दिया। धीरे-धीरे यहां का जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया। आम जनता के ऊपर दुखों व कष्टों का पहाड़ टूट पड़ा व मानवता कराहने लगी।

सन् 1820 ई. में महान सतनाम आंदोलन का शुरुआत जातिवादी-सामंती-पेशवाशाही मराठा शक्तियों द्वारा जन सामान्य के ऊपर किये जा रहे अन्याय-अत्याचार, शोषण, गरीबी, ऊंच-नीच भेदभाव, जन्म आधारित श्रेष्ठ-अश्रेष्ठ सिद्धांत, भूदास प्रथा, देवदासी प्रथा, सतीप्रथा, बहुविवाह, नवड्योढ़ा प्रथा, जातिप्रथा, पशु व नरबली प्रथा आदि सामाजिक-धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक कुरीति के विरुद्ध सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक-समानता और मानवाधिकार के रक्षा के लिए गुरु घासीदास के नेतृत्व में 28 दिसंबर सन 1820 ई. को किया गया।

6.1 सतनाम आंदोलन का परिणाम

सतनाम आंदोलन में लाखों लोगों ने हिस्सा लिया जिसके परिणाम स्वरूप :

1. **संगठन का निर्माण-** कथित विभिन्न जाति समूह (अहीर-यादव-रावत, तेली, आदिवासी, कुर्मी, लोधी, मरार, धोबी, नाई, कुम्हार, आदि इनमें सबसे अधिक अहीर, आदिवासी व तेली थे। अल्प संख्या में कथित उच्च वर्ग के ब्राम्हण, क्षत्रिय तथा अति शुद्र जाति) के लोगों ने अपने-अपने जाति समूह को छोड़कर सतनाम आंदोलन में शामिल हुए और आगे चलकर सतनामी कहलाये। इससे पहले इनको आपस में लड़वाया जाता था। अब ये आपस में एक होकर अत्याचारी पेशवाशाही-मराठा सैनिकों से मुकाबला करने लगे। संगठन के व्यवस्थित संचालन के लिए गांव में भंडारी एवं छड़ीदार (साटीदार) तथा क्षेत्र में महंत व उनके उपर राजमहंत बनाया गया।
2. **भूमि पर अधिकार-** पेशवाशाही-मराठा सामंतों, सैनिकों व उनके स्थानीय चापलूसों, समर्थकों द्वारा लुटे गये अपने जमीनों-संपत्तियों पर दोबारा अधिकार कर भूदास प्रथा को खत्म किया गया। सामंतों को टेक्स देना बंद कर दिया गया। सामूहिक खेती किया जाने लगा। सामंतों और उनके सैनिकों को सतनाम आंदोलनकारियों ने अपने प्रभाव वाले इलाकों / क्षेत्रों से भगा दिया।

3. **साहेब सतनाम का अभिवादन** -अभिवादन के लिए साहेब सतनाम का प्रचलन हुआ पहले कथित उच्च वर्ग, सामंतों व पुरोहितों को प्रणाम करना पड़ता था, चाहे वह कम उम्र अज्ञानी, अपराधी या गलत चरित्र का क्यों न हो। अब समानता पर आधारित 'साहेब सतनाम' का उपयोग किया जाने लगा।

4. **भोजन** - अपने भूमि पर अधिकार होने से लोगों के जीवन स्तर में सुधार हुआ अब लोग अच्छा भोजन करने लगे इससे पहले लोग भोजन के लिए अपने स्वामियों पर आश्रित थे। तथा उन्हें एक समय के भरपेट भोजन के लिए तरसना पड़ता था।

5. **वस्त्र (पहनावा)** - लोगों का पहनावा बदल गया अब आमजन अच्छे वस्त्र पहनने लगे। पगड़ी व जूता (पनही) का उपयोग करने लगे। इससे पहले लोगों को अच्छा वस्त्र तो क्या स्त्रियों के लिए भी तन ढंकने के लिए पूरा वस्त्र नहीं मिल पाता था। पुरुषों को पगड़ी -साफा-पनही (जूता) पहनने का अधिकार नहीं था। यह सब प्रभुवर्ग के लिए आरक्षित कर दिया गया था।

6. **घर** - अब लोग झोपड़ी के बजाय अच्छे और बड़े मकानों में रहने लगे इससे पहले सिर्फ कथित उच्च वर्ग, सामंतों, पुरोहितों व उनके चाटूकारों को ही यह अधिकार था।

7. **सवारी**- घोड़ा, हाथी तथा अन्य साधनों का उपयोग आमजनों के द्वारा किया जाने लगा पूर्व के प्रतिबंध को इस आंदोलन ने तोड़ दिया इससे पहले लोग पैदल ही सफर कर सकते थे।

8. **डोला**- लोग अब विवाह में डोला का उपयोग करने लगे पेशवाशाही मराठों ने स्थानीय निवासियों के लिए इसे प्रतिबंधित कर दिया था सिर्फ प्रभुवर्ग ही अपने बहन, बेटियों को डोला में बैठा सकते थे। अब जन सामान्य भी अपने इच्छानुसार डोला का प्रयोग करने लगा।

9. **खड़ैत** - शासक वर्ग ने आम जनता को शस्त्रविहीन कर दिया था लेकिन वे स्वयं हथियारों के साथ जनता के ऊपर पिल पड़ते थे। सतनाम आंदोलन से अब आम जनता भी सैनिक प्रशिक्षण प्राप्त करने लगे शस्त्र धारण करने लगे अपने ऊपर अन्याय-अत्याचार करने वालों के खिलाफ सशस्त्र विरोध किया। ये प्रशिक्षित होने के बाद खड़ैत कहलाते थे।

10. **सतनाम धर्म संस्कृति** -

10.1 **जैतखाम-गुरुद्वारा का निर्माणः** गुरु घासीदास और सतनाम आंदोलनकारियों ने भंडारपुर में सन् 1849 ई. को जैतखाम गुरुद्वारा का निर्माण कर सतनाम धर्म का स्थापना किया। यह सतनामियों का प्रशासनिक मुख्यालय व प्रमुख धर्म प्रचार केन्द्र था।

10.2 **क्षेत्रीय मुख्यालय व बाड़ा**- इसके अलावा तीन अलग-अलग स्थानों में क्षत्रिय मुख्यालय व प्रचार केंद्र बनाया गया जिसे बाड़ा कहा गया इसी काल में तेलासीबाड़ा, गुढ़ीयारी बाड़ा व बोड़सरा बाड़ा का निर्माण किया गया।

10.3. **तत्ववादी सतनाम**- सतनाम विचारधारा का व्यापक प्रचार प्रसार हुआ चूंकि सतनाम विचारधारा ईश्वर के बजाय तत्व को मानता है इसलिए लोगों ने अपने घरों से देवी -देवताओं के मूर्तियों को हटा दिया और अपने घरों में जैतखाम का निर्माण किया।

10.4. **धार्मिक पाखण्ड ईश्वरीय चमत्कार का भण्डाफेड़**- पुराने सभी धार्मिक पाखण्ड और कथित ईश्वरीय चमत्कारों का भण्डाफोड़ किया गया तथा तत्ववादी सतनाम के अनुसार सभी कथित चमत्कारों को दोहराया जाता था। इससे धार्मिक पाखण्ड और चमत्कारों पर जनता का विश्वास खत्म होता गया। पुरोहितों का प्रभाव खत्म हो गया।

10.5. **धार्मिक सांस्कृतिक कुरीतियों का निषेध**- बहुविवाह, सतीप्रथा, देवदासी प्रथा, बलिप्रथा, नवड़योढ़ा प्रथा, आदि अनेक कुरीतियों को बंद कर दिया गया तथा विधवा विवाह को दोबारा प्रारंभ किया गया।

10.6 **पंथी** - सतनाम आंदोलन के दौरान अहीर और आदिवासी बड़ी संख्या में आंदोलन से जुड़े इसके अलावा अन्य कथित जाति समूह के लोगों ने अपने पूर्व के जातिय पहिचान को छोड़कर एक नये समाज का निर्माण किया। इस दौरान पंथी

नृत्य का विकास हुआ यह कर्मा, रावत तथा अन्य लोगों के सम्मिलित मिश्रित रुप में एक अलग नृत्य शैली का विकास किया।

10.7. **कर्म की श्रेष्ठता व जन्म से समानता का भाव-** सतनाम विचारधारा में व्यक्ति के कर्म के आधार पर श्रेष्ठ अश्रेष्ठ व जन्म के आधार पर सभी को समान समझने की भावना का विकास किया।

6.2 विशेष–

1. सन् 1820 ई. से 1860 ई. तक 40 वर्षो तक सतनामियों का राज चला।
2. सन् 1850 ई. तक छत्तीसगढ़ के मैदान का आधा जनसंख्या और इसी के अनुपात में जमीनों पर सतनामियों का कब्जा था।
3. जंगलों में रहने वालें आदिवासियों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध था।
4. पेशवाशाही मराठा सामंतों, सैनिकों, उनके स्थानीय चापलूसों व पुरोहितों को लगातार खदेड़ा जा रहा था। सतनामियों के ऊपर इनका शासन नहीं चलता था।
5. सतनामियों ने अपने स्वयं का एक सामानांतर सत्ता स्थापित कर लिया था।
6. भण्डारी, छड़ीदार के रुप में स्थानीय प्रमुख और महंत तथा राजमहंत के रुप में बड़े स्तर पर अपना प्रमुख बना लिये थे। खड़ैत इनके सैनिक होते थे, जो संगठन के द्वारा सौंपे गये कार्यो को करते थे।
7. सामंतों और शासकों को टेक्स नहीं देते थे, इनके स्थान पर अपने बनाये प्रमुख का टेक्स देते थे।
8. गुरु घासीदास के बाद फरवरी 1850 ई. में बालकदास को उनके कार्यो को देखकर सतनाम आंदोलनकारियों के संगठन ने अपना मार्गदर्शक व प्रमुख बनाया।
9. गुरु बालकदास ने सतनाम आंदोलन को पूर्व की भांति पूरी गति से चलाया।
10. अंग्रेज सरकार ने मालिक मकबुजा कानून बनाया जिसके अनुसार ऐसे काश्तकार जिनका अपनी जमीन पर सन् 1840 ई. से कब्जा था उन्हें वाजिब कास्तकार मानते हुए उन जमीनों का मालिकाना हक प्रदान करने का प्रावधान था। इस कानून से जातिवादी-सामंती तत्वों में खलबली मच गया।
11. चूंकि उस समय तक सतनामियों के पास उनके जनसंख्या जो कि गुरु घासीदास के समय ही छत्तीसगढ़ के मैदानी क्षेत्र में आधा हो चुका था। के अनुपात में जमीन था।
12. गुरु बालकदास के रहते वे जमीनों पर कब्जा नहीं कर सकते थे। इसलिए उन्होंने राष्ट्रव्यापी षडयंत्र कर 16 मार्च सन् 1860 ई . को गुरुबालकदास जी के उपर प्राणघातक हमला किया। जिसके परिणामस्वरुप 17 मार्च सन् 1860 ई. को उनका मृत्यु हो गया।
13. उनके शहादत के बाद सतनाम दमन शुरु हो गया।
14. सतनामियों के ऊपर चौतरफा प्रहार हुआ इसके लिए साम-दाम दण्ड-भेद की नीति का प्रयोग किया गया।

इस प्रकार मध्यभारत के छत्तीसगढ़ क्षेत्र के शांत वातावरण को अन्यायी पेशवाशाही-मराठों ने दूषित कर जनसामान्य के ऊपर घोर अन्याय-अत्याचार और शोषण के कीर्तिमान स्थापित किया। सतनाम आंदोलनकारियों ने जातिवादी-सामंती तत्वों से संघर्ष करते हुए अपना खोया हुआ संपत्ति व सम्मान की रक्षा करते हुए समतावादी समाज की स्थापना किये और यह स्थिति सन् 1860 ई. तक कायम रहा।

--00--

अब हम मुख्य बिंदु पर आते है। और इस अभियान के विषय पर विभिन्न लोगों व स्त्रोतों से प्राप्त विवरण का अध्ययन करते हैं। इस महान ऐतिहासिक अभियान गाथा के सम्बंध में कुंजराम लहरे, खोजकर्ता भुवनलाल रात्रे, भुजबल महंत के वंशज गणेश महंत, छत्तीसगढ़ी लोक गायक भगत गुलेरी के गीत, बखारी भंडारी व घासी जोगान्स के वंशजों गंगा जोशी, श्यामलाल जोगान्स, भानदास जोशी, महाजन जोशी, रंजन जोगान्स और चिरहुलावासियों के द्वारा बताये गये विवरण को इस लेख में स्थान दिया गया है जो इस प्रकार है-

7.1 कुंजराम लहरे

कुंजराम लहरे के अनुसार*[2]- भुजबल महंत नवलपुर का रहने वाला था। ये राजमहंत और तत्कालीन सतनामियों के मुखिया थे। इसके पास हजारों एकड़ जमीन था। इनका घर किसी बाड़े की तरह था जिसका मुख्य दरवाजा इतना बड़ा था, कि उसमें हाथी के ऊपर चढ़कर आदमी आराम से आ-जा सकता था। ठीक वैसे ही जैसे बोड़सरा बाड़ा है। भुजबल महंत बेमेतरा, नवागढ़, मुँगेली आदि क्षेत्र के गांवों में विभिन्न सामाजिक कार्यों से अक्सर दौरा करते रहते थे। एक बार वे अपने दो सहयोगी साथियों के साथ मुंगेली क्षेत्र के दौरे पर थे। इसी दरम्यान वे चिरहुला गांव से गुजर रहे थे, तो उनके मन में विचार आया कि क्यों न बखारी भंडारी से मिल लिया जाय। भुजबल महंत बखारी से कई बार मिल चुके थे, लेकिन बखारी के घर कभी नहीं गये थे।

बखारी ने अपने साथियों से कहा- क्या हम बखारी भंडारी से मिल लें?

उसके साथियों ने कहा- हाँ महंत जी, जब हम यहां तक आ गये हैं तो उनसे मिल लेना ही अच्छा होगा। (पहले साथी ने जवाब दिया)

दूसरे साथी ने भी कहा-हां हां क्यों नहीं और मैंने तो सुना है कि उसकी एक बेटी भी है, लगे हाथ उसे आज आप देख भी लेंगे।

भुजबल मंहत अपने पुत्र दयाल का विवाह करना चाहते थे, यह बात उन्होंने चर्चा के दौरान कुछ माह पूर्व अपने रिश्तेदारों, मित्रों व सहयोगियों से कहा था। यह बात बहुत से लोगों के बीच फैल चुका था। भुजबल महंत का सामाजिक प्रभाव इतना व्यापक था कि बहुत से लोग, जिन्होंने यह बात सुना था और जिनके घर विवाह योग्य लड़की थी, वे मन ही मन चाहते थे कि भुजबल मंहत हमारी बेटी या रिश्तेदार को अपना बहू बना लें। लेकिन वे लोग यह बात किसी को भी नहीं कह पाते थे क्योंकि उस समय और कुछ अपवादों को छोड़कर आज भी एक सामान्य सतनामी अपनी बेटी के विवाह के लिए लड़के वालों से संपर्क नहीं करते, ऐसा करना वे अपने स्वाभिमान के खिलाफ समझते हैं बहुत से ऐसे लोग भी थे जो यह चाहते थे कि हमारे बताने या मध्यस्थता करने से भुजबल मंहत को अपने बेटे के लिए बहू मिल जाये। रिश्ता बन जाये जिससे हमारा भी सामाजिक प्रभाव बढ़ जाये और लोगों को बता सकें कि हमारे माध्यम से यह रिश्तेदारी बनी है। ऐसे कई लोगों ने अपने-अपने तरफ से योग्य लड़कियों के बारे में भुजबल मंहत और उसके कुछ निकटतम लोगों को बताया था,भुजबल मंहत के पास ऐसे ही मध्यस्थों के द्वारा अनेक गांवों से सूचना मिला था, कि हमारे या इस गांव में आपके बेटे के लायक योग्य लड़की है, जिसे आप अपने बहु के रूप में पाकर खुश होंगे। भुजबल मंहत अपने विभिन्न व्यस्तताओं के वजह से किसी के भी घर अपने बेटे के विवाह के उद्देश्य से लड़की देखने के लिए नहीं गये थे। अपने साथी का बात सुनकर भुजबल मंहत ने कहा-हां अपने दूसरे कार्यों में व्यस्त रहने के कारण इस पर मैंने ध्यान नहीं दिया आपने याद दिला दिया। आज मैं बखारी की बेटी को भी देख लूंगा और उससे अपने बेटे दयाल के विवाह के संबंध में चर्चा भी कर लूंगा, तो चले उसके घर। क्या किसी से पूछना पड़ेगा या आप लोग उनका घर देखें हैं?

पहला साथी- हां, मैं उनका घर देखा हूं किसी से पूछना नहीं पड़ेगा। चलिये उसके घर का रास्ता मुझे पता है। कहता हुआ उसने अपने घोड़ा आगे किया।

बखारी के घर के सामने मैदान में अखाड़ा था। जहां तीस की संख्या में युवा लड़के और लड़कियाँ लगभग 40 वर्ष उम्र के एक खड़ैत की निगरानी और निर्देशन में लाठी, तब्बल, तलवार, भाला आदि हथियार चलाने का प्रशिक्षण ले रहे थे। भुजबल मंहत और उसके दोनों साथी उनके निकट न जाकर दूर में ही रुक गये और उनके अभ्यास को देखने लगे । प्रशिक्षक खड़ैत ने इशारा किया, सभी लोग हथियार चलाना छोड़कर दो समूह में बंट गये। खड़ैत ने उनको एक -दूसरे के उपर आक्रमण करने को कहा उन्होंने अपने-अपने धारदार और घातक हथियार को मैदान में ही एक स्थान पर रख दिया और अपने हाथों में लाठियां सम्भाल लिया उसके बाद दोनों समूह के सदस्यों ने एक दूसरे पर आक्रमण कर दिया। यह लड़ाई तब तक चलता रहा जब तक वे अपने विरोधी को निःशस्त्र नहीं कर दिया। उनके शारीरिक हाव-भाव को देखकर लगता था कि वे काफी समय से अभ्यास कर रहे थे, वे थके चुके थे। खड़ैत ने अभ्यास बंद करने को कहा और मैदान के बीच में आ गया। सभी युवा अर्द्धचंद्राकार कतार बनाकर उसके सामने खड़े हो गये।

खड़ैत कह रहा था- आप सभी का अभ्यास बहुत अच्छा है। कल से हम तलवार से लड़ने, वार करने और उससे बचाव करने का अभ्यास शुरु करेंगे। यह कहने के बाद उसने नारा लगाया- जय सतनामी !

प्रशिक्षण लेने वाले सभी युवाओं ने जवाब दिया- जय सतनाम! इस नारे को तीन बार दोहराया गया।

इसके बाद खड़ैत ने सभी से कहा -आप अपने-अपने हथियार सम्भल लें और घर चले जायें।

सभी प्रशिक्षुओं ने अपने हथियार अपने अधिकार में कर अपने अपने घर की ओर चलने लगे। जब सभी लोग अपने घर के लिए प्रस्थान करने के लिए मैदान से बाहर होने लगे तो खड़ैत भी मैदान छोड़कर जाने लगा।

भुजबल मंहत और उसके साथी मैदान से कुछ दूर रुके हुए थे पहला सांथी- महंत जी देखिए भुजबल महंत के घर एक लड़का और एक लड़की यही मैदान से जा रहे हैं हो सकता है कि वे बखारी के ही बेटा और बेटी हो।

भुजबल महंत- होना तो यही चाहिये क्योंकि प्रशिक्षण देने वाले खड़ैत ने सभी को अपने घर जाने के लिए कहा था और ये अपने गुरु के आदेश की अवहेलना नहीं कर सकते।

दूसरा साथी- क्यों न हम कुछ देर के बाद बखारी के घर जायें।

भुजबल मंहत- हां ठीक कह रहे हैं हम यहां कुछ देर और रुकते हैं उसके बाद भंडारी जी के घर जायेंगे।

तीनों वहीं रुक जाते हैं कुछ ही समय हुआ था कि उस मैदान में और भी लोग आ जाते हैं ये कई उम्र के व्यक्ति हैं इनके बीच भी एक मुखिया है। लगता है कि ये पहले से ही प्रशिक्षित हैं क्योंकि इनके दांव-पेंच काफी सटीक है और इनका प्रशिक्षक इनको ज्यादा निर्देश नहीं दे रहा हैं ये तलवार और तब्बल से वार करने और बचने का अभ्यास कर रहे हैं। लगभग आधा घण्टा तक रुकने के बाद तीनों बखारी के घर जाने के लिए आगे बढ़ते हैं जैसे ही वे उस प्रशिक्षण स्थल के पास से गुजरते हैं, प्रशिक्षक का सतर्क निगाह उन तीनों के ऊपर जाता है इससे पहले वे झाड़ियों और टीलों के ओट में थे इसलिए किसी का भी नजर उन पर नहीं पड़ा था। कुछ क्षण के लिए अभ्यास करने वालों का भी ध्यान इनके तरफ जाता है। लेकिन वे तुरंत अपने अभ्यास में फिर से लग जाते है।

तीनों धीरे-धीरे बखारी के घर के सामने पहुंच जाते हैं। बखारी का घर किसी हवेली या बाड़ा की तरह था भारी भरकम दरवाजे से ही लगा एक छोटा दरवाजा भी था, जो कि खुला हुआ था।

......भुजबल मंहत ने अपने पहले साथी को घोड़ों की निगरानी करने के लिए बाहर में ही रुकने के लिए कहा और दूसरे साथी को घर के अंदर जाकर बखारी को अपने आने की सूचना देने के लिए भेजा। वहां वे स्वयं दरवाजे के सामने रुक गये। इससे पहले कि उसका दूसरा साथी दरवाजा पार कर अंदर प्रवेश करता अंदर से दरवाजे की तरफ एक लड़की आती हुई दिखाई दी वह दरवाजे के बाहर ही रुक गया। लड़की की नजर भी दरवाजे के बाहर उनके ऊपर पड़ चुकी थी। उसने अंदर से ही किसी को आवाज दिया- भैया-भैया कोई आये है। दरवाजे के पास खड़े है।

अंदर से पुरुष स्वर में कहा गया-अंदर बुला लाओ। लड़की दरवाजे पर पहुंचती है भुजबल मंहत आगे बढ़ते हैं और इससे पहले की भुजबल मंहत कुछ कह पाते लड़की ने उनका अभिवादन किया- साहेब सतनाम!

भुजबल मंहत ने उसके अभिवादन का जवाब दिया-साहेब सतनाम! और पूछा क्या यह बखारी भंडारी का घर है?

लड़की ने जवाब दिया-हां

भुजबल मंहत -तुम कौन हो?

लड़की ने कहा- मैं उनकी बेटी हूं ।

भुजबल मंहत- क्या नाम है तुम्हारा?

लड़की- सुन्दरी, सुन्दरी जोगान्स और आप लोग कहां से आये हैं? आइये अंदर आइये

भुजबल मंहत-मेरा नाम भुजबल है, मैं नवलपुर से आया हूं, आपके पिता से मुझे मिलना है।

सुन्दरी ने उन्हें अंदर आने का इशारा किया और आगे बढ़ने लगीं, उसके पीछे भुजबल मंहत और उसका दूसरा साथी आने लगे, पहला साथी बाहर ही रुका हुआ था।

सुन्दरी उनको एक बैठक कक्ष जो खुला बरामदा का ही हिस्सा था, वहां ले गई और बोली- आप लोग बैठिये सुन्दरी वहां से चली गई, कुछ ही क्षण बाद एक औरत पानी लेकर आई पानी भुजबल मंहत और उसके साथी को देते हुए बोली- आप लोग हाथ मुंह धोइये मैं मया को भेज रही हूं कहते हुए वापस चली गई।

कुछ देर पश्चात एक ऊंचा-पूरा नौजवान आता है, भुजबल मंहत और उसके साथ आये उसके दूसरे साथी को अभिवादन करते हुए कहता है- साहेब सतनाम! जवाब में भुजबल मंहत और उसका साथी भी-साहेब सतनाम! कहते है।

नौजवान भुजबल से कहता है-साहेब कहां से आये हैं? हालांकि सुन्दरी ने उसे और अपनी मां को बता दिया था कि आने वालों के मुखिया का नाम भुजबल मंहत है और वे नवलपुर से आये हैं लेकिन औपचारिक वार्तालाप करने के लिए नौजवान पूछता है। भुजबल मंहत ने जवाब दिया-मेरा नाम भुजबल है मुझे भुजबल मंहत कहते है। में नवलपुर का रहने वाला हूँ। मैं बखारी भंडारी से काफी दिनों से नहीं मिला हूं। इसलिए मिलने के लिए आ गया। आपका क्या नाम है? भुजबल ने नौजवान से पूछा ।

नौजवान ने जवाब दिया-मेरा नाम मया है बखारी भंडारी मेरे पिता है।

भुजबल ने कहा-आपके पिता कहां है? और क्या कर रहे हैं?

मया- पिताजी आज किसी दूसरे गांव गये है।

भुजबल - कब आयेंगे?

मया- आज ही दोपहर या शाम तक आ जायेंगे।

भुजबल- वो लड़की कौन है? जो हमें यहां बैठाकर गयी है।

मया- वो मेरी बहन है जो आप लोगों को पानी देकर गई है। वो मेरी मां है।

भुजबल- क्या आप लोग हथियार चलाने का प्रशिक्षण लेते हैं?

मया- हां मैं और मेरी बहन रोज सुबह हमारे घर के सामने ही मैदान में जाते है। वहां अभ्यास करते है। आप लोगों के आने से कुछ समय पहले हम दोनों वहीं से आये हैं।

भुजबल- क्या आप लोगों का गुरु अच्छे से सिखा रहा है?

मया- हमारा गुरु सभी हथियार लाठी से लेकर तब्बल, तलवार , भाला, बर्छी आदि बहुत अच्छे से सिखा रहे हैं। हमारा प्रशिक्षण अब पूर्णता की ओर है, बहुत जल्दी हम पूर्ण रुप से सिख जायेंगे। अभ्यास समय-समय पर लगातार चलता ही रहेगा।

भुजबल- क्या आप घुड़सवारी करते हैं?

मया- हां घुड़सवारी तो हम बचपन से ही करते आ रहे हैं, हम सभी घुड़सवारी करना जानते हैं।

उनके बीच कुछ समय तक वार्तालाप होता रहा।

मया- आप लोग स्नान कीजिए तब तक भोजन बन जायेगा।

भुजबल ने कहा- हमारा एक साथी बाहर में है।

मया- ओह बाहर में क्यों हैं?

भुजबल- हमारा घोड़ा बाहर में है उसका रखवाली कर रहा है।

मया- मैं बुलाकर लाता हूं कहता हुआ मया बाहर गया। बाहर एक आदमी घोड़ों की पहरेदारी कर रहा था। दया ने उसे

बुलाया तो उसने जवाब दिया- महंत जी ने घोड़ों की पहरेदारी के लिए मुझे यही रहने के लिए कहा है इसलिए मुझे यही रहना पड़ेगा।

मया ने कहा- अगर आप चाहें तो घोड़ों को बाहर या अंदर जहां भी चाहे बांध सकते है। क्यों न तीनों घोड़ों को अंदर में ही ले चलें।

इस पर महंत के पहले साथी ने सहमति में सिर हिलाते हुए कहा- ठीक है मैं अंदर ही ले आता हूं।

मया ने उसे अंदर बुलाकर घोड़ों को बांधने के लिए अस्तबल दिखाया, जहां तीन घोड़े पहले से ही बंधे थे। भुजबल महंत के पहले साथी ने अपने दूसरे साथी को भी बुला लिया। महंत के दोनों साथी और मया तीनों ने एक-एक घोड़े को अस्तबल में ले जाकर बांध दिया, जहां उसके लिए चारे-पानी का व्यवस्था था।

बखारी के घर में सभी आवश्यक सुविधा उपलब्ध था। वहां स्नानागार भी था जहां मेहमानों को किसी भी तरह का कोई परेशानी न हो। घरवालों के लिए अलग स्नानागार था। उसके अस्तबल में कई घोड़े रहते थे। गाय, भैंस, बैल, आदि के लिए अलग आवास था, पानी के लिए कुंआ घर में ही था। मया उन तीनों को मेहमानों के लिए बनाए गये स्नानगार में ले जाता है। उन्हें अपने घर के विभिन्न मुख्य स्थानों को दिखाता है व कहता है-अच्छा आप लोग स्नान कीजिए मैं जा रहा हूं, आप लोग स्नान करने के बाद वहीं आइयेगा, जहां हम बैठे थे। भुजबल ने जवाब दिया-ठीक है। आप हमारी चिंता मत कीजिए, मया वहां से चला गया। तीनों स्नान करने की तैयारी में लग गये, साथ ही बात भी करने लगे।

पहला साथी -महंत जी आपने तो इस लड़की को देख लिया है, हमारे दयाल के लिए यह लड़की कैसी रहेगी। मेरे हिसाब से तो बहुत अच्छी रहेगी।

भुजबल- पसंद तो मुझे भी है लेकिन हमारे पसंद करने से क्या होगा, जब तक दोनों एक-दूसरे को जीवन साथी के रूप में पसंद नहीं कर लेते। बखारी इस संबंध में क्या विचार रखता है। अगर उसने हां कर दिया तभी बात आगे बढ़ पायेगा।

दूसरा साथी - महंत जी ऐसा कौन हैं जो आपसे रिश्तेदारी का संबंध नहीं रखना चाहेगा। कई लोगों ने आपसे संपर्क किया था लेकिन आपने ध्यान नहीं दिया। यह तो अच्छा हुआ कि अचानक यहां आने को तैयार हो गये।

भुजबल- मैं यहां इस कारण से नहीं आया हूं।

पहला साथी- लेकिन जब यहां आ ही गये हैं तो विवाह के संबंध में बात कर ही लें, न जाने फिर आपको समय मिले की नहीं आखिर विवाह तो करना ही पड़ेगा।

भुजबल- ठीक ही कह रहे हैं, अगर बखारी समय रहते आ जाते हैं तो उनसे बात करूंगा।

आपस में बात करते हुए तीनों स्नान करने लग गये स्नान करने के बाद तीनों मेहमान कक्ष में पहुंच गयें जहां मया उनका इंतजार कर रहा था।

मया उनको भोजन कक्ष में लेकर गया जहां इस कक्ष से लगा हुआ ही रसोई घर था वहां सुन्दरी के अलावा एक और औरत है जो मया और सुन्दरी की मां थी। भोजन कक्ष में बैठने के लिए आसन पहले से ही बिछा हुआ था। मया उन तीनों को संबोधित करते हुए कहता है-आप लोग बैठिये।

वे तीनों बैठते हैं

भुजबल ने दया से कहा- आप भी बैठिये

मया- हां बैठता हूं कहकर बैठ गया।

सुन्दरी रसोई घर में अपनी मां का हाथ बंटा रही थी। उसकी मां ने सभी को भोजन परोसा इस काम को करने के लिए कुछ और भी लोग मौजूद थे। भोजन करने के बाद भुजबल और उसके दोनों साथियों को आराम करने के लिए मया एक कक्ष में ले गया।

भुजबल ने मया से कहा- आपके पिताजी जैसे ही आयेंगे हमसे संपर्क करा देना क्योंकि हम यहां ज्यादा समय तक नहीं रुकेंगे।

मया- ठीक है जैसे ही पिताजी आयेंगे मैं आपके विषय में बता दूंगा। तब तक आप लोग विश्राम कीजिए।

कहकर मया उस कक्ष से निकल जाता है और तीनों आपस में वार्तालाप करने लग जाते हैं।

.......शाम को बखारी अपने बेटे दया और कुछ सहयोगी साथियों के साथ चिरहुला पहुंचता हैं रास्ते में ही उसके सहयोगी अपने घरों की ओर जाते हैं। बखारी और उसका बेटा अपने घर की ओर आते हैं। वे घर आकर अपने-अपने घोड़ों को अस्तबल में लाते हैं वहां तीन और घोड़ों को बंधा देखकर भुजबल कुछ सोचता है और अपने बेटे दया से कहता है-लगता है कुछ लोग आये हुए हैं कौन हो सकते हैं?

दया- हो सकता है कि वे लोग आपसे ही मिलने के लिए आये हों?

बखारी जब अपने कक्ष में जाता है तो उसकी पत्नी ने कहा- नवलपुर के भुजबल महंत और उसके साथ दो लोग आये हुए हैं और आपसे मिलना चाहते है।

बखारी- वे घर में ही हैं या गांव में और किसी के घर गये है।

बखारी की पत्नी ने कहा- वे घर में ही मेहमान कक्ष में विश्राम कर रहे है। भुजबल ने मया को कहा था कि जैसे ही आप आये उनके विषय में बता दें।

बखारी- ठीक हैं मैं उनसे मिल लेता हूँ।

बखारी भुजबल से मिलने के लिए मेहमान कक्ष की ओर चला जाता है जहां भुजबल और उसके दोनों सांथी बैठे हुए हैं। बखारी को आता हुआ देखकर तीनों अपने स्थान में खड़े हो जाते है। बखारी भुजबल का अभिवादन करता है- साहेब सतनाम!

जवाब में भुजबल भी कहता है- साहेब सतनाम!

बखारी और भुजबल एक दूसरे के हांथ थामते हुए हाथ मिलाते हैं और गले लगते हैं। बखारी भुजबल के दानों साथियों से भी बारी-बारी से अभिवादन का आदान प्रदान करते हुए उसी प्रकार एक-दूसरे का हांथ थामते हुए गले लगाते हैं फिर बखारी उन तीनों के सामने बैठ जाते है।

कुछ समय तक औपचारिक चर्चा होती है। इसके बाद भुजबल बखारी से कहता है- आपने अपनी बेटी सुन्दरी के विवाह के विषय में क्या सोंचा है?

बखारी -इसके विषय में हमने अभी तक सोचा ही नहीं हैं। आपने पूछा है तो अब हमारे मन में भी आ रहा है कि हमारी बेटी अब विवाह के योग्य हो चुकी हैं। आज से पहले हमारा ध्यान इस पर गया ही नहीं था।

भुजबल- क्या आप उसका विवाह करेंगे?

बखारी - हां इस पर मैं घरवालों से चर्चा करुंगा अगर उसके योग्य कोई लड़का मिलेगा तो विवाह भी जरुर करेंगे।

भुजबल- सुन्दरी जैसी योग्य लड़की के लिए रिश्ते की कमीं नहीं है, मैं भी अपने बेटे दयाल का विवाह करना चाहता हूं। लेकिन मैंने इस संबंध में कभी प्रयास नहीं किया। आज जब हमने आपकी बेटी को देखा तो अचानक मेरे सांथी के कहने पर विचार आया की क्यों न अपने बेटे के विवाह के संबंध में आपसे बात कर लूं। वैसे आपके गांव आने तक यह बात हमने सोंचा ही नहीं था।

बखारी- ऐसा कौन होगा जो आपसे रिस्ता नहीं रखना चाहेगा। मुझे भी खुशी होगा कि मेरी बेटी आपकी बहू बने, मैं भी चाहता हूं कि यह रिश्ता बन जाये। मैंने आपके पुत्र को भी देखा हैं लेकिन आखरी निर्णय तो मेरी बेटी को ही करना है। अगर उसने हां कह दिया तो हमें अपनी मित्रता को रिश्तेदारी में बदलने पर बहुत खुशी होगी। मैं एक बार अपने परिवार के सदस्यों से चर्चा कर लूं, मैं आ रहा हूं।

कहते हुए बखारी वहां से चला गया

बखारी अपनी पत्नी बेटों और सुन्दरी तथा अन्य से इस संबंध में चर्चा करता है सुन्दरी ने अपने विवाह की बात पर कुछ नहीं कहा लेकिन विरोध भी नहीं किया उसकी मां ने उसे समझाया की विवाह तो एक न एक दिन करना ही है। सुन्दरी को छोड़कर सभी ने उपयुक्त लड़का होने पर विवाह करने में अपनी सहमति व्यक्त किया। बखारी वापस मेहमान कक्ष में आता है और भुजबल से कहता हैं कि आप एक दिन अपने बेटे को भी यहां ले आये जिससे हमारे घर के लोग भी उसे देख सकें। मैं तो देख चुका हूँ मेरी बेटी भी उसे देख समझ ले क्योंकि आखरी फैसला तो उन्हीं लोगों को करना है।

भुजबल-आप ठीक कह रहे हैं मैं अगले हफ्ते आज के ही दिन उसे लेकर आऊंगा।

बखारी- जब आयेंगे तो अपने परिवार के और सदस्यों रिश्तेदारों और मित्रों को भी लेकर आइयेगा।

भुजबल-आपका निमंत्रण मुझे स्वीकार हैं, मैं अपने कुछ खास लोगों को लेकर आऊंगा।

आपस में बात चलता रहा

भुजबल- भंडारी जी अब हमें अनुमति दीजिए हम घर जाना चाहते हैं।

बखारी - महंत जी आप पहली बार हमारे घर आये है वापस जाने के लिए इतना जल्दबाजी मत कीजिए।

भुजबल-कई दिन हो गया है हम घर नहीं गये हैं।

बखारी- आज हमारे नाम से रुक जाइये, सामाजिक कार्यो के वजह से हम अपने व्यक्तिगत और पारिवारिक आवश्यकताओं के लिए समय नहीं निकाल पाते। आज का दिन पारिवारिक काम के लिए हैं, समझ लीजिये। आपके आने से हमें बहुत खुशी हुआ है। हमारे परिवार के सभी लोग चाहते हैं कि आज आप हमारे घर में रुके। सुबह नवलपुर के लिए प्रस्थान करियेगा। हम आपको नहीं रोकेंगे।

भुजबल - भंडारी जी आप इतना आग्रह कर रहे हैं तो उसे टाल भी नहीं सकते। ठीक है आज हम रुक जाते हैं लेकिन सुबह होते ही हम यहां से निकल जायेंगे।

बखारी- महंत जी आप जैसा उचित समझेंगे हम तो चाहेंगे की सुबह का भोजन करने के बाद ही प्रस्थान करे। अगर आप चाहे तो कुछ समय के लिए हमारे घर के सामने मैदान में चलते हैं हमारा समय भी कट जायेगा। मेरे गांव के लोगों को आपसे मिलकर खुशी होगा और उनका उत्साह बढ़ेगा।

भुजबल - ठीक है चलिये।

........सभी घर से बाहर निकलते हैं बखारी के घर के सामने मैदान में गांव वाले एकत्रित थे कई स्थानों में मशाल जल रहे थे। जिससे रोशनी हो रही थी। मांदर ढोल आदि वाद्य यंत्रों की ध्वनि गूंज रही थी। लोग नृत्य कर रहे थे। बखारी के साथ भुजबल और उसके दोनों साथी भी वहां पहुंचते हैं। बखारी इशारे से नाच गान बंद करने को कहता हैं। धीरे-धीरे नाच गान बंद हो जाता हैं और प्रश्नवाचक नजरों से सभी बखारी को देखते हैं। बखारी कुछ क्षण रुक कर तेज आवाज में कहता है -

साथियों कुछ समय के लिए आप लोगों को रोकना पड़ा है। मैं एक ऐसे आदमी से आप लोगों का परिचय कराना चाहता हूं जो हम सतनामियों के मुखिया हैं। क्या आप लोग उनसे मिलना चाहेंगे।

इस पर सभी ने कहा- हव-हव (हां-हां)

बखारी ने भुजबल को अपने निकट बुलाया और कहा- ये है सतनामियों के मुखिया साहेब भुजबल महंत ऐसा कहते हुए बखारी ने भुजबल की ओर इशारा किया। भुजबल ने अपना मुट्ठी बांधे दाया हाथ ऊपर उठाया। सामने गांव वालों में से एक ने जोर से कहा-साहेब भुजबल महंत ल जय सतनाम! उसके जवाब मे सभी लोगों ने कहा-जय सतनाम। जय सतनाम! उसके बाद सभी शांत हो गये।

बखारी आगे कहता है - हमारे गांव के कुछ लोग इनके बारे में नहीं जानते उनकों मैं यह बात बता देना चाहता हूं कि ये हम सतनामियों के मुखिया हैं। ये राजमहंत भी हैं और इनका निवास गांव है नवलपुर, ये बेमेतरा के पास हैं। अभी ये सामाजिक दौर पर हैं और आज ये मेरे घर और पूरे गांव के मेहमान भी हैं।

भुजबल के साथियों ने भी सभी लोगों का अभिवादन किया जिसका जवाब गांव वालों ने सामूहिक रुप से दिया। बखारी ने भुजबल से गांव वालों को अपना संदेश देने का आग्रह किया।

भुजबल ने कहना शुरु किया - साथियों आप लोगों से मिलकर बहुत खुशी हुआ है। मुझे यह देखकर काफी अच्छा लगा कि यहां के लोग भी दुश्मनों से सुरक्षा के लिए अपने सुरक्षा व्यवस्था को मजबुत बनाये हुए हैं। साथ ही हमारे संस्कृति को भी बचा के रखा हुआ है। इस प्रकार मानसिक और शारीरिक रूप से यहां के लोग तैयार व शक्ति संपन्न हैं। कुछ ऐसे स्थान जहां हमारे लोगों की संख्या कम हैं वहां सतनामियों का प्रभाव कम हुआ हैं। ऐसे स्थानों के लोगों की सुरक्षा करना चिरहुला जैसे गांव के लोगों का जिम्मेदारी हैं, अगर आप लोगों के सामने ऐसा परिस्थिति बने तब क्या आप लोग यह काम करेंगे?

सभी ने जवाब दिया - करबो-करबो (करेंगे-करेंगे)

बखारी - अब आप लोग गीत संगीत और नृत्य का आनंद लीजिए।

धीरे-धीरे गांव वाले मैदान में फैल गये जो भुजबल और उसके साथियों को देखने-सुनने के लिए उस टीले के करीब आ गये थे। जिसमें बखारी, भुजबल और उसके साथी खड़े थे।

मांदर ढोल आदि वाद्‌य यंत्रों का आवाज फिर से गूंजने लगा एक आदमी तेज आवाज में गाने का शुरुआत करता है।

शेर-शेर कइथे संगी, शेर कहां ले आये हो?

बखारी के शेर ढिलागे, घेरी-बेरी गुर्राय हो।

(शेर-शेर कहते है सांथी, शेर कहां से आया है? बखारी का शेर निकला है, बार-बार दहाड़ रहा है।)

इसके बाद लोगों का नाच-गान शुरु हो जाता है। जिसमें स्त्री-पुरुष दोनों शामिल थे। यह विशेष प्रकार का नृत्य था जिसमें कर्मा, राऊत, पंथी व युद्ध नृत्य का सम्मिश्रण था। मांदर के साथ -साथ बीच-बीच में ढोल आदि का भी उपयोग किया जाता था। वे कभी आपस में छद्‌म युद्ध करते हुए लड़ते तो कभी कमर में हांथ डालकर कर्मा की तरह नाचते कभी पंथी की तरह का नाच करते कभी-कभी पुरुष और स्त्रियां अलग-अलग समूह में नृत्य करते तो कभी साथ होकर इसी मिश्रित नाच-गान को ये पंथी कहते थे।

पूरे गांव के लोग इसमें सम्मिलित थे। कुछ ऐसे लोग भी थे जो इस उत्सव में शामिल नहीं थे जैसे जो काफी वृद्ध हो चुके थे या जिसको कोई आवश्यक कार्यवश गांव से बाहर जाना पड़ा था।

यह उत्सव अपने पूरे गति में था बखारी भुजबल से कहता है। महंत जी चलिए ,घर खाना खाकर विश्राम करेंगे या यहां दोबारा भी आ सकते हैं ये अभी कुछ समय तक और चलेगा लगभग आधी रात को यह कार्यक्रम खत्म होगा।

भुजबल- ठीक है चलते हैं सुबह जल्दी तैयार होकर नवलपुर के लिए चलना होगा।

..........चारों घर आ जाते हैं हाथ-मुंह धोने के बाद खाना खाते हैं खाना-खाने के बाद बखारी कहता है- क्या वहां फिर चलेंगे?

इस पर भुजबल ने कहा-नहीं अब हम विश्राम करेंगे। बखारी उन्हें उनके कक्ष तक छोड़कर आता हैं जहां तीनों के लिए अलग-अलग बिस्तर लगा हुआ था। एक कोने में पानी का बर्तन था, दीपक जल रहा था।

बखारी भुजबल से-आप लोग आराम कीजिए मैं जाता हूं। इतना कहकर बखारी उस कक्ष से निकल जाता है, भुजबल और उसके साथी बात करते-करते सो गये।

सुबह होते ही भुजबल और उनके दोनों साथी जाने के लिए तैयार हो गये, बखारी ने रोकने का प्रयास किया लेकिन भुजबल ने कहा-भोजन के समय तक नवलपुर पहुंच जायेंगे।

दया ने उनके लिए तश्तरी में रखकर दूध लाया भुजबल और उनके दोनों साथियों को दिया, उन्होंने दूध पी लिया। अस्तबल में जाकर अपने-अपने घोड़ों को निकाला बखारी ने मुख्य दरवाजा को खुलवाया, तीनों घोड़ों पर सवार हो गये।

भुजबल- अब हम विदा चाहते हैं। आप लोगों ने हमारा बहुत ख्याल रखा।

बखारी- आप सभी अपने घरवालों और गांव के लोगों को हमारे तरफ से सतनामी कह देना। साहेब सतनाम! भुजबल- हां ठीक है। साहेब सतनाम ! कहते हुए अपने घोड़े को आगे बढ़ा दिया उसके दोनों साथियों ने भी अपने घोड़ों को आगे बढ़ाया, बखारी वापस अन्दर आता है, मुख्य दरवाजा बंद कर दिया जाता है। बखारी अपने कक्ष में पहुंचता है, वह और उसकी पत्नी आपस में बात करते हैं। भुजबल महंत और उसके दोनों साथी अपने घोड़ों को तेज दौड़ाते हुए नवलपुर के लिए प्रस्थान करते हैं।

........नवलपुर में भुजबल अपने परिवार के लोगों को बखारी की बेटी सुन्दरी के बारे में बताता है और कहता है कि सुन्दरी और दयाल ने अगर एक-दूसरे को जीवन साथी के रूप में पसंद कर लिया तो सुन्दरी हमारी बहु बनेगी। परिवार के लोग काफी खुश हुए कि अब हमारे घर बहु आयेगी।

भुजबल ने चिरहुला जाने के लिए अपने सभी प्रमुख रिश्तेदारों, मित्रों, सहयोगियों और गांव के प्रमुख लोगों को निमंत्रण भेजा। नियत दिन के पूर्व सभी दूसरे गांव के संबंधी नवलपुर भुजबल के घर पहुंच गये थे। दूसरे दिन सभी एक साथ ही चिरहुला के लिए रवाना हो गये। सभी लोगों को लेकर भुजबल चिरहुला बखारी के घर आ गया।

यहां चिरहुला में बखारी ने भी अपने रिश्तेदारों, मित्रों, सहयोगियों और गांव के सभी लोगों को आमंत्रित किया था। सुन्दरी और दयाल ने एक दूसरे को पसंद कर लिया। बखारी के घर परिवार के लोगों ने सुन्दरी के स्वीकृति के बाद अपना भी स्वीकृत्ति प्रदान कर दिया। बखारी ने सभी के सामने स्वीकार किया कि हम अपनी बेटी सुन्दरी का विवाह भुजबल महंत के बेटे दयाल से करने के लिए तैयार है। बखारी के घर आये हुए सभी लोगों का स्वागत सत्कार व भोजन की व्यवस्था किया गया। सभी मेहमान रात रुके और दूसरे दिन नवलपुर जाने को तैयार हो गये बखारी ने सभी को कुछ दिन और रुकने को कहा।

भुजबल ने कहा- भंडारी जी सभी के अपने अपने काम है। इसलिए और न रोके बखारी के घर दूसरे दिन भी भोजन का व्यवस्था किया गया कई तरह के व्यंजन बनाये गये थे। बखारी ने भुजबल और उनके साथ आये हुए लोगों को रोकने का प्रयास किया लेकिन वे नहीं रुके। सभी को विदा करते समय बखारी ने भुजबल से कहा- हम इस विवाह के लिए तैयार है। एक दिन आप इस विवाह के दिन तिथि निश्चित करने के लिए हमारे घर आ जायें जिससे हम अपने लोगों की इस विवाह का निमंत्रण दे सके और दूसरी तरह की तैयारी भी कर सकें।

भुजबल ने कहा- ऐसा ही होगा। मैं कुछ दिनों के बाद समय निकालकर आऊंगा।

इसके बाद भुजबल महंत और उसके साथ आये हुए सभी लोग चिरहुला से नवलपुर के लिए प्रस्थान कर गये।

..........कुछ दिन ऐसे ही निकल गये भुजबल के मन में विचार आया कि अब विवाह का दिन तिथि निश्चित कर लिया जाये। इसके लिए बखारी के घर चिरहुला जाना है। आगे सोचता है कि अकेले ही चला जाऊं कि रिश्तेदारों और मित्रों के भी ले चलुं फिर स्वयं ही अपने आप से कहते हैं कि विवाह की बात करने के लिए तो अपने रिश्तेदारों सहयोगियों, मित्रों और पहचान के लोगों को ले गया था। विवाह के पहले बार-बार अधिक संख्या में लोगों को लेकर जाना अच्छा नहीं होगा। सभी अपने कार्यो में व्यस्त होंगे। ऐसा सोंच कर वह अपने एक मित्र और एक सहयोगी को लेकर कुल तीन लोग तीन घोड़ों में सवार होकर चिरहुला के लिए निकल पड़ते हैं। उनका घोड़ा सरपट दौड़ रहा हैं चिरहुला पहुंचने से पहले पुरान गांव में भुजबल का साथी कहता है कि-भुजबल क्यों न हम यहां कुछ समय विश्राम कर लें? भुजबल कहता है- मित्र अब तो टेसुआ नदी पार करते ही चिरहुला पहुंच जायेंगे।

उसका साथी कहता है- मैं कुछ समय के लिए रुकना चाहता हूं।

भुजबल न चाहते हुए भी-ठीक है जैसी आपकी इच्छा कहते हुए अपने घोड़े की रफ्तार कम कर देता है। एक तालाब के पास तीनों रुकते हैं। इसके आगे रास्ते में टेसुआ नदी है। उस नदी के पार चिरहुला गांव है। ये नदी ही दोनों गांवों की सीमा को अलग करती है। तीनों घोड़े से उतर कर तालाब में जाते है। और अपने मुंह में पानी की छींटे मारते है। हाथ, पैर धोने के बाद वे घोड़ों को भी पानी पिलाते है। उसके बाद तालाब के पार में एक पेंड़ के नीचे रुकते हैं। इतने में पुरान गांव के कुछ लोग उनके निकट आते हैं निकट आकर उनमें से एक जो उसका मुखिया लग रहा था ने भुजबल महंत और उनके साथियों से कहता है-पांव लागू साहेब।

भुजबल महंत ने उसके अभिवादन के उत्तर में कहा-साहेब सतनाम !

मुखिया सा दिखने वाला आदमी को ऐसे उत्तर का शायद आशा नहीं था वह कुछ समय तक कर्तव्य विमूढ़ हो जाता है। कुछ क्षण बाद सम्हलते हुए कहता है तुम लोग कौन हो? कहां से आये हो?

भुजबल ने कहा- हम आदमी हैं और अपने गांव से आये है। पुरान के मुखिया सा लगने वाला आदमी ने कहा- मैं तुम्हारा नाम पूछ रहा हू तुम्हारा नाम क्या है? और किस गांव के रहने वाले हो?

भुजबल ने जवाब दिया- तुम किस अधिकार से पूछ रहे हो क्या तुमको बताना जरुरी है कि हमारा नाम क्या है? और हम कहां के रहने वाले हैं?

उस आदमी ने आगे कहा- तुम लोगों के वस्त्र पैरों में जूते सिर में पगड़ी, हथियार और घोड़े को देखकर मुझे भ्रम हो गया था। इसलिए हमने तुमको और तुम्हारे सांथ के लोगों को प्रणाम किया। जल्दी बताओ तुम लोग कौन हो?

भुजबल महंत - हमारा परिचय पूछने से पहले अपना परिचय दो क्योंकि हम भी चाहते हैं और हम भी जाने की हम जिसे अपना नाम पता बताने वाले हैं वह कौन है?

वह आदमी कहता है- हम यहां के ठाकुर हैं, नाम है ठाकुर अमोली सिंह और ये सब हमारे सेवक हैं।

भुजबल ने कहा- हम सतनामी हैं, नाम है भुजबल सतनामी ये मेरा मित्र है और ये मेरा सहायक, हमारा गांव नवलपुर हैं, ढारा-नवलपुर बेमेतरा के पास।

भुजबल के सहायक ने कहा- और ये सतनामियों के मुखिया हैं।

भुजबल का मित्र -ये राज महंत भी है।

अमोली सिंह ने कहा- हूं! तुम लोगों के पहनावें घोड़े और हाव-भाव को देखकर हमने तुम लोगों को प्रणाम किया है। इसका तुम लोगों को दण्ड दिया जायेगा।

भुजबल-तुम खुद मान रहे हो कि तुमने धोखे से हमें प्रणाम किया गलती तुम्हारा है। जब तुमने गलती किया है तो दण्ड भी तुम्हें मिलना चाहिए। हमें क्यों? दण्ड देने का अधिकार तुम्हें नहीं है। हमने कोई गलती नहीं किया है। हमने नहीं कहा था कि तुम हमें प्रणाम करो। न तो हम किसी को प्रणाम करते और नहीं किसी को कहते की हमें प्रणाम करो। लगता है तुम यहां के लिए नये हो। किसी को अच्छे वस्त्र, पगड़ी, पनही, हथियार के साथ घुड़सवारी करते हुए पहली बार देखे हो क्या?

ठाकुर के पास खड़ा एक आदमी बोला-तुम लोग हमारे ठाकुर साहब को नहीं जानते इनका आदेश तुम लोगों को मानना पड़ेगा।

ठाकुर बोला- तुम लोगों को सिर्फ एक शर्त पर छोड़ सकता हूं। इसके बाद ठाकुर चुप हो गया उसे आशा थी कि लोग पूछेंगे की वे कैसे छूट सकते हैं, जब किसी ने कुछ नहीं कहा तो उसने आगे कहा-वो शर्त है कि तुम तीनों अपने घोड़ों को यही छोड़ दो। पगड़ी उतार दो, ऊपर के कपड़े भी उतार दो। धोती को घुटने से ऊपर पहनों और हथियार फेंक कर अपने-अपने जुतों को सिर पर रखकर हमसे मांफी मांगो की आज के बाद ये गलती कभी नहीं करोगे।

भुजबल महंत ने कहा- तुमने अपनी बात कह ली अब हमारा भी सुनलो ऐसा अपमानजनक काम हम करेंगे नहीं हमारा सर सिर्फ और सिर्फ पवित्र जैतखाम के सामने ही झुकता है। हमे तुमने जो व्यर्थ का शर्त बताया है इस तरह का हरकत अगर तुम्हें अच्छा लगता है,और जैसा कि तुमने स्वीकार भी किया है कि तुमसे धोखा हुआ है, मेरा सुझाव है कि इसके पश्चाताप के लिए तुम अपना हथियार फेंक दो, कमर से ऊपर का वस्त्र उतार दो, धोती लंगोट की तरह पहनों और जूता उतार कर अपने सिर पर रख लो और जहां तुम्हारा मन लगे आओ-जाओ। तुम चाहो तो पुरान गांव में ही घुम लो हम तुम्हें नहीं रोकेंगे। ठाकुर इतना सुनकर दांत पीसने लगा वह अपना हथियार संभाल कर आगे बढ़ने को हुआ कि उसके साथ का ही एक आदमी ने उससे धीरे से कहा- ठाकुर साहेब ऐसा मत कीजिए अगर इनको कुछ भी हुआ तो हमारे ऊपर घोर संकट आ सकता है। यह सतनामियों का मुखिया है इसके लोग हमें नहीं छोड़ेगे।

ठाकुर उस आदमी को घुर कर देखने लगा लेकिन कहा कुछ नहीं। शायद भुजबल महंत के द्वारा दिये गये उत्तर से वह भी समझ चुका था कि उन्हें किसी भी प्रकार का नुकसान पहुंचाने की कोशिश उसे बर्बाद कर सकती है। ठाकुर ने उस आदमी के गाल पर तक जोरदार थप्पड़ रसीद कर दिया। जिसने उसे भुजबल से नहीं उलझने का सुझाव दिया था।

भुजबल- अभी तो तुम सिर्फ कुछ आदमी को देखे हो जब हमारे जैसे लोगों का पूरा बारात ही यहां से गुजरेगा तब तुम्हारा क्या हालत होगा।

ठाकुर बोला -तुम मांफी मांगो।

भुजबल- मांफी तुम मांगों, क्योंकि तुमने हमें रोक-टोक करने का कोशिश किया हैं हमसे नहीं तो तुम स्वयं अपने आप से मांग लो हम तुम्हारे इच्छा से नहीं चलेंगे और हम पगड़ी पहने, हथियार रखें, बिना जूता उतारे, तुम्हारे और तुम्हारे लोगों के सामने घोड़े में सवार होकर जा रहे हैं तुम्हें जो करना है कर लेना। मैं तुम्हें चुनौती देता हूं कि इस बार पूरे बारात के साथ तुम्हारे गांव से ही गुजरुंगा और वापसी भी तुम्हारे गांव से होकर करुंगा। तब रोक कर देख लेना मैं भी देखूंगा कि तुम और तुम्हारे लोग कितने हिम्मत और लड़ने वाले हो।

ऐसा कहते हुए भुजबल महंत और उनके दोनों साथी घोड़े पर सवार हो गये और धीरे-धीरे चुनौती देने के अंदाज में आगे बढ़ने लगे। कुछ ही दूर आगे बढ़े थे कि एक आदमी तेज गति से उनके निकट आया और कहने लगा- तुम लोगों को हमारे ठाकुर साहब बुला रहे है। भुजबल ने कहा- हम नहीं जायेंगे।

इतना सुनने के बाद भी वह आदमी बार-बार कह रहा था की ठाकुर साहब बुला रहे हैं तुम लोगों को उसके पास जाना ही होगा।

भुजबल के सहायक को उसका हरकत अच्छा नहीं लगा उसने अपना धैर्य खो दिया उस आदमी से कहा-भैया जी इध र आइये।

वह आदमी भुजबल के सहायक के पास गया। सहायक ने अपना घोड़ा रोका और घोड़े से उतरा। जमीन में उतरकर उसने अपने एक पांव का जूता निकाल लिया उसे हाथ में पकड़ा ठाकुर के आदमी के सामने गया और चार-पांच बार जूते से ही उसके गाल को मारा। वो आदमी बुरी तरह हड़बड़ा गया वह भागने को हुआ तो उसके पीठ पर भी कई बार जूता पड़ा। मार खाने वाला आदमी जोर-जोर से बचाओ-बचाओ चिखता-चिल्लाता हुआ गिरते-पड़ते वहां से उधर भागा, जहां दूर पर ठाकुर और उसके आदमी खड़े हुए थे। भुजबल और उसका मित्र अपने सहयोगी की ओर देखकर मुस्कराने लगे एक नजर उधर देखा जिधर ठाकुर खड़ा था। उसके बाद तीनों चिरहुला की ओर आगे बढ़ने लगे।

.........भुजबल और उसके साथी चिरहुला में बखारी भंडारी के घर पहुंच जाते हैं बखारी घर में ही मिल जाता है उनको देखकर बखारी परिवार के सभी सदस्य खुश हो जाते हैं। बखारी और भुजबल तथा उसके साथी मेहमान कक्ष में एक साथ ही बैठते हैं। औपचारिक चर्चा के बाद भुजबल महंत बखारी भंडारी को पुरान गांव में हुई घटना के बारे में विस्तार से बताता है। सुनकर बखारी गंभीर हो जाते है। भुजबल ने बखारी से कहा- क्या बात है आप चुप क्यों हैं?

बखारी- सोच रहा हूं कि इसके बारे में मेरे मन में जो शंका है, वह सही साबित हो रहा है।

भुजबल-कैसा शंका?

बखारी -पुरान गांव में कुछ अच्छा नहीं चल रहा है, वहां बाहर से कुछ लोग आये थे। उन्होंने बाद में अपने बहुत से और आदमियों को बुला लिया हैं उनके कारनामें काफी संदिग्ध है।

भुजबल -कैसा कारनामा?

बखारी- कुछ बाहरी लोग वहां पर आये थे जिन्होंने वहां के जमीनों पर धीरे-धीरे कब्जा करना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे उन लोगों ने अपना पांव जमा लिया, समय समय पर कई बाहरी लोग आते रहे हैं और वहीं रुक जाते हैं उस गांव के लोगों की जमीनों को वे लोग एक-एक कर हड़प रहे है। विरोध करने वालों को डराया धमकाया जाता है। ऐसा भी समाचार मिला है कि उन लोगों ने कुछ आदमियों की हत्या भी किया है। हत्या की इस बात को प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

भुजबल- क्या आप लोगों ने उनके खिलाफ कोई कार्यवाही किया हैं?

बखारी - नहीं?

भुजबल- क्यों नहीं किया गया है?

बखारी- महंत जी हम उनके खिलाफ कैसे कोई कार्यवाही करें कोई आधार नहीं मिलता। गांव वालों से हमने संपर्क किया था लेकिन वे ऐसे किसी भी घटना से इंकार करते हैं किसी ने भी हमसे या हमारे किसी भी आदमी के सामने स्वीकार नहीं किया कि पुरान गांव में किसी भी तरह का कोई असंगत घटनाक्रम चल रहा हैं या हुआ है। किसी का इज्जत संपत्ति को लुटा गया है या किसी से मारपीट या हत्या किया गया है।

भुजबल- तो आप को वहां की गतिविधियां संदिग्ध क्यों लगी थी?

बखारी- मुझे तो इसी बात से शंका हुआ कि वहां बाहरी लोगों का आना-जाना बढ़ गया। ऐसे लोग वहां जमीनों के मालिक हो चुके है। जिसके पूर्वज यहां कि नहीं है। उनका व्यवहार भी यहां के स्थानीय लोगों की तरह मधुर नहीं हैं जो कुछ भी समाचार वहां से मिला है। वो काफी छन-छनकर आ रहा है, जिसे साबित करने के लिए कोई गवाह नहीं है लेकिन अब हमें उनके खिलाफ कार्यवाही करने का आधार मिल गया हैं हम आज ही पुरान में आक्रमण कर उसे सबक सिखा देंगे और उसके अन्याय-अत्याचार को भी खत्म कर देंगे।

भुजबल- भंडारी जी ऐसा अभी मत करना।

बखारी- आप मना क्यों कर रहे हैं? क्या वहां आप लोगों को नहीं रोका गया? आप सतनामियों के मुखिया और राजमहंत हैं आपके साथ उन लोगों ने गलत व्यवहार किया है। ऐसा तो पहले किसी के साथ नहीं किया गया था। अगर इसका पर्याप्त मुहतोड़ उत्तर नहीं दिया गया तो आपकी और आपके साथ ही पूरे समुदाय की बेइज्जती होगी। हम उसे सबक सिखायेंगे और इसका सजा भी देंगे जिससे दोबारा किसी आदमी के मन में असमानता का भाव पैदा न हो।

भुजबल- इसीलिए तो हम चाहते हैं कि आप आवेश में कोई निर्णय न लें ठण्डे दिमाग से सोंचे, क्योंकि हमने भी कह दिया है कि इस बार बारात आयेगा जिसमें सैकड़ों घुडसवार और सभी बरातियों के पैर में जूता , सिर पर पगड़ी और हांथों में हथियार होगा। अपने ताकत भर रोकने की कोशिश कर लेना।

बखारी- महंतजी आप ठीक ही कह रहे हैं क्योंकि हमें विवाह की तैयारी भी करनी है और इसे मजा भी चखाना है। क्योंकि जिस तरह से उसने ऐसा दुःसाहस किया है, वह सिर्फ अपने दम पर ऐसा नहीं कर सकता। जरुर कोई बड़ा षड़यंत्र होगा। उसे कहीं न कहीं से समर्थन मिल रहा है। तभी तो वह आप लोगों के साथ ऐसा व्यवहार करने की सोंच पाया। हमें इस पर गंभीरता से विचार-विमर्श करना है।

बखारी अपने बड़े पुत्र दया को बुलाता है और उसे कहता है कि- छड़ीदार को मेरा संदेश कह देना कि पूरे गांव का बहुत जरूरी और गुप्त बैठक बुलाना है, सभी को जल्दी से जल्दी हमारे घर में बुला लाये।

हां पिताजी कहता हुआ दया बाहर निकल गया उसने छड़ीदार के घर जाकर अपने पिता के कहे हुए बात को दोहरा दिया। छड़ीदार ने तुरंत पूरे गांव के लोगों को संदेश दे दिया की बिना देर किये सभी बखारी भंडारी के घर पहुंचे आधा घण्टा के अंदर ही गांव के सभी घर से एकएक पुरुष सदस्य बखारी के घर पहुंच गये। बखारी ने विस्तार से पूरे घटनाक्रम के बारे में सभी को बताया इस घटना को सुनकर चिरहुला के लोग आक्रोशित हो गये और तुरंत पुरान में हमला कर ठाकुर और उसके सभी आदमियों की सजा देने की बात करने लगे।

बखारी उनको समझाते हुए कहता है- मुझे मालूम है कि जब भी वक्त आयेगा आप सभी सामने आकर लड़ने के लिए तैयार है लेकिन हमें सिर्फ ताकत ही नहीं बुद्धि से भी काम लेना होगा। आप सभी जानते है। कि मेरी बेटी का विवाह होने वाला है, बारात भी उसी रास्ते से आयेगा और वापसी भी उसी रास्ते से करेगा। अमोली की चुनौती दिया जा चुका है, ये बात आप अपने घर के सभी सदस्यों को बता देना यह भी बता देना कि कभी भी लड़ाई शुरु हो सकता है, खासकर विवाह के दिनों में।

सभी गांव वालों ने कहा- हम आपका साथ देने के लिए तैयार है सुन्दरी हमारे गांव की बेटी है। और भुजबल हमारे मुखिया है हम अपनी बेटी, अपना और अपने मुखिया का अपमान बर्दाश्त नहीं करेंगे। भंडारी जी निर्णय हम आप पर छोड़ते हैं आप जो कहेंगे हम वैसे ही करेंगे।

बखारी- तो ठीक है इस संबंध में रणनीति बनाने के लिए कुछ लोग रुक जायें बांकी लोग जा सकते हैं आठ आदमी चले गये अब यहां भुजबल, बखारी, छड़ीदार और गांव के आठ लोग कुल ग्यारह लोगों के अलावा भुजबल के साथी भी वहां रुके हुए थे। बखारी उन सभी को लेकर एक कक्ष में आता है और वहां सभी बैठकर धीरे-धीरे बातें करते हैं काफी देर तक बात करने के बाद बखारी सभी से कहता है- समझ गये? सभी ने जवाब दिया-हां हम सब समझ गये। भुजबल और बखारी विवाह के दिन तिथि पर चर्चा करते हैं भुजबल आप किस दिन के लिए सोच रहे हैं?

बखारी- आप जब भी कहें हम तैयार है?

भुजबल-तो आज से अठ्ठाईस दिन बाद उन्नतीसवें दिन हम बारात लेकर आयेंगे, आप का क्या कहना है?

बखारी -ठीक हैं।

भुजबल-अब मैं चलता हूं।

बखारी भुजबल को कहता है-आप लोग कुछ खा-पी लीजिए फिर जाइयेगा।

भुजबल- ठीक है जैसा आप उचित समझें।

भुजबल और उसके दोनों साथी को रोटी सब्जी और दूध दिया जाता है वे भोजन कर जाने की तैयारी करते हैं बखारी छड़ीदार को कुछ आवश्यक निर्देश देता है। जिसे सुनकर वह सहमति से सिर हिलाता है। फिर तेजी से मुख्य दरवाजे से बाहर निकल जाता है। भुजबल और उसके साथी घोड़े पर सवार हो जाते है। बखारी उनसे कहता है-रास्ते में सतर्क रहना वैसे मैं कुछ दूर तक आप लोगों के सहायता के लिए आदमी भेज रहा हूं।

भुजबल - उसकी आवश्यकता नहीं है।

बखारी- मेरा विशेष आग्रह और फर्ज है इसे पूरा करने दीजिए।

भुजबल ने दोबारा इंकार नहीं दिया। भुजबल ने अपने घोड़े को आगे बढ़ाया उसके पीछे उसके दोनों साथियों ने भी अपने घोड़े को आगे किया। घोड़ा धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा फिर गति पकड़ने लगा, उनके आगे बढ़ते ही चार घुड़सवार उसके पीछे तेजी से लपके चार घुड़सवार के पीछे दो घुड़सवार और गये। भुजबल और उसके साथियों के घोड़े पहले थे उससे कुछ निश्चित फसले बनाकर चार घुड़सवार और उन चारों के कुछ पीछे दो घुड़सवार इस प्रकार नौ घुड़सवार तेजी से आगे बढ़ रहे थे। चिरहुला को पीछे छोड़ते हुए उन्होंने टेसुआ नदी को पार किया और पुरान गांव में पहुंच गये पुरान में किसी ने भी किसी प्रकार का कोई रोक-टोक या टीका टिप्पणी नहीं किया गया। चिरहुला के घुड़सवार पुरान के आगे गांव तक की सीमा में भुजबल और उसके साथियों को छोड़कर चिरहुला वापस आ गयें भुजबल महंत विवाह की तैयारी में जुट गया उसने अपने सभी रिश्तेदारों मित्रों तथा नवलपुर के सभी लोगों को विवाह का निमंत्रण दिया था साथ ही पुरान में हुई घटना के बारे में भी बताया था जिससे आने वाले पहले से ही सतर्क रहें। चिरहुला में बखारी भंडारी ने भी चिरहुला के सभी लोगों को निमंत्रण तुरंत ही दे दिया था। ऐसे रिश्तेदारों जो दूसरे गांव में रहते थे उनको निमंत्रण के लिए कुछ आदमियों को भेज दिया था।

.........पुरान गांव में हुए इस घटना के दूसरे दिन अमोली सिंह बुरी तरह से बौखलाया हुआ था कभी अपने हांथ को पिटता तो कभी अपने सिर को हाथों से ठोकता हुआ बार-बार फुफकार रहा था। उसके आस-पास बहुत से आदमी खड़े हुए थे ठाकुर कह रहा था- कौन है वो आदमी जो हमें चुनौती देकर चला गया और हम उसका कुछ नहीं बिगाड़ सके। हमारे आदमी को पीट भी दिया इतना हिम्मत अब अगर वो सामने आ गया तो उसे नहीं छोड़ुंगा।

सामने खड़ा आदमी बोला- ठाकुर साहेब इतना गुस्सा न कीजिए।

ठाकुर- कैसे न करुं कोई हमारे सामने पगड़ी जूता पहने हथियार रखे और शानदार कपड़े पहन कर घोड़ा की सवारी करे वो भी उस जाति का आदमी जो न तो ब्राम्हण है न क्षत्रिय है और न ही वैश्य और हम उसका कुछ नहीं बिगाड़ पाये हैं हमारे लिए बड़े दुख और लज्जा की बात है स्थानीय आदमी काफी नम्र स्वर में कहता है-लेकिन इसमें इनका क्या दोष है ठाकुर साहेब?

उसके बात को बीच में काटता हुआ ठाकुर ने कहा-दोष ये है कि वो शुद्र है और शुद्रों का हमारे धर्मशास्त्र के अनुसार कोई अधिकार नहीं हैं वह सिर्फ एक ही काम कर सकता हैं और वह है हमारा सेवा करना वो भी तब जब हम चाहें।

गांव वाला- लेकिन ठाकुर साहब यह तो तब होगा न जब पूरा समाज वैदिक आर्य, ब्राम्हण, धर्म के अनुसार होगा।

ठाकुर-लगता है तुम समझदार हो यही तो मैं कह रहा हूं कि हमारे धर्म के अनुसार इनको कोई भी अधिकार नहीं है। ये सम्पत्ति भी नहीं रख सकते ये लोग हवेली, महल की तरह का बड़े-बड़े घर बनाते हैं ये गलत है, ये लोग घोड़ा या दूसरे सवारी पर चढ़े यह गलत है, ये हमसे बराबरी का व्यवहार करें यह गलत है, हम उच्च होकर इनको प्रणाम करें यह गलत है। हमसे यह लोग सवाल जवाब करें। यह गलत है, यह सब करके उन लोगों ने बहुत बड़ा अपराध किया है। इतने बड़े अपराध का सजा तो इनको देना ही पड़ेगा।

गांव वाला- ठाकुर साहब क्या आप इन लोगों को घोड़े को सवारी करना, अच्छे कपड़े, जूता-पगड़ी पहनना, हथियार रखना, अच्छा घर और अच्छा भोजन करते पहली बार देखें हैं।

ठाकुर- हम द्वीज लोगों को ऐसा करते हुए देखना चाहते हैं शुद्रों को नहीं, अगर शुद्र ऐसा करता है तो उसे सजा देकर धर्म की रक्षा करना हम क्षत्रियों का धर्म है।

गांव वाला- आप वैदिक आर्य धर्म की रक्षा तो तब करेंगे जब कोई शुद्र ऐसा करें अगर शुद्र आपके बताये नियम को न तोड़े तब भी क्या वह सजा का भागीदार होगा?

ठाकुर- नहीं लेकिन तुम इतना प्रश्न क्यों कर रहे हो। कहीं तुम उनसे मिले तो नहीं हो? कही तुम हमसे गद्दारी तो नहीं कर रहे हो?

गांव वाला- नहीं साहेब मैं आपसे इस कारण पूछ रहा हूं कि मैं अपनी कुछ शंकाओं का समाधान करना चाहता था, साथ ही आपको यह बताना चाहता था कि आप जिन लोगों के ऊपर इतना क्रोधित हो रहे हैं वे शुद्र नहीं हैं।

ठाकुर चौंकते हुए- क्या कहते हो वे लोग शुद्र नहीं है।

गांव वाला- नहीं ये शुद्र नहीं हैं, किसी भी वेद-पुराण, देवी-देवता, भगवान पर इनको कोई विश्वास नहीं हैं ये सतनामी है ये सिर्फ सतनाम पर ही विश्वास करते हैं सिर्फ जैतखाम के सामने अपना सिर झुकाते हैं। ये किसी जमींदार-सामंत या अधिकारी से नहीं डरते, कोई भी इनके ऊपर अन्याय-अत्याचार नहीं कर सकता। धोखे से अगर कहीं पर इनके ऊपर कभी ऐसा हुआ भी है तो इनके पुरुष तो पुरुष इनकी स्त्रियां और बच्चे भी सामने लड़ने के लिए आ जाते है।

ठाकुर- हूं! इनके लिए विशेष योजना बनाना पड़ेगा। एक काम करो तुम पता लगाओ कि चिरहुला में किसके घर बारात आने वाली हैं

गांवा वाला- चिरहुला के बखारी भंडारी की बेटी का विवाह नवलपुर के भुजबल महंत के बेटे दयाल से होने वाला है।

ठाकुर- तुम्हें कैसे पता चला?

गांव वाला- साहेब इस बात को सिर्फ मैं ही नहीं कुछ को छोड़कर बाकी सभी जानते हैं। बखारी भंडारी ने विवाह का निमंत्रण के लिए कई गांवों में आदमी भेजे है। ऐसे ही यह विवाह आपसे हुए विवाद के कारण चर्चा में आ चुका है। गांव वाले इस विवाह से संबंधित सभी बातों में जिज्ञासा रखने लगे है।

ठाकुर- बारात कब आयेगा?

गांव वाला- आज से सत्ताईस दिन के बाद ठीक अट्ठाईसवें दिन नवलपुर से चिरहुला बारात आयेगा।

मन ही मन ठाकुर उस आदमी के जवाब देने से बहुत गुस्से में था। दण्ड के लिए बहाना खोज रहा था लेकिन कोई मौका नहीं मिल रहा था जिस आदमी का एक दिन पहले जूता से पिटाई हुआ था, वह भी ठाकुर के पास में खड़ा था। बीच-बीच में वह धीरे से ठाकुर को कुछ कहता था। ठाकुर आगे कहता है- एक काम करो तुम गांव भर में सबसे ज्यादा समझदार लग रहे हो।

मार खाने वाला आदमी -ठाकुर साहब यह गांव के प्रमुख आदमियों में से एक है गांव में इसके सलाह को यहां के लोग अच्छा समझते हैं और मानते है।

ठाकुर कुछ सोचता है फिर उसके चेहरे पर चमक आता है- तभी तो मैं सोंच रहा था कि यह आदमी इतना ज्ञान भरी बातें कैसे कर रहा है। (व्यंग्यात्मक स्वर में कहता है) तब तो तुम्हारी जिम्मेदारी और भी बढ़ जाता है।

एक दिन पहले बखारी भंडारी के सहयोगी ने जिसे जूता से पीटा था वही आदमी फिर बीच में कहता है- ये इस गांव के मुखिया का बेटा हैं अपने बाप के स्थान पर यही गांव में निर्णय करता है।

ठाकुर - ओह! मुझे पता ही नहीं था, ऐ....तुम इधर आओं

गांव वाला- ठाकुर के पास जाता है, ठाकुर उसके आंखों से आंखें डालकर कहता है- तुम इस गांव के मुखिया हो। अगर पुरान और चिरहुला दोनों गांव के बीच लड़ाई हो तो कैसा रहेगा?

गांव वाला- ठाकुर साहब यह कैसे कह रहे हैं, आज तक हमारे बीच कभी लड़ाई नहीं हुआ तो अब कैसे होगा?

ठाकुर- सवाल मैंने तुमसे किया है, मुझे इससे मतलब नहीं की आज तक पुरान और चिरहुला के बीच लड़ाई नहीं हुआ। अगर अब हुआ तो कैसा रहेगा?

गांव वाला चुप रहता है, उसे कुछ नहीं सूझ रहा था कि वह ठाकुर को क्या जवाब दें, फिर उसने मन ही मन कुछ फैसला करता है और हिम्मत करके कहता है- मैं नहीं चाहता की दोनों गांव के बीच कोई लड़ाई झगड़ा का नौबत आये।

ठाकुर- क्यों?

गांव वाला- अगर ऐसा कोई स्थिति पैदा होता है तो हम उनका मुकाबला नहीं कर सकते, क्योंकि वहां खड़ैत रहते हैं।

ठाकुर- ये खड़ैत कौन है?

गांव वाला- खड़ैत एक तरह के सैनिक होते हैं, वे बचपन से ही हथियार चलाने का प्रशिक्षण लेते हैं। जवान होने तक ये एक कुशल सैनिक बन जाते हैं लेकिन ये किसी राजा या जमीदार के आदेश को नहीं मानते थे। गांव के भंडारी छड़ीदार या क्षेत्र के महंत या उससे भी बड़े पद वाले राजमहंत का जब इन्हें आदेश मिलता है तो उनका सहयोग करते है।

ठाकुर- वाह! तुम गांव के असली मुखिया बनने के लायक हो मुखिया ऐसा ही होना चाहिए जो अपने गांव के लोगों के ऊपर आये संकट को दूर कर सके। अगर तुम चाहो तो पुरान और चिरहुला के बीच लड़ाई रुक सकता है। तुम खुद कह रहे हों कि तुम लोग चिरहुला वालों का मुकाबला नहीं कर सकते अगर लड़ाई हुआ तो तुम लोगों का बहुत नुकसान हो सकता है।

गांव वाला - वो कैसे?

ठाकुर- तुम्हीं ने बताया है कि चिरहुला के बखारी भंडारी की बेटी का विवाह नवलपुर के भुजबल महंत के बेटे के साथ होना निश्चित हुआ है, अगर ये विवाह नहीं होगा तो बारात आयेगा नहीं और अगर बारात नहीं आयेगा तो हम उसे रोकने की कोशिश नहीं करेंगे तो लड़ाई होगा नहीं।

गांव वाला - मैं कैसे कोशिश कर सकता हूं?

ठाकुर- तुम चिरहुला जाओ और बखारी से कहो की वह अपनी बेटी का विवाह नवलपुर वाले से मत करे और सिर्फ बखारी ही नहीं चिरहुला का कोई भी आदमी अपने बहन-बेटी को ऐसे गांव में न दें जिसका बारात पुरान से होकर आये-जाये।

गांव वाला - ठाकुर साहब मैं किसी को किस आधार पर अपनी बेटी के विवाह करने से रोक सकता हूं?

ठाकुर - तुम इस गांव को अगर संकट में नहीं डालना चाहते तो यह काम तुम्हें करना ही होगा यह हमारा आदेश है, अगर तुमने हमारा काम नहीं किया तो तुम्हारे और तुम्हारे परिवार के लिए ठीक नहीं होगा अच्छे से यह बात समझ लो। अब तुम हमारे संदेश वाहक बन गये, तुम जा सकते हो।

......संदेश वाहक कुछ भी नहीं कह पाया वो काफी संकट में फंस चुका था उसे मालूम था कि अगर वह ठाकुर का कहना नहीं मानेगा तो उसके और उसके परिवार वालों के ऊपर घोर विपत्ति आयेगा एक तरफ ठाकुर था तो दूसरे तरफ बखारी भंडारी उसे बखारी से डर नहीं लग रहा था वह जानता था कि बखारी उसके पिता का सम्मान करता हैं लेकिन वह कैसे कहे कि तुम अपनी बेटी का विवाह ऐसे लोगों से न करें जिनका बारात पुरान से होकर गुजरे। एक बार उसके मन में आया की क्यों न अपने पिता से ही इस संबंध में बात करें लेकिन यह बात उसे स्वयं ही पसंद नहीं आया कि अपने अस्वस्थ और लाचार पिता को इस समस्या के बारे में बताकर उसके परेशानी को बढ़ाये वह जानता था कि उसके और उसके परिवार के ऊपर एक बड़ा संकट मंडरा रहा है अगर वह चिरहुला नहीं गया तो ठाकुर का कहर तुरंत उसके ऊपर टूट पड़ेगा। फिर गांव में ठाकुर का इतना दहशत है कि कोई भी आदमी उसके सहायता के लिए नहीं आयेगा। बखारी भंडारी कितने भी गुस्से में क्यों न हो उसे नुकसान नहीं पहुंचायेगा। इसी सोंच ने उसका हिम्मत बढ़ाया। संदेश वाहक अपने घर गया उसकी पत्नी ने उसके लिए भोजन निकाला उसका खाने का इच्छा नहीं था। वह खाने के लिए बैठा, खाना गले के नीचे नहीं उतर रहा था, उसने अपनी पत्नी को देखा, उसकी पत्नी ने कहा- क्या बात है?

संदेश वाहक ने मुस्कुराने का असफल कोशिश किया-कुछ नहीं, खाना नहीं खाया जा रहा है। तबियत कुछ ठीक नहीं लग रहा हैं।

उसकी पत्नी ने कहा- अभी तो आप भले चंगे थे तुरंत ही क्या हो गया, ठाकुर के बुलावे से पहले तो तुम ठीक थे उसके पास से आते ही तुम्हें क्या हो गया? जरूर कोई बात है जो आप मुझसे छिपा रहे हैं। उसकी पत्नी उसके तरफ देखती हुई बोली।

संदेश वाहक उसके सामने झूठ नहीं बोल पाया और उसने ठाकुर और अपने बीच हुए सभी बातों को बता दिया। सुनकर उसकी पत्नी चिंतित हो गई उसे भी मालूम था की ठाकुर के आदेश को नहीं मानने पर क्या-क्या हो सकता है। उसे वो दिन आज भी अच्छे से मालूम था जब पांच साल पहले उसे ब्याह कर लाया गया था तब उसके उपर क्या बिता था। उसी समय से ही वह ठाकुर से नफरत करती थी अब उसे अपने इज्जत का नहीं बल्कि अपने पति के जान जाने का डर था परिवार के बाकी सदस्यों के सुरक्षा का भी ख्याल था। उसने स्वयं को चिंता मुक्त दिखाने का प्रयास करती अपने पति को दिलासा देती हुई बोली- चिंता मत कीजिए मैं कोई रास्ता निकालती हूं। जिससे ठाकुर का बात भी रह जाये और बखारी भंडारी भी हमें गलत न समझें।

काफी समय तक सोचती रही, फिर उसने अपने पति को समझाना शुरु कर दिया, संदेश वाहक ने बीच-बीच में कभी नहीं तो कभी हां-हां कह रहा था। फिर अंत में बोली- ठीक है तो मैं दूसरे रास्ते से जाऊंगी और आप दूसरे रास्ते से जिससे यह यह न लगे की हम कोई योजना बनाकर एक साथ जा रहे हैं।

संदेश वाहक की पत्नी जानती थी कि अगर बखारी भंडारी किसी बात से क्रोधित भी हुआ तो वह अपने पति के रक्षा के लिए ढाल बनकर खड़ी हो जायेगी कोई भी सतनामी खड़ैत किसी औरत पर वार नहीं करेगा। खास कर उस स्थिति में जब वह अपने पति के जान बचाने के लिए उसने सामने आ जाये। घर के और भी किसी सदस्य को बताये बिना संदेश वाहक की पत्नी खेत जाने का बहाना कर घर से निकल जाती है उसके जाने के बाद संदेश वाहक भी चिरहुला जाने की बात कहकर घर से निकल जाता है। अब संदेश वाहक अपने लिए नहीं अपनी पत्नी के बारे में सोच कर चिंतित था। उसे अकेले ही दूसरे रास्ते से चिरहुला जाना था।

.........संदेश वाहक ने अपना कदम तेज कर दिया चलते-चलते वह चिरहुला पहुंचकर बखारी के घर से पहले ही एक स्थान पर रुक गया और अपनी पत्नी का इंतजार करने लगा। कुछ समय के बाद उसकी पत्नी भी आ गई बखारी के घर के निकट पहुंच गये। दोनों एक-दूसरे को कुछ समय तक देखते रहे संदेश वाहक के आंखों में आंसू आ गया। उसे अपने आप में बहुत छोटापन महसूस हुआ। बहुत ही कातर भाव से अपनी पत्नी को देखा उसकी पत्नी ने उसका हाथ थाम कर दिलासा दिया और बोली-अब अंदर चलें।

हाँ कहता हुआ संदेश वाहक बखारी के घर के मुख्य दरवाजे के पास पहुंच गया, मुख्य दरवाजे से ही लगा हुआ एक छोटा दरवाजा था जिसे पैदल आने-जाने के लिए उपयोग किया जाता था। संदेश वाहक छोटे दरवाजा के पास गया दरवाजा आधा खुला था, उस खुले हुए स्थान से अंदर झांका तो सुन्दरी दिखाई दी। संदेश वाहक उसे पहचान गया, संदेश वाहक की पत्नी ने भी देखा उसके मुंह से स्वाभाविक रुप से निकल गया-कितनी सुन्दर है।

संदेश वाहक - यही सुन्दरी है।

पत्नी-जैसा नाम वैसा ही रुप।

संदेश वाहक और उसकी पत्नी अंदर न जाकर वहीं रुक गये, संदेश वाहक ने आवाज दिया- कोई हैं।

सामने से एक पुरुष आता दिखाई दिया, जब वह दरवाजे की सीध में आया तो संदेश वाहक ने पहचान लिया, वह मया था। मया ने भी संदेश वाहक को पहचान लिया उसने संदेश वाहक का स्वागत करते हुए कहा- साहेब सतनाम!

संदेश वाहक- साहेब सतनाम! जोहार!

अचानक मया का नजर संदेश वाहक के पीछे खड़ी उसकी पत्नी पर पड़ता है, मया संदेश वाहक से पूछता है-ये कौन है?

संदेश वाहक - तुम्हारी भाभी हैं।

संदेश वाहक की पत्नी मया का अभिवादन करते हुए कहती है-साहेब सतनाम! जोहार!

मया ने उसका जवाब दिया- साहेब सतनाम भाभी जी, आइये अंदर आइये, हमने तो कभी सपने में सोंचा भी नहीं था कि आप लोगों के कदम कभी हमारे घर में पड़ेंगे।

संदेश वाहक और उसकी पत्नी ने कोई जवाब नहीं दिया। मया उनको मेहमान कक्ष में लेकर गया। वहां दोनों को बैठाया कुछ दूर में उपस्थित सुन्दरी को आवाज देते हुए कहा- सुन्दरी मेहमानों के लिए पानी लाना।

सुन्दरी उनके लिए पानी लेकर आई वे पैदल चलते हुए आये थे प्यास से उनका बुरा हाल था, दोनों ने पानी पिया।

संदेश वाहक मया से कहता है- भंडारी साहेब कहां है?

मया- घर में ही है।

संदेश वाहक -हमें उनसे मिलना हैं

मया- क्या बात है?

संदेश वाहक - बहुत जरुरी बात करना है। हम उन्हीं से मिलने के लिए आये हैं, हमें जल्दी जाना भी हैं, अगर ज्यादा समय हुआ तो हमें ठाकुर से खतरा हो सकता है।

मया- कौन ठाकुर, कैसा खतरा?

संदेश वाहक - सभी बात हम भंडारी साहेब को बताने के लिए यहां आयें है। जल्दी बुला दिजिए ।

मया- ठीक है मुझे नहीं बताना चाहते तो कोई बात नहीं। अभी बुलाकर लाता हूं।

कुछ समय के बाद बखारी आता है उसका नजर उन दोनों पर पड़ता है। बखारी आश्चर्य चकित खुशी प्रकट करता हैं वह पहचान भी जाता हैं संदेश वाहक और उसकी पत्नी बखारी का अभिवादन करते हैं। बखारी भी जवाब देता हैं बखारी उन दोनों से कहता है-ऐसा क्या बात है कि आप लोग मुझसे मिलना चाहते है?

संदेश वाहक ने अपनी पत्नी को देखा फिर बखारी के कदमों को पकड़ लिया उसकी पत्नी ने भी ऐसा ही किया।

बखारी- ये क्या कर रहे हो? पैर छोड़िये।

संदेश वाहक-भंडारी साहेब हमें बचा लिजिए।

बखारी - आखिर बात क्या है बताइये।

संदेश वाहक की पत्नी - भंडारी साहेब हमारी इज्जत और जान आपके हाथ में है हमे बचा लीजिए।

बखारी - मुझे कुछ भी समझ नहीं आ रहा है आप लोग बतायेंगे तभी मैं कुछ कह पाऊंगा।

संदेश वाहक की पत्नी - भंडारी साहेब आप मेरे पिता समान हैं पहले आप हमें वचन दीजिए की आप हमें क्षमा कर देंगे?

बखारी - आप लोग बिना किसी डर के अपनी बात कहिए।

संदेश वाहक ने डरते-डरते आज ठाकुर द्वारा कहे गये सभी बातों को बखारी को बता दिया बखारी सभी बातों को धैर्य के साथ सुनते रहे। बीच-बीच में उनके चेहरे के भाव बदलते रहते थे। संदेश वाहक ने कहा - इसी बात के लिए हम आपके पास आये हैं। अब चाहे तो आप हमें कुछ भी सजा दीजिए हम भोगने के लिए तैयार हैं।

बखारी पूरी बात को सुनकर मुस्कुराते हुए - तुम्हारे पिता मेरे मित्र हैं, यह जानकर भी तुम लोग इतनी सी बात के लिए घबरा गये। अकेले भी आ सकते थे। बहु को क्यों ले आये। तुम लोगों की समस्या का समाधान मैं कर दूगां। कुछ समय दो पहले तुम दोनों भोजन कर लो, दोनों भूखे हो।

संदेश वाहक - भंडारी साहेब हमें जल्दी वापस जाना होगा क्योंकि मेरे देरी से जाना तो समझ में आता है लेकिन (अपनी पत्नी की तरफ इशारा करते हुए) इसके देर से जाना सुरक्षित नहीं है शक के घेरे में आ जायेंगे। लोगों को शक हो सकता है कि ये कहां गई थी और इतने समय में कहां से आ रही है।

बखारी - इसका भी इलाज है बहू जल्दी पहुंच सकती है मैं उसे उसी रास्ते से पहुंचवा सकता हूं, जिस रास्ते से आई है, तुमको भी तुम्हारे उसी रास्ते से ही पहुंचवा दूंगा।

संदेश वाहक - फिर भी इसे तो जल्दी जाना होगा।

बखारी - अच्छा एक काम करो भोजन नहीं करोगे तो दूध पी लो उसके बाद तुम लोगों के जाने की व्यवस्था करवाता हूं।

बखारी मया और सुंदरी को बुलाता हैं संदेश वाहक और उसकी पत्नी के लिए दूध लाने के लिए कहता है। सुन्दरी दूध लाती हैं। वे लोग सुबह से ही कुछ नहीं खाये थे। बुरी तरह से भूखे थे। लेकिन चिंता के कारण खाना गले से नहीं उतर रहा था। बखारी के बात व व्यवहार से दोनों बहुत खुश हो गये। उन्होंनें दूध पी लिया आने से पहले उन्होंने जो सोचा था उसके विपरीत हुआ। बखारी ने उनके ऊपर कोई गुस्सा नहीं किया। बल्की उसने उनके साथ काफी अच्छा व्यवहार किया।

बखारी संदेश वाहक से संबोधित हुआ- अमोली को बोल देना कि उसका संदेश बखारी भंडारी तक पहुंच गया है। इसका उत्तर वह एक दिन बाद मतलब परसों देगा। इससे आगे ज्यादा कुछ मत बोलना। इससे वह कुछ समय के लिए खुश हो जायेगा। परसो मैं उसे अपना संदेश भेजूंगा जिससे वह इतना ज्यादा विचलित हो जाएगा की तुम्हारा याद ही नहीं रहेगा।

संदेश वाहक - ठीक है आप जैसा कहें। अब हम चलते हैं।

बखारी - रुको मैं तुम लोगों को पुरान तक पहुंचवाने की व्यवस्था कर देता हूं।

बखारी सुन्दरी को कहता है कि तुम और मया अपने भाभी को पुरान तक छोड़कर आना, दया को भी बुला लो। वह भी कुछ दूर तक छोड़कर आयेगा। संदेश वाहक और उसकी पत्नी पैदल ही चले जाने का आग्रह करने लगे। लेकिन बखारी ने कहा- तुम मेरे बेटे और बहू की तरह हो। जल्दी नहीं पहुंचने से अमोली और उसके आदमियों को ये शक हो सकता है कि ये चिरहुला में इतने समय तक क्या कर रहे थे?

सुन्दरी और मया तुरंत तैयार होकर आते हैं अपने साथ तलवार भी रखे हुए हैं। कुछ समय के बाद दया भी आ जाता है। सुंदरी मया और दया तीन घोड़े निकालते हैं। मुख्य दरवाजा खोल दिया जाता है। संदेश वाहक को दया, उसकी पत्नी को सुदंरी घोड़े पर बैठाते हैं। मया अकेले घोड़े पर बैठता है। संदेश वाहक और उसकी पत्नी बखारी को जाते-जाते अभिवादन करते हैं। सुंदरी संदेश वाहक की पत्नी को घोड़े पर बैठाई है, जबकि मया अपने घोड़े पर अकेला हैं उसे सुन्दरी की सुरक्षा में जाना था। दया को अकेले ही संदेश वाहक को छोड़ना था । सभी का घोड़ा अपने अपने रास्ते की ओर बढ़ गया।

..........संदेश वाहक की पत्नी सुन्दरी से काफी प्रभावित थी। सुन्दरी ने नदी पार कर इतनी तेजी से उसे उसके घर के पास पहुंचा दिया की संदेश वाहक की पत्नी को रास्ते का पता ही नहीं चला। उसके घर पहुंचने से पहले ही दूर में ही सुन्दरी ने घोड़ा रोक कर उसे उतरने में मदद की। दूर-दूर तक कोई भी दिखाई नहीं दे रहा था। सुन्दरी ने कहा - अब आप घर जाइये मुझे भी चलना चाहिए।

संदेश वाहक की पत्नी ने कहा-सुंदरी मैं तुमको अपने घर भी नहीं ले जा सकती।

सुन्दरी - मैं जानती हूं आप लोगों की स्थिति को समझ सकती हूं। कहते हुए वापस मुड़ने को हूई ।संदेश वाहक की पत्नी उसके पास पहुंची और उसे गले से लगाते हुए गाल को चुम लिया। सुदंरी ने भी उसके गाल को चुमकर जवाब दिया। उसके बाद दोनों विपरित दिशा की ओर बढ़ गये। सुंदरी अपने घोड़े की ओर जहां मया सुन्दरी का निगरानी दूर से कर रहा था और किसी भी विषम परिस्थिति के लिए तैयार था। सुंदरी के वहां पहुंचते ही दोनों अपने अपने घोड़े पर सवार होकर चिरहुला के लिए तेज गति से चल पड़े।

उधर दया संदेश वाहक को नदी तक छोड़कर वापस चला गया। संदेश वाहक को किसी तरह का भय नहीं था। उसने जाते ही ठाकुर को बता दिया कि आपके भेजे हुए संदेश को बखारी भंडारी तक पहुंचा दिया गया है। उसने एक दिन के बाद परसों तक अपना जवाब देने का समय लिया है। सुनकर ठाकुर संतुष्ट हुआ। उसे लगा कि बखारी समझ गया है और वह उसे भय खाता है। ठाकुर अपने आपको बहुत ताकतवर समझता हुआ बहुत खुश होता है। उसे संदेश सुनाकर संदेश वाहक घर आता है। संदेश वाहक घर आकर विश्राम करता है। उसकी पत्नी भी पास में आ गई। शाम हो चुका था। संदेश वाहक की पत्नी घर के काम में लग जाती है। खाना बनाने के बाद संदेश वाहक के खाने के लिए कहती है। दोनों खाना खाते हैं, खाने के बाद संदेश वाहक सोने के लिए चला गया उसकी पत्नी बर्तन साफ कर कुछ इधर-उधर का काम करती रही उसके बाद वह भी सोने के लिए चली गई दोनों आज के विषय में बात करते रहे संदेश वाहक को नींद आने लगा। उसकी पत्नी जागती रही, वह मन ही मन सोंच रही थी की आज उसने एक बड़े समस्या और संकट से छुटकारा पा लिया उसके मन में बखारी भंडारी ओर उसके परिवार के लिए बहुत सम्मान का भाव पैदा हुआ था उसके पहले उसने यह तो सुना था कि भुजबल बड़ा लड़ाका है। आज तक ठाकुर और उसके लोग भुजबल महंत का सिर्फ बुराई ही करते थे हालांकि उसके घर के लोग उसे अच्छा इंसान समझते थे सबसे ज्यादा वह बखारी से प्रभावित हुई थी चिरहुला से पुरान तक के वापसी के कुछ ही समय में सुन्दरी के साथ काफी निकटता महसूस हुआ उससे लगाव पैदा हो गया वह सोंचने लगी कहां एक तरफ ठाकुर और उसके परिवार वाले तो दूसरी तरफ बखारी भंडारी और उसके घर के लोग। एक दूसरों की बहू-बेटी और सम्पत्ति को हड़पने वाला जिसके घर की स्त्रियां तक उसके अपराध का समर्थन करती है। दूसरों को सम्मान के साथ जीवन-यापन करते देख जलते है। दूसरों को बेइज्जत कर खुश होते है। तो दूसरी तरफ बखारी भण्डारी और उसके परिवार के लोग किसी के इज्जत और जीवन के रक्षा के लिए जी-जान लगा देते हैं। खतरों से भी नहीं घबराते हैं। कुछ सोंच और नींद के कारण यह पल उसको बहुत अच्छा लग रहा होता हैं उसे ऐसा महसूस होता है कि वह बखारी के ही घर की कोई सदस्य है। वह इस पल को आगे नहीं बढ़ने देना चाहती फिर नींद के आगोश में चली गई।

.............चिरहुला में बखारी भंडारी गांव के सभी प्रमुख लोगों को अपने घर बुलाता है और ठाकुर के संदेश के बारे में बताता है। जिसे सुनकर सभी उनको कहते हैं कि-भंडारी साहेब हमने शुरु में ही कहा था कि हमें पुरान पर हमला कर ठाकुर और उसके आदमियों का सबक सिखाना चाहिए, लेकिन आप ने मना कर दिया।

इस पर बखारी ने जवाब दिया- हम उसे जवाब देंगे, जरूर लेकिन दूसरे तरीके से।

छड़ीदार ने अपना सुझाव दिया- हमें चिरहुला से अमोली के पास संदेश भेजना चाहिए कि हम अपनी बेटी का विवाह शान-शौकत के साथ करेंगे जैसा हमारा नीति-रीति चला आ रहा हैं उसी के अनुरूप करेंगे। इस कार्य में विघ्न डालने की कोशिश

न करें। डोला हम चिरहुला के लोगों के तरफ से रहेगा न ही नवलपुर से। इस संबंध में पूरे गांव के लोगों का बैठक आज शाम को बुलाया जाये।

इस पर सभी ने सहमति व्यक्त किया। शाम को पूरे गांव का बैठक हुआ जिसमें बखारी ने पूरे घटनाक्रम को विस्तार से बताया और कहा कि-अब आप लोग इस पर चर्चा कीजिए जिससे हम किसी निर्णय पर पहुंच सके।

सभी लोगों ने इस समस्या व नये परिस्थिति पर अपने विचार रखे। अंत में छड़ीदार के द्वारा बताया गया कि सभी लोगों के विचार सुनकर यह निर्णय लिया जाता है कि-विवाह की तैयारी जोर-शोर से किया जाये। इसमें जो भी बांधा पैदा करेगा उसका हम सब मिलकर मुकाबला करेंगे। सुन्दरी को बिदा करने के लिए डोला चिरहुला के तरफ से बनवाया जाय। पुरान में ठाकुर को कड़ा संदेश दिया जाये उसे किसी भी संभावित बाधा पैदा नहीं करने के लिए कहा जाये। सभी गांव वाले एवं खड़ैतों को किसी भी स्थिति से निपटने के लिए तैयार रहने को कहा जाये। डोला के लिए रुपये और सभी स्थिति से भुजबल महंत को अवगत कराया जाय। इस निर्णय को क्या आप सभी लोग स्वीकार करते हैं?

सभी ने जवाब दिया -हव-हव (हां-हां)

बैठक में हुए निर्णय के अनुसार सुबह होते ही दो लोगों को डोला के लिए रुपये और संदेश के साथ नवलपुर भेज दिया जाता है। संदेश वाहक नवलपुर पहुंच कर भुजबल महंत से मिलकर चिरहुला वासियों का डोला के लिए दिये गये रुपये को देते हैं। भुजबल रुपये लेने से मना करते हैं। संदेशवाहक बताते हैं कि पुरान के अमोली को चुनौती देने के लिए यह किया जा रहा है। इसे स्वीकार कर लें भुजबल रुपये स्वीकार कर लेता है। उसके बाद पुरान में चल रहे गतिविधियों के बारे में विस्तार से बताते हैं यह बात भी बताते हैं कि आने वाले कल के दिन हमारे तरफ से संदेशवाहक पुरान जायेगा। भुजबल को बखारी का विशेष संदेश दिया जाता है कि इन गतिविधियों की सूचना शासन-प्रशासन के अधिकारियों को दिया जाये। भुजबल जवाब देता है कि-मैं दूसरे ही दिन नागपुर जाऊंगा ।

..........अमोली सिंह को बखारी भंडारी का संदेश देने दो घुड़सवार पुरान पहुंचते हैं वहां ठाकुर अपने घर में रहता हैं। संदेश वाहक उसके पास अपने आने का संदेश भिजवाते है। गांव के लोग धीरे-धीरे काफी संख्या में एकत्रित हो चुके थे। अमोली घर से बाहर निकलता हैं एक संदेशवाहक उससे संबोधित होता है और कहता है-बखारी भंडारी और चिरहुला वासियों के तरफ से आपके लिए एक संदेश है।

अमोली-बताओ क्या संदेश है?

संदेशवाहक एक- अमोली सिंह आपको यह बात बताते हुए बहुत खुशी हो रहा है कि मेरी बेटी का विवाह मेरे साथ-साथ चिरहुला वासियों के मान-सम्मान से जुड़ा हैं।अगर उसे रोकने की कोशिश किया गया तो भारी खून-खराबा हो सकता हैं और इसका जिम्मेदार सिर्फ और सिर्फ आप होंगे। हम यहां आपके सामने अपना पक्ष रखने या निवेदन करने नहीं आये हैं बल्कि अपना फैसला सुनाने आये हैं। अगर आपको यह सब पंसद नहीं है तो हम आपका पसंद नहीं बदल सकतें आपको जो करना है करिये। लेकिन हम दोबारा आपको बता देना चाहते हैं कि हम अपने मान-सम्मान से कोई समझौता नहीं करेंगे।

इतना सुनकर ठाकुर का पारा आसमान में चला गया। तलवार लेकर वह संदेश वाहक को मारने के लिए आगे बढ़ा इतने में संदेश वाहक ने कहा- आप हमें यहां मार तो सकते हैं लेकिन मारने के पहले बस्ती से बाहर तो झांक कर देख लो। अगर हमें खरोंच भी आया तो आपके सहित आपका एक भी आदमी जिंदा नहीं बचेगा।

ठाकुर के हरकतों का पूर्वानुमान लगाते हुए दूसरे संदेशवाहक ने एक संकेत किया था जिसे देखकर कम से कम एक दर्जन घुड़सवार खड़ैत वहां तूफान की तेजी से पहुंचने वाले थे। इसी समय ठाकुर का एक आदमी आकर ठाकुर से कहता है -ठाकुर साहेब हमें सब तरफ से घेर लिया गया है उनके सैनिक हमारे सिरों पर पहुंचने ही वाले है। सैकड़ों लोग पूरे गांव को घेर चुके है।

इतना सुनते ही ठाकुर और उसके साथियों का आगे बढ़ता हुआ कदम रुक जाता है। दूसरा संदेशवाहक अपने साथी के जान बचाने के लिए पहले के पास पहुंच चुका था।

दूसरा संदेशवाहक कहता है- तो अमोली सिंह जी हम लोग यहां से जायें की रुकें।

दूसरे संदेशवाहक के इतना कहते ही घुड़सवारों ने अमोली और उसके साथियों को अपने हथियारों के नोक पर ले लिया। उस दस्ते का कमान घासी के हाथ में था, घासी ठाकुर से कहता है- अमोली सिंह हमने अपना संदेश दिया है। इस पर आपको इतना गुस्सा की हमारे संदेशवाहक को मारने का प्रयास किया। जो यहां लड़ने के लिए नहीं बल्कि सिर्फ हमारा सदेश देने के लिए आये हैं। अगर लड़ने का इतना ही शौक है तो हमसे लड़ो। हम लड़ने के लिए तैयार है। गांव के लोग अपने-अपने घरों से यहां चल रही घटनाओं को देख रहे थे। घासी अपना घोड़ा अमोली सिंह के पास लेकर जाता है। अपने तलवार से उसके तलवार को टक्कर मारता है। वह चाहता है कि ठाकुर उससे लड़े। ठाकुर और उसके आदमी घासी और उसके खड़ैतों को देखकर अचंभित थे। वे कुछ कहने-बोलने की स्थिति में नहीं थे घुड़सवार खड़ैतों के तलवार उसके सिर के पास नाच रहे थे और घासी के एक इशारे पर कई सिर एक साथ जमीन पर गिर सकते थे। घासी ने ठाकुर और उनके साथियों को चेतावनी देते हुए कहा-एक बात बहुत अच्छी तरह से सुन और समझ लो अच्छा वस्त्र, पगडी, जूता पहनना, घोड़े की सवारी करना, अच्छा भोजन करना, अपने क्षमता के अनुसार घरों में रहना, किसी के सामने नहीं झुकना, किसी को छोटा या बड़ा नहीं मानना, सामने वाले से बराबरी का व्यवहार करना ये हमारा नीति-रीति हैं समझ में आया अमोली सिंह।

अमोली सिंह कोई जवाब नहीं देता- वह अपने आप को बहुत अपमानित महसूस कर रहा है। गांव के अधिकांश लोग अपने आंखों से यह सब घटनाक्रम को देख रहे थे। बहुत से लोग मन ही मन खुश हो रहे थे, कि कोई तो है जो ठाकुर को चुनौती दे रहा है, वरना ये ठाकुर तो सदा हम लोगों के सिर पर चढ़ा रहता है।

घासी अमोली सिंह से संबोधित होते हुए कहता है- अमोली सिंह हम जा रहे हैं, मेरे बातों को ध्यान में रखना।

सभी घुड़सवार वापस हो गये जब ये बस्ती से बाहर निकले तो पैदल लोग भी धीरे-धीरे गांव के घेरे-बंदी को छोड़ते हुए वापस चिरहुला की ओर आना शुरु कर दिया। पुरान के लोगों को भी पहली बार स्थिति के गंभीरता का एहसास हुआ।

भुजबल महंत नागपुर में सी.पी.एण्ड बरार के गवर्नर से मुलाकात कर पुरान के कुछ लोगों के द्वारा मानव के मूलभूत स्वतंत्रता , पहनावा, वस्त्र-पगड़ी, जूता, रहन-सहन, घोड़े की सवारी आदि पर अपने धार्मिक मान्यता के अनुसार बलपूर्वक रोकने विवाह-बारात में विघ्न पैदा करने का प्रयास से संबंधित घटनाओं का विस्तार पूर्वक रिपोर्ट देते हैं। इस कार्य को पूर्ण करने के बाद वे अपने दूसरे जरुरी काम डोला बनवाने के लिए वहां के कुशल कारिगरों से संपर्क कर डोला निर्माण का काम शुरु करवाते हैं। डोला बहुत जल्दी बना दिया जाता है। भुजबल और उसके सहयोगी डोला लेकर नवलपुर आ जाते हैं। उनके यहां आने से पहले ही यहां बारात के लिए सभी तैयारी पूरा कर लिया गया था।

भुजबल के द्वारा सभी तैयारियों का जायजा लिया जाता है, अन्त में भुजबल महंत संतुष्ट हो जाते हैं। भुजबल का सिर्फ एक काम बचा था। मेहमानों को निमंत्रण देने का उन्होंने सर्वप्रथम नवलपुर वासियों को निमंत्रण दिया उसके बाद क्रमशः अपने सहयोगियों, मित्रों और रिश्तेदारों के घर निमंत्रण भेज दिया।

........पुरान में अमोली सिंह इस बारात को रोकने के लिए जी जान से प्रयत्न कर रहा था। उसने दूर-दूर तक के सभी जमीदारों और सामंतों को अपने तरफ से संदेश भेजा था की वे अपने मान-सम्मान को बचाने के लिए और सतनामियों को सबक सिखाने के लिए पुरान में आयें उसका साथ दें, एक-एक कर उसके सभी आदमी वापस आ रहे थे और जो समाचार उसे दे रहे थे वह उसके अनुकूल नहीं था। छत्तीसगढ़ के सभी स्थानों से यही वापसी संदेश मिल रहा था कि इस लड़ाई में हम किसी भी प्रकार का मदद नहीं कर पायेंगे। अमोली सिंह को किसी स्थान से मदद नहीं मिल रहा था। स्थानीय जमींदारों ने उसे ठेंगा दिखा दिया था। अब उसे सिर्फ बाहरी लोगों का ही भरोसा रह गया था। बहुत जल्दी उसे उसके लायक समाचार भी मिलना शुरु हो गया। बाहर से सैकड़ों की संख्या में लठैत, गुण्डे बदमाश व सामंती प्रवृत्ति के लोग आने के लिए तैयार हो चुके थे। बारात के दिन से कई दिन पहले सैकड़ों लोग पुरान पहुंच चुके थे। इससे अमोली सिंह का हिम्मत काफी बढ़ गया। बाहरी लोगों ने उसे दिलासा दिया था कि-हम लड़ाई का ऐसा तैयारी करेंगे कि ये सतनामी सपने में भी नहीं सोंच पायेंगें। इन लोगों को ऐसा सबक सिखायेंगे कि बारात में शामिल लोगों को तो मारेंगे ही इनके बेटी-बहू को भी लूटेंगें, जिससे ये कभी भी बराबरी का व्यवहार करने की हिम्मत नहीं कर पायेंगे। इनकी आने वाली कई पीढ़ी हमारे नाम से दहशत में रहेगी। ये भविष्य में भी हमारे लोगों के सामने सिर उठाकर नहीं चल पायेंगे। पुरान में लड़ाई की तैयारी शुरु कर दिया जाता है। रास्ते के आसपास और दूसरे स्थानों में भी बड़े-बड़े गढ्ढे खोदे जाने लगें, इस काम के लिए गांव के लोगों को भी लगाया गया था। साथ में बाहरी लोगों ने भी हाथ बटाया।

कटीली झाड़ियों और बबूल की कांटेदार डंगालियों को काट-काटकर कई स्थानों में रखा जा रहा था। इस योजना के बारे में गांव वालों को भी नहीं बताया गया था। उनसे मेहनत भरपुर करवाया जा रहा था। सभी बाहरी लोग हथियार बंद थे उनके लिए भोजन बनाने व विश्राम के लिए भी अमोली ने गांव वालों को व्यवस्था करने के लिए कहा था। पुरान के लोगों का दिनचर्या काफी हलचल व भागदौड़ वाला हो गया था। पुरान के कुछ लोग इस तनाव भरी गतिविधियों से परेशान थें लेकिन डर के कारण न चाहते हुए भी इसमें सांथ दे रहे थे।

.........चिरहुला में बखारी भंडारी भी अपनी बेटी के विवाह की तैयारी में लगा हुआ था सभी तैयारी पूरा कर लिया गया था इसके साथ ही साथ उसके कुछ आदमियों के द्वारा गुप्त रुप से पुरान में अमोली के द्वारा किसी भी संभावित गतिविधियों पर निगरानी रखा जा रहा था। उसे पता चल चुका था कि कैसे अमोली सिंह ने अपने पक्ष में लड़ाई के लिए बाहर से आदमी बुलाया है और वे गुपचुप तरीके से खंदक खोदने का काम कर रहे हैं। बखारी को यह भी समाचार मिल चुका था की कोई भी स्थानीय जमींदार उसको साथ नहीं दे रहा था हालांकि अमोली ने अपने तरफ से काफी कोशिश किया था। उसने वहां की खबर नवलपुर भिजवा दिया था और भुजबल महंत को होशियार रहने को कहा था। भुजबल महंत ने उसके संदेशवाहक को बता दिया था कि-हम अपनी सुरक्षा के प्रति होशियार रहेंगे। अगर लड़ाई का नौबत आया तो मुंहतोड़ उत्तर दिया जायेगा।

बखारी पुरान के गतिविधियों पर लगातार नजर रख रहा था, उसे वहां की बहुत सी गोपनीय जानकारी मिल चुका था और उसने भी अपने खड़ैतों को तैयार रहने को कहा था इस पूरे क्षेत्र में तनाव काफी बढ़ गया था।

.........नवलपुर से बारात निकलने की तैयारी अपने आखरी चरण में है। भुजबल के खड़ैत पूरी तरह से तैयार है। आसपास के खड़ैत भी काफी संख्या में उसका साथ देने के लिए आ चुके थे। दूर-दूर से उनके मित्र और रिश्तेदार भी आये हुए थे। सैकड़ों की संख्या में घुड़सवार तथा बैलगाड़ियों में लोग तैयार है। डोला को एक बैलगाडी में रखा गया है। घोड़े पर सवार भुजबल सभी तैयारियों का अंतिम निरीक्षण कर रहे ह। नवलपुर के लोग काफी खुश हैं कि वो उनके मुखिया के पुत्र का विवाह हो रहा है और उसका बारात निकलने वाला है। मांदर, ढोल, नगांड़े, बज रहे हैं। एक खड़ैत जोर से दोहा कह रहा है-

शेर-शेर कइथे संगी, शेर कहां से आये हो।
भुजबल के शेर ढिलागे, बैरी कहां लुकाय हो।।
(शेर -शेर कहते हैं साथी शेर कहां से आया है?
भुजबल का शेर निकला है, दुश्मन कहां छिप गया है?)

नवलपुर के स्त्री, बच्चे, जवान और वृद्ध सभी नाच गा रहे हैं जिसे वे लोग पंथी कहते थे, काफी समय तक यह नृत्य-संगीत चलता रहा।

भुजबल बारात को आगे बढ़ने का इशारा करता है। बारात धीरे-धीरे आगे बढ़ना शुरु हो जाता है नवलपुर और चिरहुला के रास्ते में जिस गांव से भी यह बारात गुजरता उस गांव में मौजूद सभी लोग उसको स्वागत व कौतुहल की नजर से देखते थे। युद्धरत सेना की तरह आगे बढ़ते हुए बारात को उन्होंने पहली बार देखा था रास्ते के गांवों से भी अनेक लोग इस बारात में शामिल हो जाते थे। आजकल के बारातियों की तरह नहीं बल्कि एक जनसेना के रुप में बारात लगातार आगे बढ़ रहा था। पुरान गांव से पहले बारात को भुजबल रोकते हैं। खड़ैतों के दल को सामने पीछे व बीच-बीच में रखते है। स्वयं आगे अपने दुल्हा बने हुए बेटे दयाल के निकट रहते हैं, दयाल के सुरक्षा के लिए भी खड़ैतों के एक विशेष दल को तैनात करते है। बारात में सम्मिलित आम लोगों के सुरक्षा के लिए भी कुछ कुछ दूरी पर दोनों तरफ खड़ैतों को रखा गया है। पूरी तरह से संतुष्ट होने की बाद भुजबल बारात को आगे बढ़ने का इशारा कर स्वयं सामने आ जाते है। बारात पुरान के काफी निकट पहुंच जाता है फिर पुरान से गुजर रहा हैं कुछ भी हलचल पुरान में नहीं हो रहा है। बारात आधा से ज्यादा आगे निकल रहा होता है कि अचानक बारात के सबसे पीछे के बारातियों पर हाथियारों से सैकड़ों लोग एक साथ हमला कर देते हैं। लेकिन वहां मौजूद सामान्य बाराती दिख रहे लोग भी हथियार बंद खड़ैत निकले, उस हमले को मजबूती से रोक दिया जाता है पीछे के घुड़सवार खड़ैत भी जब तक उनके सहयोग के लिए तत्काल पहुंच जाते हैं। खड़ैत आक्रमणकारियों के ऊपर टूट पड़ते है। वे मुकाबला नहीं कर सके और पीठ दिखाकर भाग पड़ते है। उनका कुछ दूर तक पीछा किया जाता है। आक्रमण का मुकाबला करते हुए खड़ैतों ने कई आक्रमणकारियों को पकड़ लिया था। बारात पूरी तरह से सुरक्षित था। किसी को कोई बड़ा चोंट नहीं पहुंचा था। बखारी भी

बारात और पुरान के लोगों के ऊपर अपने आदिमयों के माध्यम से लगातार निगरानी कर रहा था यह आक्रमण होते ही बखारी के खड़ैत भी वहां पहुंच गये और भुजबल द्वारा पकड़े गये आक्रमणकारियों को बंदी बनाकर चिरहुला लाने की तैयारी शुरु कर दिया। अब बारात चिरहुला पहुंच रहा था। जहां चिरहुला वासी उसके स्वागत में तैयार थे।

.........चिरहुला में बखारी भंडारी के नेतृत्व में बारातियों का स्वागत सत्कार किया गया। कुछ समय विश्राम करने के बाद बखारी भंडारी के घर के सामने मैदान में सभी बाराती और चिरहुला के लोग एकत्रित हुए फिर दोनों पक्षों का शौर्य प्रदर्शन शुरु हो गया। भुजबल और बखारी के तरफ से खड़ैत अपना युद्ध कला का प्रदर्शन कर रहे थे। कई घण्टे तक यह कार्यक्रम चला आखिर में बखारी ने प्रदर्शन बंद करने को कहा- विवाह कार्यक्रम आगे बढ़ाया गया उस बारात में इतने ज्यादा लोग थे कि सभी बखारी के घर नहीं आ सकते थे। पूरा गांव ही लोगों से भरा हुआ था। गांव वाले मिलकर सभी के भोजन आदि का व्यवस्था कर रहे थे। बारात में सम्मिलित लोगों ने रात को विश्राम किया। गांव की सुरक्षा के लिए स्थान -स्थान पर खड़ैतों के समूह पहरा दे रहे थे। बखारी और भुजबल ने पुरान से बंदी बनाकर लाये गये, आक्रमणकारियों से पूछताछ किया जिससे उनको कई जानकारी मिला। इससे उनको अपने बचाव के लिए योजना बनाने में मदद मिला। रात में ही उन्होंने अपने खड़ैतों के दल नायकों और प्रमुख सहयोगियों को बुलाकर सुबह रास्ते में होने वाले संभावित हमलों के बारे में विस्तार से बता दिया और दुश्मनों को उत्तर देने के लिए कई योजना बना लिया गया। उस दिन हुआ हमला अमोली सिंह के योजना का प्रथम चरण था अगर उसका तत्काल जवाब नहीं दिया गया होता और भुजबल के खड़ैत कमजोर पड़े होते तो उस हमले में और भी लोग शामिल होकर भारी मारकाट मचा देते जिससे बारात में शामिल बहुत से लोग मारे गये होते बारात में भगदड़ मचता और आगे नहीं बढ़ पाता इससे सतनामियों में हताशा-निराशा पैदा होता। अमोली के रणनीतिकारों ने यही सोंचकर हमला करवाया था और अगर यह हमला विफल हो जाता जैसा हुआ भी तो भुजबल और बखारी सहित सभी यह सोंचकर शांत और खुश हो जाते कि हमने दुश्मनों को हरा दिया है। अब वे कुछ नहीं कर पायेंगे। ऐसा सोंचकर वे लापरवाह हो जाते और दूसरे दिन अपने रणनीति के दूसरे चरण के अनुसार उनको घेरकर सबक सिखाया जाता उनके बेटी-बहू को भी लुटकर उनका अपमान किया जाता।

दुश्मनों के इस रणनीति को जानकर बखारी, भुजबल सहित सभी लोगों के मन में अमोली और उसको साथ देने वाले उनके समर्थक हमलावरों के प्रति घृणा और गुस्से का भाव पैदा हो गया। सभी ने प्रण किया की इसे अब हम तरीके से ऐसा सबक सिखायेंगे की आगे चलकर वह ऐसी हरकत दोबारा करने की सपने में भी नहीं सोंच पाये।

........सुबह चिरहुला से बारात विदा किया जाता है। बारात चिरहुला से आगे निकलकर नदी पार कर पुरान पहुंचता हैं पहले से तैयार सतनामी खड़ैत दुश्मनों के युद्धनीति का पूर्व में ही पता लगा चुके थे। वे जानते थे कि कहां-कहां दुश्मन घात लगाये छुपे हुए थे। उनका कोई भी गुप्त नीति काम नहीं आया। जगह-जगह रास्ते को कांटों से घेर कर रखना, खंदक खोदकर अचानक हमला करने की हफ्तों-महीनों से किया गया तैयारी एक ही झटके में छिन्न-भिन्न हो गया। कुछ भी काम नहीं आया।

दुश्मनों ने अपने तरफ से जी-जान लगा दिया था लेकिन वे भुजबल महंत, करिया, गजरी, दयाल, बखारी भण्डारी, घासी, सुन्दरी जोगान्स, दया और सतनामी खड़ैतों का प्रतिरोध नहीं कर पाये। लड़ाई ज्यादा समय तक नहीं चला। लगभग दो ढाई घंटे में ही 10 से ज्यादा ठाकुर मारे गये। बहुत से लोग घायल हुए, बाकी जान बचाकर भाग खड़े हुए। उनका दूर तक पीछा किया गया, ललकारने पर भी वापस नहीं आये। मैदान दुश्मनों से खाली हो चुका था, मरे व घायल दुश्मनों को छोड़कर ठाकुर के पक्ष का एक भी आदमी वहां नहीं था। कुछ खड़ैत मामूली रुप से घायल हुए थे।

लड़ाई खत्म होने के बाद सुन्दरी वापस डोला में बैठी। दुश्मनों को रौंदते हुए सतनामी खड़ैत व बाराती नवलपुर चले गये। इस लड़ाई के बाद सतनामियों को रोकने का दुस्साहस फिर किसी ने नहीं किया, व इस तरह की घटना दोबारा छत्तीसगढ़ में आज तक कहीं और कभी नहीं हुआ।

7.2 भुवनलाल रात्रे

भुवनलाल रात्रे के अनुसार★[3]- यह गाथा गुरु बालकदास जी के शहादत के 23 साल बाद सन् 1883 ई. का है।

3 मार्च सन् 1883 ई. को भुजबल महंत मुंगेली क्षेत्र के दौरे पर गये थे, इसी दौरान वे चिरहुला में बखारी भण्डारी के घर जाते हैं, वहां बखारी भण्डारी की बेटी सुन्दरी को देखते हैं, उन्हें अपने पुत्र दयाल का विवाह भी करना था। इसलिए उन्होंने

बखारी भण्डारी से सुन्दरी के विवाह के विषय में बात किया। बखारी भण्डारी ने बताया कि योग्य लड़का होने पर विवाह कर सकते हैं। इस पर भुजबल ने अपने पुत्र दयाल के विषय में बताया और कहा कि मैं अपने पुत्र का विवाह करना चाहता हूँ। बखारी ने भुजबल से कहा कि अपने बेटे दयाल को ले आयें, जिससे हम लोग भी उसे देखकर निर्णय ले सकें।

10 मार्च को भुजबल अपने पुत्र दयाल, रिश्तेदारों और मित्रों को साथ लेकर चिरहुला पहुंचता है, वहां सुन्दरी और दयाल एक-दूसरे को पसंद कर लेते हैं। इस प्रकार दोनों का विवाह निश्चित हो जाता है।

25 मार्च को भुजबल महंत अपने पुत्र दयाल के विवाह का तिथि निश्चित करने के लिए बखारी भण्डारी के घर चिरहुला जा रहे थे। चिरहुला के पहले पुरान नाम का गांव है। जहां अमोली सिंह एक जातिवादी सामंती प्रवृत्ति का व्यक्ति था। जब अपने सहयोगियों के साथ, भुजबल पुरान गांव पहुंचे तब अपने साथियों को कहने पर वहां तालाब किनारे विश्राम करने के लिए रुकते हैं, उसी समय अमोली अपने आदमियों के साथ पहुंचता है और उनको देखकर 'पाय लागूं साहेब' कहता है। जवाब में भुजबल महंत 'साहेब सतनाम कहता है' यह सुनकर अमोली सिंह अपने आप को अपमानित महसूस करता है और भुजबल महंत से कहता है कि तुम लोग मुझसे माफी मांगो, अपने पगड़ी, जूता उतारकर घोड़ा और हथियार को यहीं छोड़कर पैदल जाओ। भुजबल महंत ऐसा करने से इंकार कर देता है। जवाब में चुनौती देता है कि- अभी तो हम कुछ लोग ही हैं, मैं अपने पुत्र का बारात इसी गांव से होकर लाऊंगा और चिरहुला से वापस भी इसी रास्ते से होकर नवलपुर ले जाऊंगा। अगर तुम रोक सको तो रोक लेना। ऐसा कहकर चिरहुला चला जाता है।

चिरहुला में इस घटना की जानकारी बखारी भण्डारी को देता है। बखारी भण्डारी के द्वारा चिरहुला के लोगों को बुलाकर इस संबंध में विचार-विमर्श किया जाता है। सभी लोगों के द्वारा कहा जाता है कि अमोली के द्वारा किये गये व्यवहार हमें मंजूर नहीं। हम अपनी बेटी के विवाह को किसी भी हालात में नहीं रोक सकते। अगर इसमें कोई बाधा पैदा का प्रयास करता है तो उसका उत्तर देने के लिए हम सभी तैयार हैं।

विवाह का तिथि निश्चित किया जाता है। भुजबल महंत और उसके सहयोगियों को वापस जाते समय चिरहुला के कुछ लोग पुरान से आगे कोहड़िया होते हुए मोहतरा तक साथ गये। इस दौरान कोई रोक-टोक नहीं किया गया। चिरहुला के लोग मोहतरा से वापस आ गये।

इधर पुरान में अमोली सिंह भुजबल के जवाब से काफी तिलमिलाया हुआ था। भुजबल के द्वारा दिये गये चुनौती उसे काफी नागवार लगा था। जब उसे पता चला कि विवाह का तारीख नियत हो चुका है, तब वह और भी ज्यादा बौखला गया। इस विवाह को रोकने के लिए कई उपाय सोचने लगा।

अमोली सिंह ने अपना संदेश वाहक 26 मार्च को चिरहुला में बखारी भण्डारी के पास भेजा और कहलवाया कि आप अपनी बेटी का विवाह नवलपुर के भुजबल महंत के बेटे दयाल से न करें। सिर्फ इतना ही नहीं उसने यह भी कहा कि चिरहुला के किसी भी लड़के या लड़की का विवाह ऐसे स्थान में न करें जिससे पुरान से होकर कोई बारात आये या जाये। इस संदेश को पाकर चिरहुलावासी भी क्रोधित हो गये। उन्होंने तय किया कि हमारी सुन्दरी के विवाह को ऐसा करेंगे कि दुनिया देखेगी।

27 मार्च को नवलपुर गये संदेशवाहक को चिरहुला के लोगों ने अपने तरफ से रूपये दिया था जिससे कि एक शानदार डोला बनवाया जा सके जैसा छत्तीसगढ़ में आज तक किसी ने भी न देखा हो। भुजबल को पुरान में चलने वाली गतिविधियों के बारे में भी विस्तार से बताया जाता है और कहा जाता है कि बारात आने व जाने के समय सावधान रहें।

28 मार्च को चिरहुला से पुरान में अमोली के पास, संदेश भेजा गया कि यह विवाह हर हाल में होगा। इसे रोकने के किसी भी प्रयास का कड़ा मुकाबला किया जायेगा। जिसे अपने जान का परवाह नहीं होगा, वही बारात के सामने रोकने के लिए आयेगा।

भुजबल महंत विवाह की तैयारी की जिम्मेदारी अपने रिश्तेदारों को देकर कुछ सहयोगियों को साथ लेकर राज्य के तत्कालीन राजधानी नागपुर के लिए 1 अप्रैल को रवाना हो जाते हैं। जहां वे उस समय के सर्वोच्च अंग्रेज अधिकारी से मिलकर

यहां की स्थिति के बारे में बताते हैं। अधिकारी के द्वारा हर संभव सहयोग का वादा किया जाता है। उनके द्वारा अपने अधीनस्थ अधिकारियों को निर्देश दिया जाता है कि वहां शांति कायम रखने का हर संभव प्रयास किया जाये। अधिकारियों से मिलने के बाद भुजबल नागपुर में अच्छे कारीगरों से डोला बनवाते है।

पुरान में अमोली इस बारात को रोकने के लिए ऐड़ी-चोंटी का जोर लगा रहा था। उसने सभी जमीदारों-सामंतों को अपना संदेश भेजा कि सतनामियों को सबक सिखाने के लिए वे उसका साथ दें। स्थानीय जमींदारों-सामंतों द्वारा इस कार्य के लिए प्रत्यक्ष रुप से साथ देने में असमर्थता व्यक्त किया गया। कुछ लोगों द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से साथ देने की बात कही गयी। अमोली ने यहां अपेक्षित सहयोग नहीं मिलने पर बाहर के लोगों को आमंत्रित किया। वर्तमान मध्यप्रदेश व उत्तरप्रदेश के कुछ इलाकों जैसे-रींवा, ग्वालियर, चम्बल आदि क्षेत्रों के सामंत व उनके समर्थकों को अपना संदेश भेजा। उन स्थानों से लोग अमोली को साथ देने के लिए तैयार हो गये और पुरान पहुंचने लगे। अमोली सिंह काफी खुश हुआ और उसे लगने लगा कि इनका मुकाबला सतनामी किसी भी हालात में नहीं कर पायेंगे। बाहरी लोगों ने आते ही पूरे पुरान गांव का निरीक्षण किया। आने-जाने वाले रास्तों को देखा और स्थान-स्थान पर खंदक खोजा जाने लगा। कांटेदार झाड़ियों और पेड़ों को काटकर एकत्रित किया जाने लगा। खंदक खोदने के बाद उसे अच्छे से ढंक दिया गया जिससे किसी को यह न लगे कि यहां कोई खद्‌ढा खुदा हुआ है। उन्होंने सतनामियों को रोकने और उनके ऊपर आक्रमण करने के लिए कई योजना बना लिया।

भुजबल महंत नागपुर से डोला लेकर 22 अप्रेल को नवलपुर पहुंचते हैं। उनके अनुपस्थिति में ही बारात की सारी तैयारी पूरा कर लिया गया था। सभी रिश्तेदारों, मित्रों और नवलपुर के लोगों को विवाह का निमंत्रण दिया गया था। साथ ही इस बारात को रोकने के लिए होने वाले प्रयास के बारे में भी बता दिया गया जिससे लोग सावधान रहें।

चिरहुला में भी विवाह की तैयारी पूरा किया जा चुका था। बखारी भण्डारी ने भी अपने रिश्तेदारों, मित्रों और चिरहुला गांव के सभी लोगों को विवाह का निमंत्रण दिया। अमोली से हुए विवाद के बारे में भी सभी को पता चल गया था। बारातियों के स्वागत-भोजन आदि की तैयारी को पूरा कर लिया गया था। इसके साथ ही किसी भी संभावित खतरों के प्रति सभी सतर्क थे।

25 अप्रैल 1883 ई. को नवलपुर से बारात चिरहुला के लिए निकलता है। यह बारात पूर्व से ही काफी चर्चित हो चुका था। इस बारात की सुरक्षा के लिए काफी संख्या में खड़ैत आये हुए थे। शांति कायम रखने के लिए नागपुर के अधिकारियों के निर्देशों को स्थानीय भारतीय अधिकारियों ने अवहेलना कर कोई भी उपाय नहीं किये थे। उन्होंने अप्रत्यक्ष रुप से ऐसा कर जातिवादी सामंतों का ही साथ दिया।

नवलपुर से निकला बारात रास्ते में जिस भी गांव-स्थान में पहुंचता, वहां के लोग उसे देखने के लिए उमंड़ पड़ते। अनेक लोग बारात में शामिल भी हो जाते।

भुजबल ने पुरान पहुंचने से पहले मोहतरा में अपने बारात को व्यवस्थित किया। जब वे पूर्ण रुप से संतुष्ट हुए तब आगे बढ़ने का आदेश दिया। मोहतरा से आगे कोहड़िया के बाद पुरान गांव आता है। पुरान से बारात गुजरने लगा। जैसे ही बारात आधा से ज्यादा निकल गया, पुरान में छिपे हुए सामंतियों ने बारात के आखिरी पिछले हिस्से पर आक्रमण कर दिया। खड़ैत पहले से सतर्क थे। उन्होंने तत्काल उत्तर दिया-आक्रमणकारी उनके सामने नहीं टिक पाये और उनको भागना पड़ा। कुछ लोगों को पकड़ लिया गया और बंदी बनाकर चिरहुला लाया गया।

चिरहुला पहुंचते ही बारात का स्वागत किया गया। एक मैदान में बखारी और भुजबल पक्ष के खड़ैतों द्वारा हथियारों का प्रदर्शन किया गया। काफी समय तक यह शौर्य प्रदर्शन का कार्यक्रम चलता रहा। बखारी भण्डारी के द्वारा, इसे बंद करने का संकेत पाकर यह कार्यक्रम रोका गया। बारातियों के भोजन आदि का व्यवस्था किया गया। शाम-रात में विवाह की औपचारिकता पूरा हो गया।

भुजबल ने पुरान से बंदी बनाकर लाये लोगों को बखारी के सामने प्रस्तुत किया। विवाह स्थल से दूर एकांत स्थान में उनसे पूछताछ किया गया। जिससे अमोली और उसके बाहरी सहयोगियों के द्वारा बनाये गये गुप्त रणनीति सामने आया। इस बात की जानकारी खड़ैतों के सभी दल प्रमुखों को दिया गया। साथ ही उनके घेरा बंदी को तोड़कर सुरक्षित निकलने और उनको उत्तर देने का भी जवाबी रणनीति बना लिया गया।

26 अप्रैल 1883 ई. को तड़के सुबह बारात बिदा किया गया। सतर्क बारात चिरहुला से निकलकर टेसुआ नदी को पार किया। नदी पारकर जैसे जी आगे रास्ते में बढ़े तो रास्ता बंद पाया। खड़ैतों के कई छोटे-छोटे दल उस रास्ते को छोड़कर अलग-अलग रास्तों से आगे बढ़े। खंदकों के जानकारी उनको पूर्व में मिल चुका था। उन खंदकों में हमला कर दिया गया। दुश्मन जान बचाकर भागने लगे। दुश्मनों के बहुत से साथी खंदकों के अलावा पुरान गांव में छिपे हुए थे। वे भी अपने साथियों की सहायता के लिए आ गये। जातिवादी सामंतियों और सतनामी खड़ैतों के बीच लड़ाई शुरु हो गया। इस लड़ाई के अफरा-तफरी का फायदा उठाते हुए दुश्मनों का एक समूह डोला में सवार सुन्दरी के तरफ बढ़ा। दुश्मनों को अपने तरफ आते देखकर सुन्दरी और उसके अंगरक्षक खड़ैत सावधान हो गये। जब दुश्मन नजदीक पहुंच गये तो सुन्दरी भी दुश्मनों का मुकाबला करने के लिए खड़ैतों के साथ तलवार चलाने लगी। दुश्मनों को जल्दी ही पता चल गया कि इनका मुकाबला नहीं किया जा सकता। वे अपने जान बचाने के लिए भागने लगे।

दुश्मनों के भागने का सिलसिला सूर्य निकलने के बाद और भी बढ़ गया, जब उन लोगों ने देखा कि उनके ही आदमियों को हानि उठाना पड़ रहा है। कोई भी सतनामी जमीन पर नहीं गिरा है, जबकि वे अपने साथियों को स्थान-स्थान पर जमीन पर गिरे किसी को कराहते तो किसी को निश्चल देख रहे थे। जैसे-जैसे सूर्य का प्रकाश बढ़ते गया, उसी तरह से दुश्मनों से पुरान का मैदान खाली होते गया।

खड़ैत खुशी से नाचने लगे। बखारी सुन्दरी को गले लगाता है, फिर उसे डोला तक ले जाता है। सुन्दरी डोला में बैठती है। भुजबल बारात को आगे बढ़ने का इशारा करता है और बारात आगे बढ़ता है।

इस लड़ाई में दर्जनों जातिवादी सामंती लड़ाके मारे गये। सतनामियों ने अपने दुश्मनों को धूल चटा दिया था। इसके बाद कई वर्षो तक यह क्षेत्र शांत रहा।

7.3 गणेश महंत

गणेश महंत के अनुसार*4- यह ऐतिहासिक अभियान भुजबल महंत और बखारी भण्डारी के संयुक्त नेतृत्व में किया गया था। यह लड़ाई सतनामियों के मान-सम्मान और समानता के लिए लड़ा गया था। इसके बारे में लोग नहीं जानते हैं और जानते भी हैं तो बहुत कम। आज भी जो अपने आपको इस घटना के जानकार कहते-मानते हैं। वे भी इसके कई पहलुओं से अनभिज्ञ हैं। इसमें सिर्फ तीन लोगों का नाम ही बताया जाता है। भुजबल महंत, बखारी भण्डारी और सुन्दरी जोगान्स, दयालदास के नाम को इसलिए लिया जाता है कि ये भुजबल महंत के पुत्र थे और इनका विवाह बखारी भण्डारी की बेटी सुन्दरी से होना तय हुआ था। लेकिन नवलपुर से ही दो ऐसे नाम थे, जिन्होंने खड़ैतों के टुकड़ियों का नेतृत्व किया था। वे भुजबल के सभी कार्यो में कंधे से कंधा मिलाकर साथ दिये थे। वे नाम हैं- करिया और गजरी। जो भुजबल महंत के पिता सुनहर दास के छोटे भाई भुलीदास के पुत्र थे। रिश्ते में भुजबल के ये दोनों चचेरे भाई थे।

जब भुजबल का अमोली से पुरान गांव में विवाद हुआ था और भुजबल महंत अमोली को बारात लाने का चुनौती देकर चिरहुला के लिए आगे बढ़ा तो अमोली ने अपना एक आदमी भुजबल महंत को वापस बुलाने के लिए भेजा। भुजबल ने इंकार कर दिया था। उस आदमी के बार-बार भुजबल को वापस आने की बात कहने से अप्रसन्न होकर उसे सबक सिखाने के लिए करिया ने उस आदमी को जूते से पीटा। करिया से मार खाने के बाद वह वापस भाग गया और दोबारा वापस नहीं आया।

भुजबल विवाह के पूर्व जब ब्रिटिश अधिकारियों से मिलने और डोला बनवाने के लिए नागपुर गया तब नवलपुर का सुरक्षा और विवाह की तैयारी का कार्यभार करिया और गजरी को देकर गया था। उन्होंने अपना कार्य काफी ईमानदारी और सफलतापूर्वक पूरा किया। जिसके कारण भुजबल नागपुर से वापस आकर इतनी जल्दी बारात को चिरहुला के लिए निश्चित तिथि को रवाना कर सके।

बारात के पुरान पहुंचने पर ठाकुरों ने बारातियों के ऊपर हमला किया तब भी दोनों भाईयों ने आगे रहकर खड़ैतों को नेतृत्व कर सिर्फ हमले को नाकाम ही नहीं किया बल्कि कुछ दुश्मनों को गिरफ्तार भी कर लिये। जिससे दुश्मनों के आगामी गुप्त रणनीति के बारे में पता लगाया जा सका और सतनामियों को कोई जन हानि नहीं उठाना पड़ा।

चिरहुला से जब बारात बिदा होने के बाद वापस नवलपुर जाने के लिए निकला तो पुरान में आगे बढ़ने के रास्ते को रोक दिया गया था। तब भुजबल ने करिया और गजरी को अपने पूर्व रणनीति के अनुसार कार्यभार दिया था कि वे घुमावदार रास्तों का प्रयोग कर खंदकों पर हमला करें। करिया और गजरी ने सतनामियों के आक्रमणकारी अग्रिमदस्तों का नेतृत्व करते हुए दुश्मनों के खंदकों में धावा बोल दिया और दुश्मनों को अपने बचाव का समय तक नहीं मिल पाया।

जिस समय दुश्मनों और सतनामी खड़ैतों का संघर्ष अपने चरम पर था तब करिया, गजरी और घासी दुश्मनों के कमजोर हिस्सों पर ध्यान देते हुए खड़ैतों के छोटे-छोटे समूह को भेजकर उनको पीछे हटने पर मजबूर कर रहे थे। संघर्ष के आपाधापी का फायदा उठाने के लिए दुश्मनों के एक दल ने सुन्दरी को घेरकर पकड़ना चाहा। हालांकि सुन्दरी और उसके सुरक्षा में तैनात खड़ैतों ने उनको अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। बल्कि दुश्मनों को अपना जान बचाने के लिए भागना पड़ा। सभी मोर्चों पर हारने के बाद दुश्मन भागने लगे थे। इन भागते दुश्मनों ने आखिरी प्रयास किया कि सुन्दरी को पकड़ लिया जाय। वे सुन्दरी के तरफ बड़ी संख्या में बढ़ने लगे तभी करिया ने भुजबल को इसके बारे में बताया। भुजबल ने बखारी और घासी को खबर करने के लिए तुरंत आदमी उनकी ओर भेज दिया और स्वयं करिया, गजरी और खड़ैतों को लेकर सुन्दरी और दुश्मनों के बीच पहुंच गये। यहां करिया और गजरी ने खड़ैतों के सहयोग से दुश्मनों को सुन्दरी के निकट पहुंचने के पहले ही रोक दिया। इतने में बखारी और घासी अपने कुछ सहयोगियों के साथ पहुंच गये और दुश्मनों के आखिरी प्रयास को भी नाकाम कर दिया।

इस प्रकार करिया और गजरी ने अपने साहस और रणनीतिक कौशल का परिचय इस अभियान में दिया था लेकिन उसके इस योगदान को भुला दिया गया है। इन दोनों ने इस युद्ध में सतनामी खड़ैतों के आक्रमणकारी अग्रिम दस्तों का सफल नेतृत्व किया था। इनके जैसे ही अनेक अनाम (अज्ञात) खड़ैतों के वजह से सामंतों के विरुद्ध समानता और सम्मान के लिए किया गया कार्यवाही सफल हुआ।

7.4 भगत गुलेरी

भगत गुलेरी के अनुसार*5- भगत गुलेरी ने अपने गीतों में इसका वर्णन इस प्रकार किया है-

1. **ढार नवलपुर के धरती मा जनमें गीत से**

ढार नवलपुर के धरती म जन्में ....माटी पुत्र एक संत..
..
ये दीदी वो.... ये भैया ग........ भुजबल महंत 2
ये दीदी वो.... भुजबल महंत .... ये भैया ग........ भुजबल महंत 2
पाव पदुंम सोह कान म जी कुंडल वेद के सोंटा धरे मन हे अटल मन हे अटल........2
ऐंठ मुरेरी पागा मेंछा हे तर्रा चोखा जुबान जेला बोल थे ये खर्रा
बोलथे ये खर्रा...............2
सादा जीवन जेकर ऊँचा विचार हे महापुरुष ज्ञानी अक्कल अपार हे
अक्कल ले अपार हे......2
समाज के स्वाभिमान के खातिर .....2 लड़े लड़ाई अनंत.
....
ये दीदी वो भुजबल महंत ....ये भैया ग भुजबल महंत 2
अंग म जनेवा कंठी माथा म चंदन ऐंठे-ऐंठे भुजा गोरा बदन
गोरा बदन.2
पहली महंत के जी उपाधि ल पाये सतनामी समाज में जी सुनता बनाये
सुनता बनाये -2
गांव के गौंटिया दया मया के भंडार हे सतनामी समाज के महंत जी हमार
महंत जी हमार....2
समाज खातिर बर लड़े हर पल ....2 बाहूबली बलव...
ये दीदी वो.... भुजबल महंत ये भैया ग........ भुजबल महंत 2
ढ़ार नवलपुर के धरती म जन्मे....2 माटी पुत्र एक संत.
ये दीदी वो.... ये भैया ग........ भुजबल महंत 2
ये दीदी वो....भुजबल महंत....ये भैया ग......भुजबल महंत ...2

संवाद-श्रद्धेय भुजबल दास महंत की ये गाथा शुरु होती है। जब अपने पुत्र के लिए वधु की तलाश में ग्राम चिरहुला के नेपलिहा गौंटिया के घर जाने के लिए नील नामक घोड़े पर सवार होकर प्रस्थान करते हैं। ग्राम चिरहुला में पहुंचते ही वहां के लोगों में महंतजी को देखकर उत्साह पूर्ण

पायलगी महराज कहकर अभिवादन किया। उस अभिवादन के जवाब में भुजबल दास महंत जी बोले- जय सतनाम! यह कहकर अभिवादन स्वीकार किया। वहां पर उपस्थित कुछ असमाजिक तत्वों के लोगों ने उनका रास्ता रोक लिया और कहने लगे तुम छोटी जाति के लोग हो तुम्हें घोड़े में सवार होने का कोई अधिकार नहीं है। तुम यहां से सिर्फ पैदल ही जा सकते हो तब महंत जी बोले ललकार कर और कहा सुनो भाई मानवता के नाते सभी को समता का अधिकार हैं अभी तो मैं सिर्फ घोड़े पर सवार होकर जा रहा हूं। जब मैं इस गांव में अपने पुत्र का बारात लेकर आऊंगा और अपने पुत्र वधु को डोला में बैठाकर ले जाउंगा, तब मैं देखूगां कि किस माई के लाल ने अपने मां का दूध पिया है जो मुझे और मेरे बारातियों को आने-जाने से रोक सके। यह शब्द सुनकर वहां उपस्थिति लोग दंग रह गये यह बात कहते की नेपलिहा गौंटिया के घर के लिए प्रस्थान हो गये और शादी की तारिख तय करके अपने घर के लिए रवाना हुए घर पहुंचते ही सुबह नागपुर सुप्रीम कोर्ट के लिए निकल पड़े। लगभग सन् 1830 में मांटेग्यू बटलर का शासन चल रहा था। राजदरबार में जाकर भुजबल दास महंत जी ने गोहार लगायी, राजन मानवता के तहत समानता के अधिकार पर हमें भी डोला प्रथा का अधिकार मिलना चाहिए।

2. समता अऊ सम्मान के खातिर

समता अऊ सम्मान के खातिर जग म ऐसे करे जगजाहिर...2
स्वाभिमान के भड़के...शोला रे......भुजबल महंत के डोला रे..2
हाय रे... भुजबल महंत के डोला रे .....
डोला रे, डोला रे, डोला रे....
भुजबल महंत के डोला रे....2
भुजबल महंत के डोला रे ....भुजबल ....महंत के ... डोला...रे ..2
सन् 1830 करीबन सत के लोहा माना.....
मांटेग्यू बटलर के शासन काल के बात ये जाना 2
नागपुर सुप्रीम कोर्ट म जाके..मानवता के धाक जमाये..2
सतनाम के धावा बोला रे ......
भुजबल महंत के डोला रे......
राजा के दरबार म जाके बोलय बानी बड़े-बड़े...
बटलर के रानीजी छत उपर ले देखय खड़े खड़े...2
मानव के स्वाभिमान के खातिर कहे राजा ल सुन राजाबीर ...2
डोला के हक देदे मोला रे.....
भुजबल महंत के डोला रे.....
बटलर राजा डोला देहे बर साफ करे इंकार...
महारानी बोले मानवता खातिर ओकरो हे अधिकार -2
रानी वचन सुनके रहे राजा मन म गुनके कहे
जा डोला दिया मैं तोला रे........
भुजबल महंत के डोला रे ....
समता अऊ सम्मान के खातिर...जग में ऐसे करे जगजाहिर 2
स्वाभिमान के भड़के .....शोला रे........
भुजबल महंत के डोला रे ....हाय रे .....भुजबल महंत के डोला रे.........
डोला रे, डोला रे, डोला रे....
भुजबल महंत के डोला रे 4
भुजबल महंत के डोला रे ....भुजबल... महंत... के डोला...रे.....

संवाद-भुजबलदास महंत ने राजा के दरबार से डोला की मांग किया तो राजा ने डोला देने से इंकार कर दिया तब भुजबल महंत ने कहा-मैं आपके दरबार से तभी जाउंगा जब मुझे आप डोला प्रथा का अधिकार देंगे। अन्यथा मैं अपना प्राण त्याग दूंगा। ऐसा कहकर महंत जी दरबार के सामने भुख हड़ताल पर बैठ गये। इस बात को राजा की महारानी भी दरबार में बैठी सुन रही थी दरबार समाप्त होने के बाद भी महंत जी अपने घोड़े व कुत्ते के साथ अनशन पर बैठे रहे। महारानी ने घोड़े के लिए दाना कुत्ते के लिए खाना व महंत जी के लिए भोजन भिजवाई परंतु तीनों प्राणियों ने खाना ग्रहण नहीं किया। खाना यथावत रखा हुआ था। इस परिदृश्य को महारानी अपनी महल की अटारी से खड़ी होकर देख रही थी, तब महारानी ने राजा के पास जाकर बोली कि महाराज इंसान तो इंसान जानवर भी भोजन नहीं कर रहे है। हे राजन! मैं सत्य को केवल सूनी थी आज प्रत्यक्ष देख भी ली। मानवता के नाते सभी का समान अधिकार बनता है। अतः महंत जी को डोला का अधिकार दिया जाये। और इस तरह भुजबल महंत को डोला का अधिकार प्राप्त हुआ।

3. मेछा वाले हो

मेछा वाले हो...मेछा वाले ...मेछा वाले हो.....मेछा वाले
मेछा वाले वीर सतनामी समाज के सुन लव कहानी सुनइया मन आज के
मेछा वाले ....मन आज के
नीरा माता के पिता भुजबल महंत ऐ ....हो ....

नीरा माता के पिता भुजबल महंत ऐ ससुर ये गुरु बालकदास के.... मेछा वाले

मेछा वाले हो...मेछा वाले.....मेछा वाले हो.....मेछा वाले

नागपुरेच म जी डोला बनवाए आनी बानी के ओला बढ़िया सजवाये

बढ़िया सजवाये, बढ़िया सजवाये

नागपुरेच म जी डोला बनवाए आनी बानी के ओला बढ़िया सजवाये

जेने देखय तेने काहय क्या बात बढ़िया, डोला ले आगे बेटा छत्तीसगढ़िया

पांच हांथ के घोड़ा म बइठे महंत जी ...हो

पांच हाथ के घोड़ा म बइठे महंत जी मूछ म ताव पगड़ी साज के...

मेछा वाले....मेछा वाले हो....मेछा वाले.....मेछा वाले हो. ....मेछा वाले .....

मेछा वाले वीर सतनामी समाज के सुनलव कहानी सुनइया मन आज के ....

मेछा वाले हो.....मेछा वाले, मेछा वाले हो...मेछा वाले...

नवलपुर के मेड़ो म डोला लेके आये मांदर मृदंग बाजे परघावत ले जाये

परघावत ले जाये परघावत ले जाये...

नवलपुर के मेड़ों मे डोला लेके आये मांदर मृदंग बाजे परघावत ले जाये

घरो घर के दुआरी म कलश जलाये

छत्तीसगढ़ के सतनामी सबो जुरीयाये

जय जय कार उड़े भुजबल महंत के...हो...

जय जयकार उड़े भुजबल महंत के....

समधी ये गुरुघासीदास के ....मेछा वाले

मेछा वाले हो.....मेछा वाले मेछा वाले हो.....मेछा वाले

मेछा वाले वीर सतनामी समाज के

सुनलव कहानी सुनइया मन आज के

मेछा वाले हो.........मेछा वाले, मेछा वाले हो......मेछा वाले

नीरा माता के पिता भुजबल महंत ये.......हो.....

नीरा माता के पिता भुजबल महंत ये......

ससुर ये गुरुबालकदास के.....मेछा वाले

मेछा वाले हो....मेछा वाले,मेछा वाले हो....मेछा वाले

मेछा वाले वीर सतनामी समाज के

सुनलव कहानी सुनइया मन आज के...3

मेछा वाले हो..मेछा वाले ,मेछा वाले हो...मेछा वाले....

संवाद-जब महंत जी एक डोला लेकर नागपुर से छत्तीसगढ़ में वापस आये तब गांव-गांव के सतनामियों ने मांदर, झांझ बजाते पंथी नाचते गाते नवलपुर ग्राम पहुंचे तो सभी महिलाओं ने अपने अपने घरों में दीप जलाकर महंत जी का स्वागत किया। उस दिन सैकड़ों मांदर की आवाज नवलपुर की धरती पर गुंजने लगी। यह बात छत्तीसगढ़ में आग की तरह फैल गई तब कुछ असामाजिक तत्वों के लोगों में दशहत फैल गया । सुबह होते ही भुजबल महंत जी ने अपने पुत्र के विवाह का रश्म प्रारंभ किया।

4. दुश्मन बेरी के छाती

दुश्मन बेरी के छाती फाटे रे जुरमिल मांदर म सतनामी मन पंथी नाचे

जुरमिल मांदर म सतनामी मन पंथी नाचे ...2

मन अटल तन चंचल घनघोर, झांझ मंजीरा बाजे रे

जुरमिल मांदर म सतनामी मन पंथी नाचे ...2

जुरमिल मांदर म सतनामी मन पंथी नाचे

जुरमिल मांदर म सतनामी मन पंथी नाचे रे...

न..न..न..न..न..न..न..न..न..न..न..न..न..

भुजबल महंत अपन बेटा के धूमधाम से मंड़वा गड़ाये

धूमधाम से मंड़वा गड़ाये रे...2

दाई दीदी मामी काकी मोसी मिल के अंग म हरदी रचाये रे

अंग म हरदी रचाये जी , अंग अंग म हरदी रचाये रे

भुजबल महंत अपने बेटा के धूमधाम से मंड़वा गड़ाये

धूमधाम से मंड़वा गड़ाये जी

धूमधाम से मंड़वा गड़ाये

दाई दीदी मामी काकी मोसी मिल के अंग म हरदी रचाये

अंग म हरदी रचाये जी , अंग अंग म हरदी रचाये रे

मंड़वा तरी म... मंड़वा तरी म तलहाते रंग माते रे

जूरमिल के मांदर म... पंथी नाचे

जूरमिल के मांदर म ...पंथी नाचे रे

त..न.न..त.न...न..त..न...न....त..न..न...

मायन के दिन नता गोता अऊसमाज के मन जुरियाइन

समाज के मन जुरियाइनजी समाज के मन जुरियाइन रे

बरात के दिन चलना हे कैसे यही रणनीति बनाइन वो

यही रणनीति बनाइन जी...2

मायन के दिन नता गोता अउ समाज के मन जुरियाइन
समाज के मन जुरियाइन जी समाज के मन जुरियाइन
बरात के दिन चलना हे कैसे यही रणनीति बनाइन वो
यही रणनीति बनाइन जी यही रणनीति बनाइन
छत्तीसगढ़ म रचबो छत्तीसगढ़ म रचबो कहिन इतिहास रे....
जुरमिल के मांदर म सतनामी मन पंथी नाचे
जुरमिल के मांदर म सतनामी मन पंथी नाचे रे...
न..न..न..न..न..न..न..न....सन्ना न सन्ना
चलव बरतिया तियार होवव जी गांव म डंका बाजे रे
गांव म डंका बाजे जी, गांव म डंका बाजे रे ।
दुल्हा डौका ल नहा खोरवा के राजा संवागा पहिराये रे
राजा सवांगा पहिराये जी राजा संवागा पहिराये रे
चलव बरतिया तियार होवव जी गांव म डंका बाजे रे
गांव म डंका बाजे जी, गांव म डंका बाजे रे ।
दुल्हा डौका ल नहा खोरवा के राजा संवागा पहिराये रे
राजा सवांगा पहिराये जी राजा संवागा पहिराये रे
डोला लेके निकले, डोला लेके निकले गांव से बराती रे
जूरमिल के मांदर म ...पंथी नाचें रे
जूरमिल के मांदर म ...पंथी नाचें रे
मन अटल तन चंचल घनघोर...2, झांझ मंजीरा बाजे रे
जूरमिल के मांदर म सतनामी मन पंथी नाचें रे...3

संवाद-नवलपुर के नर-नारियों ने कतारबद्ध होकर नाचते गाते भारी उमंग के साथ बारात के साथ-साथ चल रहे थे। फटाकों की ध्वनि आसमान में गूंज रही थी जो ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो बादल गरज रहा हो। सर पे पगड़ी हाथ में तलवार घोड़े पर सवार होकर भुजबल महंत के पुत्र दुल्हा बने आगे-आगे चल रहे थे और कहारों ने अपने कंधे पर डोला थामे पीछे-पीछे चल रहे थे। मानो संसार की सभी खुशियां नवलपुर की धरती पर समाहित हो रही हो।

5. पगड़ी बांधे तब्बल धरे—

पगड़ी बांधे तब्बल धरे, पगड़ी बांधे...
पगड़ी बांधे तब्बल धरे, भुजबल महंत रेंगय आघू
बेटा बैठे घोड़ा म
बेटा बैठे घोड़ा म
बेटा बैठे घोड़ा म
बनके दुल्हा बाबू बनके दुल्हा बाबू
घर ले निकले साहेब सतनाम भजके...2
हजारों बराती चले बने सज धज के...2
नारी मन जूरमिल आरती उतारंय...2
सतनाम सतनाम सबो झिन पुकारंय...2
लइका सियान बुढ़ा जवान लइका सियान
लइका सियान बुढ़ा जवान संग चले सबसे आघू
बेटा बैठे घोड़ा म
बेटा बैठे घोड़ा म
बेटा बैठे घोड़ा म
बनके दूल्हा बाबू...2
पगड़ी बांधे तब्बल धरे, पगड़ी बांधे...
पगड़ी बांधे तब्बल धरे, भुजबल महंत रेंगय आघू
बेटा बैठे घोड़ा म
बेटा बैठे घोड़ा म
बेटा बैठे घोड़ा म
बनके दूल्हा बाबू...2
मांदर अउ मृदंग बाजे झांझ मंजीरा
मांदर अउ मृदंग बाजे झांझ मंजीरा
सबे नाचत-गावत चले बराती गंभीरा
सबे नाचत-गावत चले बराती गंभीरा
फौज फटाका संग महंत भुजबल
फौज फटाका संग महंत भुजबल
चिरहुला के बेर पहुंच होगे अटल
चिरहुला के बेर पहुंच होगे अटल
सावचेती चले महंत जी सावचेती चले...
सावचेती चले महंत जी तन मन ल करे काबू..
बेटा बैठे घोड़ा म
बेटा बैठे घोड़ा म
बेटा बैठे घोड़ा म
बनके दूल्हा बाबू...2
पगड़ी बांधे तब्बल धरे, पगड़ी बांधे...
पगड़ी बांधे तब्बल धरे, भुजबल महंत रेंगय आघू
बेटा बैठे घोड़ा म
बेटा बैठे घोड़ा म
बेटा बैठे घोड़ा म
बनके दूल्हा बाबू, बनके दूल्हा बाबू...3

संवाद-राजमहंत जी अपनी बराती के साथ ग्राम चिरहुला की धरती पर पहुंचे तो वहां के और आसपास के गांव के असमाजिक तत्वों ने बरातियों का रास्ता रोक दिया और कहा कि तुम छोटी जाति के लोगों को डोला में बैठने का कोई अधिकार नहीं है तब महंतजी ने सालिनता

का परिचय देते हुए कहा मुझे अपना कार्य करने दिजिए इस डोला प्रथा को मैने नागपुर के शासक मांटेग्यू बटलर से मानवता के अधिकार पर समान अधिकार के तहत प्राप्त किया है उसके बावजूद भी उन लोगों ने नहीं माना और बरातियों पर आक्रमण कर दिया फिर भुजबल दास महंत जी ललकारते हुए मैदान में कूद पड़े ।

6. देख बरतिया दुश्मन अड़गे–

देख बरतिया दुश्मन अड़गे दुनो तरफ ले हिंसा भड़के
चिरहुला के वो मैदान दिखे महाभारत के समान
चिरहुला के वो मैदान
देख बरतिया दुश्मन अड़गे दुनो तरफ ले हिंसा भड़के
चिरहुला के वो मैदान दिखे महाभारत के समान
चिरहुला के वो मैदान
मारो-मारो मारो-मारो भुजबल महंत कहे ललकार
टूटे बरतिया तैयार होके, हाथ धरे तब्बल तलवार
महाभारत कस दिखन लागे...
दुनों तरफ ले चले हथियार, मैदान म धुर्रा उड़गे
धरती होवन लागे लाल, शेर असन भुजबल गरजे
देख दुश्मन बैरी थरियाय भुजबल महंत मेछा अटियाय
चिरहुला के वो मैदान दिखे महाभारत के समान
चिरहुला के वो मैदान ...
देख बरतिया दुश्मन अड़गे दुनों तरफ ले हिंसा भड़के
चिरहुला के वो मैदान, दिखे महाभारत के समान...2
चिरहुला के वो मैदान
बाप बेटा दुनों पीठ जोर के सनासन तलवार चलाय
ककरो फूटगे माड़ी कोहनी ककरो मुड़ी लेलहू बोहाय
साफ नजर दिखय मैदान दुश्मन बैरी भाग पराय
विजय घोष के शंख बजावे सतनाम हे सार होजाय
सैकड़ों मांदर बाजन लागे
जय हो जय भुजबल महंत बाजे जहां से विजय शंख
चिरहुला के वो मैदान दिखे महाभारत के समान
चिरहुला के वो मैदान
देख बरतिया दुश्मन अड़गे दुनों तरफ ले हिंसा भड़के
चिरहुला के वो मैदान, दिखे महाभारत के समान ...2
चिरहुला के ये मैदान, दिखे महाभारत के समान
चिरहुला के वो मैदान, दिखे महाभारत के समान
चिरहुला के ये मैदान, दिखे महाभारत के समान
चिरहुला के वो मैदान, दिखे महाभारत के समान

संवाद-राज महंत भुजबलदास महंत जी द्वारा असामाजिक तत्वों के व्यक्तियों पर विजय प्राप्त करने के पश्चात ग्राम-चिरहुला के नेपलिया गौंटिया के यहां विवाह के रश्मों की अदायगी कर सम्मान पूर्वक द्वारा नवलपुर लौट आये तभी से सतनामी समाज में डोला प्रथा का प्रचलन हुआ। ऐसे महान पराक्रमी ने समाज में इतिहास को कायम किया ऐसे महान विभूति को हम शत-शत नमन वंदन एवं अभिवादन करते है।

7. बहु बिहा के लाये–

बहु बिहा के लाये...समाज ल जगाये
बहु बिहा के लाये...समाज ल जगाये
इतिहास रचे ग... इतिहास रचे ग...
डोला प्रथा ल चला के.... हाय गा....
डोला प्रथा ल चला के...
बहु बिहा के लाये, समाज ल जगाये
बहु बिहा के लाये, समाज ल जगाये
इतिहास रचे ग... इतिहास रचे ग...
डोला प्रथा ल चला के.... हाय गा....
डोला...प्रथा ल चला के....
चिरहुला म नैपलिहा गौटिया के बेटी आय
चिरहुला म नैपलिहा गौटिया के बेटी आय
नवलपुर म भुजबल महंत के बहू कहाय
नवलपुर म भुजबल महंत के बहू कहाय
चिरहुला म नेपलिहा गौटिया के बेटी आय...2
नवलपुर म भुजबल महंत के बहू कहाय...2
मांदर झांझ ल बजाये पंथी नाचे अऊ गाये
मांदर झांझ ल बजाये पंथी नाचे अऊ गाये
इतिहास रचे ग... इतिहास रचे ग...
डोला प्रथा ल चला के.... हाय गा....
डोला प्रथा ल चला के....
भुजबल महंत बेटा बहू ल लाये घर भितरी...2
रानी-राजा बना के बइठारे मढ़वा...तरी...2
भुजबल महंत बेटा बहू ल लाये घर भितरी...2
रानी-राजा बना के बइठारे मढ़वा....तरी...2
भावर पराये टिकावन टिकाये
भावर पराये टिकावन टिकाये
इतिहास रचे ग... इतिहास रचे ग...
डोला प्रथा ल चला के.... हाय गा....
डोला प्रथा ल चला के....

छत्तीसगढ़ म सतनामी के स्वाभिमान जागे...2
मन म आनंद छाये संगी सरग सही लागे...2
छत्तीसगढ़ म सतनामी के स्वाभिमान जागे...2
मन म आनंद छाये संगी सरग सही लागे...2
नवा रास्ता बनाये संदेश ल बगराये...2
इतिहास रचे ग... इतिहास रचे ग...
डोला प्रथा ल चला के....हाय...गा....

डोला प्रथा ल चला के....
बहु बिहा के लाये समाज ल जगाये
बहु बिहा के लाये समाज ल जगाये
इतिहास रचे ग... इतिहास रचे ग...
डोला प्रथा ल चला के...हाय...गा...5.
डोला प्रथा ल चला के....

संवाद-महंत जी के इस गाथा से हमें यही प्रेरणा मिलती है, यदि किसी भी कार्य को दृढ़ संकल्प के साथ प्रारंभ किया जाये तो उसका सफलता अंत में निश्चित है समाज की दशा पर विचार करें समाज को नई दिशा प्रदान करें शिक्षा को बढ़ावा दें लड़की हो या लड़का उच्च शिक्षा के लिए प्ररित करें। शिक्षित समाज को सर्वसंपन्न समाज कहा जाता है। सत्य के मार्ग पर चलना सीखें। अपने अधिकार के लिए लड़ना सीखें तभी आप सतनाम धर्म अर्थात् मानव धर्म की रखवाले एवं अनुयायी हो सकते हैं।

धन्यवाद !

7.5 श्यामलाल जोगांस

श्यामलाल जोगांस के अनुसार*[6]- भुजबल महंत अपने बेटे दयालदास के लिए विवाह योग्य लड़की खोज रहे थे कि एक दिन अचानक मंगल भाठ से उनका मुलाकात होता है। आपसी चर्चा के दौरान भुजबल महंत ने कहा कि मैं अपने बेटे का शादी करना चाहता हूं। उसके लिए लड़की खोज रहा हूं अभी तक नहीं मिला है। इस पर मंगलभाठ ने कहा कि चिरहुला के बखारी भंडारी के घर जाइये उसकी बेटी सुन्दरी सिर्फ नाम की ही नहीं बल्कि दिखने में भी काफी सुन्दर, व्यवहार कुशल व काफी समझदार है।

भुजबल महंत अपने बेटे दयालदास व कुछ आदमियों को लेकर नवलपुर से चिरहुला आते है। यहां चिरहुला में बखारी के घर उसकी बेटी सुंदरी को देखते हैं, औपचारिक वार्तालाप के बाद आखिर में दयाल और सुन्दरी के विवाह की बात तय हो जाती हैं रिश्ता पक्का कर भुजबल और उसके साथ आये हुए लोग वापस नवलपुर चले जाते है।

कुछ दिन बाद भुजबल शादी का दिन तिथि निर्धारित करने के लिए नवलपुर से चिरहुला आ रहे होते हैं चिरहुला पहुंचने के पहले रास्ते में पुरान नाम का गांव हैं वहां तालाब के पास भुजबल महंत रुकते हैं और घोड़े से उतर कर आराम करने के लिए पेड़ के छांव के पास जाते हैं। उसके आदमी घोड़े को पानी पिलाने के लिए तालाब में ले जाते हैं तभी वहां उसी गांव का ठाकुर जिसका नाम अमोली सिंह था आता हैं, भुजबल और उसके आदमियों को देखकर ठाकुर उसे प्रणाम करता (पायलागी महराज कहता) है इसके जवाब में भुजबल महंत उसे साहेब सतनाम कहता हैं इतना सुनकर ठाकुर दोनों हाथों से अपना सिर पकड़कर जमीन पर बैठ जाता है उसे यह बात बहुत अपमान जनक लगा कि उसने एक सतनामी को प्रणाम किया है ठाकुर ने कहा-तुम्हारे और तुम्हारे आदमियों के वस्त्र,जुता, सवारी और हावभाव को देखकर मुझे धोखा हुआ और मैंने तुमको प्रणाम किया है।आज के बाद तुम लोग यहां नहीं आना आज के घटना के लिए तुम लोग मुझसे मांफी मांगो। घोड़े में बैठकर यहां तक आये हो लेकिन जाओगे बिना घोड़े के, पगड़ी उतार दो और पनही (जूता) अपने सिर पर रखकर यहां से जाओ।

इतना सुनकर भुजबल महंत आवेश में आ गये, भुजबल ने ठाकुर को कहा-हम सतनामी हैं, न तो हम किसी को झुकाते और न ही किसी के सामने झुकते। तुमने अपने स्वेच्छा से हमें प्रणाम किया हैं हमने आपको प्रणाम करने के लिए नहीं कहा था। जवाब में हमने साहेब सतनाम कहकर आपका भी सम्मान किया है।इस पर ठाकुर ने दोबारा कहा- नहीं तुम हमसे मांफी मांगो घोड़ा यहीं छोड़ दो पगड़ी उतरो और पनही को अपने सिर में रखकर यहां से चले जाओ। भुजबल ने जवाब दिया-हम तुम्हारे गुलाम नहीं कि तुम्हारे किसी भी बात को आदेश मानकर बिना सोचे समझे मान ले हम यहां से जा रहे हैं घोड़े में बैठकर पगड़ी और पनही को बिना उतारे, हिम्मत है तो हमे रोक के दिखाओ। यह कहते हुए भुजबल महंत और उसके आदमी ठाकुर के सामने से आराम से आगे बढ़ने लगें ठाकुर गुस्से से सुलग रहा था भुजबल ने आगे बढ़ते हुए कहा-आज मैं तुझे कुछ नहीं कर रहा हूं

अब की बार फिर आउंगा तुममें अगर ताकत है तो रोक के देख लेना अपने जितने भी आदमी है उसे बुला लेना ऐसा कहते हुए चिरहुला जाने के रास्ते में आगे बढ़ गये।

भुजबल और उसके आदमी आगे बढ़ने लगे कुछ समय के बाद ठाकुर का भेजा हुआ एक आदमी आया और बोला-ठाकुर आप लोगों को बुला रहा है। भुजबल ने कहा-हम उसके बुलावे पर नहीं जायेंगे।

चिरहुला में आकर भुजबल महंत ने इन सारी घटनाओं की जानकारी बखारी और चिरहुला वासियों को दिया। बखारी भंडारी ने गांव वालों के सांथ बैठक कर विचार विमर्श किया इस पर सभी लोगों के द्वारा कहा गया कि शादी- होगा-और बारात पुरान से होकर आयेगा और वापस भी उसी गांव से जायेगा जिस प्रकार बराती में लोग घोड़ा आदि पर सवार होकर जाते-आते है। उसी प्रकार इस शादी के भी बराती आयेंगे और यहां से जायेंगे, साथ ही हम अपनी बेटी को डोला के साथ ही विदा करेंगे।

इस घटना के बाद ठाकुर ने चिरहुला में बखारी और चिरहुला के लोगों के पास संदेश भेजा था कि भुजबल के बेटे के लिए अपनी बेटी का रिस्ता न करें। इसके जवाब में बखारी भंडारी ने ठाकुर को खुला चुनौती दिया था कि बारात को रोकने के लिए तुम्हारे संपर्क के जितने भी आदमी है उन आदमी को बुला लेना जबकि हम किसी को नहीं बुलायेंगे। जो हमें स्वेच्छा से साथ देगा उसे हम रोकेंगे भी नहीं।

बखारी और चिरहुला के लोगों ने तय किया था कि हमारी बेटी सुन्दरी डोला में जायेगी। इसलिए गांव के सभी लोगों ने अपसी सहयोग से पांच हजार रुपये इक्ठ्ठा कर भुजबल महंत के पास भेजा और संदेश दिया गया कि नवलपुर से बारात डोला के सांथ आयेगा इसलिए डोला बनवाने के लिए तैयारी शुरु कर दें।

भुजबल महंत के द्वारा नागपुर जाकर अंग्रेज गर्वनर से मुलाकात कर इस विवाद और परिस्थितियों के बारे में बताया गया इस पर अंग्रेज अधिकारी के द्वारा सहयोग का वायदा किया गया। नागपुर से डोला बनवाकर नवलपुर लाया गया। निश्चित किये गये तिथि में नवलपुर से बारात निकला, नवलपुर से चिरहुला जाने वाले रास्ते में जिस स्थान से डोला और बारात गुजरता था लोग उसमें सम्मिलित हो जाते थे। इस प्रकार बारात में आने वाले लोगों की संख्या बहुत बढ़ गया। बारात के पुरान पहुंचने से पहले एक पुलिस आता है (यह पुलिस सरकारी सिपाही था या भुजबल का निजी स्पष्ट नहीं है) पुलिस पुरान गया तो ठाकुरों ने उसके साथ मारपीट किया पुलिस ने वापस आकर भुजबल महंत को अपने साथ ठाकुरों के द्वारा किये गये मारपीट के विषय में बताया। भुजबल ने उसे कहा कि आप सभी स्थिति को देख समझकर भी वहां चले गये ऐसा नहीं करना चाहिए था। बारात लगातार आगे बढ़ रहा था। रास्ते में पुरान गांव आया वहां कुछ लोगों के समूह ने बारात पर अचानक आक्रमण कर दिया लेकिन पहले से तैयार खड़ैतों ने उनके आक्रमण को विफल कर दिया और बहुत जल्दी उनके उपर काबू पा लिया गया। सभी आक्रमणकारी पीठ दिखाकर भाग गये लेकिन तीन आक्रमणकारी पकड़ में आये। उनको बंदी बना लिया गया जिसे पीटते हुए चिरहुला ले आये।

चिरहुला में जब बारात आया तो यहां उनके लिए भोजन स्नान आदि की व्यवस्था किया गया। बारात में सम्मिलित लोगों की संख्या इतना ज्यादा था कि तालाब का पानी कई हाथ कम हो गया था। खाने के लिए जमीन में बड़े और गहरे गढ्ढा खोदकर चूल्हा बनाया गया था। जिसमें बड़े-बड़े बर्तनों में खाना बनाया गया था, लोग इतने ज्यादा थे कि चावल पूरा पक नहीं पाता था कि खाने वाले पहुंच जाते थे, उनको वैसे ही दे दिया जाता था।

चिरहुला में विवाह का कार्यक्रम शांति से पूरा हुआ। बारात को विदा कर दिया गया। सुबह यहां से बारात नवलपुर के लिए निकला। टेसुआ नदी को पार कर जैसे ही पुरान गांव में प्रवेश किया लड़ाई शुरु हो गया। ठाकुरों ने जगह-जगह गढ़्ढा खोदकर छिपकर अचानक आक्रमण करने के ताक में बैठे हुए थे कई स्थानों के रास्तों में कांटा बिछा दिया गया था।

वहां बहुत भयंकर मारधाड़ शुरु हो गया। खड़ैतों ने ठाकुरों को मारकर भगा दिया। उसके बाद बारात आराम से नवलपुर के लिए आगे बढ़ गया। ठाकुर का साथ देने के लिए जितने भी लोग आये थे वे सब छत्तीसगढ़ के बाहर के लोग थे किसी भी आस-पास या छत्तीसगढ़ के किसी भी ठाकुर या अन्य किसी भी व्यक्ति ने पुरान के ठाकुरों का साथ इस लड़ाई में नहीं दिया था।

इस घटना के बाद बीसों साल तक इस क्षेत्र में शांति रहा।

7.6 गंगा जोशी

गंगा जोशी के अनुसार★[7]- इस लड़ाई में यहां के हर घर से लोगों ने भाग लिया था। उस समय के सभी हथियार जिसमें तब्बल, तलवार और लाठी शामिल था यहां हुए एक हत्या काण्ड के सिलसिले में पुलिस द्वारा गांव के सभी लोगों के, जिसमें सतनामियों के घर भी शामिल था से जब्त कर लिया गया। एक छोटा डंडा तक नहीं छोड़ा गया। इस तरह उस संघर्ष के प्रतीक के रूप में आज कुछ भी नहीं है। बखारी भण्डारी के पास हजारों एकड़ जमीन था जिसमें से लगभग 700 एकड़ जमीन अभी भी उनके वंशजों के पास मौजूद है। (उसने उस स्थान जो उसके घर से ही लगा है, के आसपास को दिखाते हुए बताया कि यहां उनका बखारी का नब्बे हाथ का घर हुआ करता था) वर्तमान में उसके कई हिस्से होकर उनके पूर्व के घर का कोई अवशेष नहीं रह गया है, बल्कि उसके स्थान पर अलग-अलग लोगों के द्वारा बनाये गये घर हैं।

7.7 भानदास जोशी

भानदास जोशी के अनुसार★[8]- भुजबल चिरहुला बखारी के घर आया वहां सुंदरी को देखा तो उसका मन आ गया उसने कहा इस लड़की को अपना बहु बनाऊंगा। बाद में दयाल और सुंदरी का विवाह तय हो गया।

भुजबल जब पुरान गांव से होकर नवलपुर की ओर जा रहा था तो वहां उपस्थित कुछ लोग उसे पायलागी महराज कहते है। भुजबल आगे निकल जाता है। भुजबल जब अगली बार पुरान आया तो जिन लोगों ने उसे पायलागी महराज कहा था उनको किसी ने बताया कि जिस आदमी को आप लोगों ने प्रणाम किया है वह सतनामी है, इस बात को सुनकर ठाकुर लोग बहुत निराश ओर क्रोधित हुए कि हमने एक सतनामी को प्रणाम किया है।

भुजबल महंत को सबक सिखाने के लिए पुरान में आने-जाने के रास्ते में दस हाथ का गढ्ढा खोद कर उसमें धारदार हथियार रखा गया और उसे ढंक दिया गया जिससे पता न चल पाये कि यहां गढ्ढा है।

भुजबल जब वापस आया तो उसका घोड़ा खतरे को भांप गया और उस स्थान को छलांग लगाकर पार कर गया। ठाकुर आश्चर्य चकित देखते रह गये।

भुजबल ने ऐलान किया कि मैं अपने बहू को डोला में बैठाकर ले जाऊंगा। उसने डोला के लिए नागपुर को प्रस्थान किया। उसने वहां के जज से मिलकर डोला के लिए आदेश लेने का प्रयास किया। इस पर जज ने कहा कि डोला आप लोग को नहीं मिल सकता क्योंकि डोला का अधिकार आप लोगों के समाज के लिए मान्य नहीं है यह जवाब सुनकर भुजबल बहुत निराश हुआ। इसने खाना-पीना छोड़ दिया। जज की पत्नी नहाने के लिए तालाब गई रास्ते में उसने देखा की भुजबल उसके घोड़े और कुत्ता तीनों भूखे है। उसने उनके लिए खाना भिजवाया लेकिन तीनों ने खाना, चारा आदि को नहीं खाया इस पर जज की पत्नी ने अपने पति से बात की तो जज ने वहीं जवाब दिया जो जवाब वह भुजबल को दिया था। जज की पत्नी ने उसे कानून का किताब दिखाया और बताया कि यह अधिकार सभी के ऊपर समान रुप से लागू है और सतनामी भी डोला का उपयोग कर सकते हैं। जज ने डोला के लिए अनुमति दे दी।

जज से अनुमति मिलने के बाद भुजबल नागपुर से ही डोला लेकर नवलपुर आ गया। नवलपुर से बारात चिरहुला के लिए निकला इस बारात में हजारों लोग शामिल हो गये। पुरान में बाधा डालने और बारात को रोकने की कोशिश किया गया भुजबल ने रोकने वालों से मुकाबला करने का आदेश दिया बाराती पुरान में बारात को रोकने वालों के ऊपर टूट पड़े बाधा पैदा करने वाले पीछे हट गये। बारात चिरहुला पहुंचा यहां हजारों की संख्या में लोग आ चुके थे। तालाब का पानी एक हाथ कम हो गया था। बड़े-बड़े गढ्ढे खोदकर खाना बनाने के लिए चूल्हा बनाया गया था। गांव के लोग इस कार्य में मिलजुलकर हाथ बटाये थे। चिरहुला में शादी का कार्य सम्पन्न हुआ। बारात जब वापस हुआ तो उसे रोकने वाले कोई नहीं थे। ये घटना बैसाख महीने में हुआ था।

7.8 महाजन जोशी उर्फ महाजन जोगान्स

महाजन जोशी उर्फ महाजन जोगान्स के अनुसार★[9]- कुछ लोगों के द्वारा यह कहा जाता है कि सुन्दरी नेपलिहा गौंटिया की बेटी है, यह सही नहीं है क्योंकि बखारी को ही बखरिया भी कहा जाता है, इसके अलावा उन्हें किसी दूसरे नाम जैसे

कि नेपलिहा आदि के नाम से नहीं जाना जाता। नेपाल उर्फ नेपलिहा और बखारी उर्फ बखरिया दो अलग-अलग व्यक्तियों के नाम हैं। नेपाल उर्फ नेपलिहा मेरे पिता का नाम है। नेपाल के पिता भगदुल और उनके पिता मेरे दादा का नाम घासी जो बखारी के भाई थे। उनके पिता रघु उर्फ रघुवा है। नेपाल उर्फ नेपलिहा घासी और बखारी के रिश्ते में पौत्र थे। जबकि सुन्दरी घासी की भतीजी और बखारी की पुत्री थी। इस प्रकार नेपाल उर्फ नेपलिहा सुन्दरी उर्फ सुन्दरिया का रिश्ते में भतीजा हुआ न कि सुन्दरी का पिता।

7.9 रंजन जोगान्स व अन्य

रंजन जोगान्स व अन्य के अनुसार★[10]– रंजन जोगान्स, झुमुकदास सोनवानी व अन्य से भी विस्तृत साक्षात्कार लिया गया सभी ने अलग-अलग तरीके से उसी बात को बताया, जिसे श्यामलाल जोशी उर्फ श्यामलाल जोगांस ने बताया था, इसलिए उनका अलग से उल्लेख नहीं किया जा रहा है।

★[1] साहेब भुवनलाल रात्रे जी से SPM खोजी दल द्वारा उनके निवास भारतीय नगर, बिलासपुर, छत्तीसगढ़ में दिनांक 16 अप्रैल 2018 को लिये गये साक्षात्कार के अनुसार।

★[2] कुंजराम लहरे ने तारीख 27 मार्च सन् 1994 को अपने निवास ग्राम-मेढ़पार बाजार, विकासखंड-तखतपुर, जिला-बिलासपुर (छ.ग.) में कुमार (रामकुमार लहरे) को जैसा बताया।

★[3] साहेब भुवनलाल रात्रे जी से SPM खोजी दल द्वारा उनके निवास भारतीय नगर बिलासपुर, छत्तीसगढ़ में दिनांक 16 अप्रैल 2018 को लिये गये साक्षात्कार के अनुसार।

★[4] भुजबल महंत के वंशज गणेश महंत से उनके निवास ग्राम-नवलपुर, बेमेतरा छत्तीसगढ़ में दिनांक 18 अप्रैल 2018 को लिये गये साक्षात्कार के अनुसार।

★[5] छत्तीसगढ़ी रचनाकार, गायक व अधिवक्ता भगत गुलेरी, गायिका-जानकी गुलेरी के गाये गीतों को SB म्यूजिक कोरबा (छ.ग.) द्वारा रिकार्ड किये गये भुजबल महंत के डोला नामक CD कैसेट जिसमें जैसा गीत व संवाद है, के अनुसार-

★[6] श्यामलाल जोगांस ने तारिख 15 अप्रैल 2018 को अपने निवास ग्राम-चिरहुला, विकासखण्ड व जिला-मुंगेली (छ.ग.) में जैसा बताया।

★[7] गंगाप्रसाद जोशी, निवासी ग्राम-चिरहुला, मुंगेली (छ.ग.) से दिनांक 15 अप्रैल 2018 को इनके निवास पर लिये गये साक्षात्कार के अनुसार ।

★[8] भानदास जोशी-निवासी ग्राम-चिरहुला, मुंगेली (छ.ग.) से दिनांक 18 अक्टूबर 2018 को उनके निवास में लिये गये साक्षात्कार के अनुसार-

★[9] महाजन जोशी व ★[10] रंजन जोगान्स , झुमुकदास सोनवानी व अन्य लोगों से दिनांक 18 अक्टूबर 2018 को ग्राम-चिरहुला, मुंगेली (छ.ग.) में सतनाम पुनर्जागरण मिशन (SPM) के खोजी दल द्वारा उनके निवास में लिये गये साक्षात्कार के अनुसार

--00--

8.1 इस अभियान का मुख्य व तात्कालिक कारण-

इसका मुख्य कारण पुरान गांव में असमानतावादियों के द्वारा भुजबल महंत व उनके साथियों से किया गया अनावश्यक विवाद व अपमानित करने का प्रयास था।

पुरान के जातिवादी सामंती व्यक्तियों द्वारा भुजबल महंत एवं उनके साथियों को अभिवादन स्वरूप ''पांव लागू साहेब''कहा गया जवाब में भुजबल महंत ने 'साहेब सतनाम' कहा। जवाब सुनकर और उनको यह जानकर की जिन्हें उसने प्रणाम किया है वे सतनामी है। उनको घोड़े से उतरने सिर से पगड़ी उतारने धोती घुटने के ऊपर पहनने, हथियार फेंकने और जूता उतारकर सिर पर रखते हुए माफी मांगने को कहा। जवाब में भुजबल महंत के द्वारा कहा गया कि-हम किसी के गुलाम नहीं हैं, वे न तो किसी को झुकाते हैं और न ही जैतखाम को छोड़कर किसी के सामने सिर झुकाते हैं अगर तुम्हें अच्छा लगे तो खुद तुम अपने सिर से पगड़ी उतार लो। धोती को लंगोट की तरह पहनो और अपना जूता अपने सिर पर रखकर अपने आप से माफी मांग लो।

भुजबल महंत ने पुरान गांव से होकर बारात लाने और वापसी का चुनौती दिया जबकि जातिवादी सामंती तत्व बारात तो क्या किसी आदमी को भी स्वाभिमान से नहीं देखना चाहते थे। इसलिए दोनों पक्षों के बीच संघर्ष अनिवार्य हो गया, जिसके कारण भुजबल महंत को बारात सामान्य बारात के बजाए किसी सैन्य अभियान की तरह संचालित करना पड़ा। जिसका अंतिम परिणाम दोनों पक्षों के बीच भीषण संघर्ष हुआ। इस प्रकार असमानतावादियों का संकीर्ण विचारधारा ही इस घटना का तात्कालिक व मुख्य कारण रहा है।

8.2 विवाद की पृष्ठभूमि -

भुजबल महंत और उनके साथियों से विवाद व अपमानित करने के प्रयास के पीछे की पृष्ठभूमि को समझना आवश्यक होगा। क्योंकि यह घटना सन् 1820 में प्रारंभ हुए महान सतनाम आंदोलन व सन् 1860 ई. में गुरु बालकदास जी के शहादत के बाद की महत्वपूर्ण घटनाओं में से है। इस घटना के पूर्व की कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं पर दृष्टि डालने से इस विवाद के उत्पन्न होने की परिस्थितियों को समझने में आसानी होगी।

1. गुरु बालकदास की हत्या- 16 मार्च सन् 1860 ई. को जातिवादी सामंती तत्वों ने औराबांधा नामक स्थान पर योजनाबद्ध तरीके से गुरु बालकदास जी के उपर अचानक प्राणघातक हमला किया जब वे रात्रि विश्राम कर रहे थे। हमलावरों में कुछ लोगों को छोड़कर बाकी सभी लोग बाहर से आये हुए थे। इस हमला में वे सफल हुए थे। जिससे उनका उत्साह बढ़ा हुआ था। उनको लगा की अगर पूरी तैयारी किया जाये तो भुजबल महंत और बखारी भंडारी को हराया जा सकता है। इन दोनों के बाद सतनामियों का नेतृत्वकर्ता कोई नहीं रहेगा। और वे अपने इच्छानुसार कुछ भी कर सकते है।

2.सतनामी शक्ति का कमजोर होना- गुरु बालकदास के शहादत के बाद आगरदास भण्डारपुर जो उस समय सतनामियों का प्रशासनिक राजधानी हुआ करता था की गद्दी पर बैठा। सतनामियों के उपर दमन, अन्याय-अत्याचार शुरु हो गया। उनके भूमि-सम्पत्तियों पर बलपूर्वक कब्जा कर बेदखली की कार्यवाही किया गया।

बेमेतरा, नवागढ़ और मुंगेली क्षेत्र के लोगों ने नवलपुर के भुजबल महंत को अपना प्रधान चुना भुजबल महंत ने इन क्षेत्रों में सतनामियों का सफल नेतृत्व किया और भूमि-सम्पत्ति बेदखली और अन्याय-अत्याचार के खिलाफ संगठित कार्यवाही किया। भुजबल महंत की राजमहंत बनाया गया था जिसे एक खास क्षेत्र की जिम्मेदारी दिया जाता था। उसने अपने क्षेत्राधिकार में आने वाले क्षेत्र पर अपना कर्तव्य पुरा किया। लेकिन केन्द्रीय प्रमुख के रुप में भण्डारपुर से विभिन्न क्षेत्रों में होने वाले जमीनों-सम्पत्तियों के लूट-खसोट बेजा-कब्जा तथा अन्य असंगत गतिविधियों पर कोई कार्यवाही नहीं किया गया। वे दमनकारियों के हाथों की कठपुतली बने रहे। भूमि सम्पत्ति विहिन सतनामी कमजोर हो गये। भुजबल महंत के नेतृत्व में एक खास क्षेत्र तक एकाधिकार बना रहा लेकिन व्यापक रुप से ताकतवर सतनामियों का एकता टूट गया और उनका प्रभाव बेमेतरा,

नवागढ़ और मुंगेली क्षेत्र तक सिमट कर रह गया। उनको केन्द्रीय नेतृत्व का कोई सहयोग नहीं मिला। इस परिस्थितियों से जातिवादी-सामंती तत्वों का मनोबल बढ़ चुका था।

3. असमानतावादी विचारधारा- जातिवादी-सामंती तत्व उस धर्म-संस्कृति को मानते हैं जैसा कि उनके धर्मग्रंथ और धार्मिक गुरु शिक्षा देते हैं उनका धर्मग्रंथ में स्पष्ट रुप से असमानतावादी शिक्षा दिया गया है। जिससे इस विवाद को करने वालों को दूसरों के मान-सम्मान, भूमि-सम्पत्ति, सुख-शांति को खत्म करने को प्रेरित किया जाता है और इन सब कार्यो व विचारों को धार्मिक कार्य समझा जाता है।

4.भुजबल महंत के पुत्र दयाल का विवाह बखारी की पुत्री सुंदरी जोगांस से होना तय हुआ था। विवाह का तिथि निश्चित करने के लिए भुजबल महंत अपने साथियों के साथ चिरहुला जा रहे थे। रास्ते में पुरान गांव पड़ता है। इसी गांव में उनसे विवाद किया गया।

5. चूंकि विवाह होना पूर्व से निश्चित था नवलपुर से चिरहुला बारात आना था किंतु अमोली सिंह बारात को पुरान से नहीं गुजरने देना चाहता था। इसलिए यह विवाद उग्र रुप धारण कर लिया और दोनों पक्षों के बीच संघर्ष होना अनिवार्य हो गया।

--00--

09 परिणाम

इस अभियान का सकारात्मक व नकारात्मक परिणाम यह हुआ कि-

9.1 सकारात्मक परिणाम

1. कुंजराम लहरे, भुवनलाल रात्रे व श्यामलाल जोशी के अनुसार-इस अभियान में जातिवादी-सामंती- असमानतावादी तत्व एक तरफ तथा सतनामी व समातनतावादी तत्व एक तरफ हुए, दोनों के समर्थकों का ध्रुवीकरण हुआ। इस संघर्ष में जातिवादी -सामंती-असमानतावादियों को करारा हार का सामना करना पड़ा था। इससे उनमें घोर निराशा व हताशा फैल चुका था। वे जहां-जहां भी गये अपने संबंधियों, साथियों और समर्थकों को इस घटना के बारे में बताया तो उन लोगों का भी मनोबल टूट गया। सामंतियों को समझ में आ गया कि सतनामियों को हराना या चुनौती देना आसान नहीं हैं, हराना तो दूर वे स्वयं अपनी रक्षा नहीं कर सके, इस प्रकार उनका मनोबल गिर चुका था और सतनामियों से मुकाबले का साहस भी खत्म हो गया था।
2. इस अभियान में सतनामियों को जातिवादी-सामंती-असमानतावादियों के विरुद्ध एक बड़ी जीत हासिल हुई थी। यह खबर जहां तक भी गया वहां सतनामियों को समानता और स्वाभिमान के लिए संघर्ष करने वाले शक्तिशाली लड़ाकों के रुप में प्रशंसा व ख्याति मिला।
3. इस अभियान में दूर-दूर से लोग जातिवादी-सामंतियों का साथ देने के लिए आये थे। स्थानीय सामंतों ने साथ नहीं दिया लेकिन कुछ लोगों ने अपना नैतिक समर्थन दिया था। इसके बाद भी सतनामी विजेता के रुप में उभरे इस घटना का यह असर हुआ कि कुंजराम लहरे, भुवनलाल रात्रे व श्यामलाल जोगांस के अनुसार ''कई दशकों तक इस क्षेत्र में शांति रहा''।

9.2 नकारात्मक परिणाम-

आगे चलकर जातिवादी-सामंती तत्वों ने दुश्मनी, बदले की भावना व जमीनों पर कब्जे के लिए सतनामियों के विरुद्ध स्थानीय व राष्ट्रीय स्तर पर बहुत मजबूत व स्थाई गठजोड़ बनाया, अनेक षड्यंत्र किये जिससे भविष्य में घातक परिणाम हुए और सतनामियों को काफी हानि उठाना पड़ा। भानदास जोशी के अनुसार - जमीन पर कब्जा करने की नियत से ठाकुरों ने काफी षड़यंत्र किया वे रीवा (म.प्र.) आदि स्थानों से बाहरी लठैत बुलाते थे और यहां के लोगों को परेशान करते थे। सन् 1901 ई. में लड़ाई झगड़ा शुरु हुआ और 1975-76 तक बीच-बीच में संघर्ष चलता रहा। कई बार ऐसा नौबत भी आया कि सामान्य लोगों को गांव छोड़कर दूसरे स्थानों में जाना पड़ा। इनमें बहुत से लोग गांव फिर वापस नहीं आये। कई लोगों का जमीन हाथ से निकल गया।

--00--

(अ) इस अभियान के अध्ययन से हमें सतनामियों के इतिहास, विचारधारा, संस्कृति, नीति, रीति-रिवाज व संघर्ष को समझने में मदद मिलता है।

1. **इतिहास-** इस अभियान के विभिन्न पहलुओं के अध्ययन से हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि सतनामियों का इतिहास कैसा रहा होगा। जिस प्रकार इस अभियान में सतनामियों ने रणनीतिक कौशल और युद्ध कला का इस्तेमाल कर दुश्मनों को हराया इससे यह अनुमान लगाने में आसानी होगा कि पूर्व में गुरुघासीदास, गुरुबालकदास के समय भी ऐसे ही संघर्षो व युद्धों से सतनाम आंदोलन का प्रारंभ व विस्तार हुआ होगा।
2. **विचारधारा-** इस अभियान में कहीं भी सतनामियों के तरफ से किसी अज्ञात अलौकिक या ईश्वरीय शक्ति के आराधना या पूजा करने का उल्लेख नहीं हुआ है। किसी भी साक्षात्कार में इस अभियान को बताने वाले ने उसके विषय में कुछ भी नहीं कहा है। की सतनाम का पूजा कर इस युद्ध को लड़ा गया। इससे यह पता चलता है कि सतनाम विचारधारा एक आधुनिक, वैज्ञानिक व तत्ववादी विचारधारा रहा है।
3. **संस्कृति-** इस ऐतिहासिक गाथा से हमें यह भी जानकारी मिलता है कि सतनामी किसी को प्रणाम नहीं करते थे बल्कि बराबरी के व्यवहार में विश्वास रखते थे। एक-दूसरे को सम्मान देने के लिए साहेब सतनाम का उपयोग करते थे। वे पवित्र जैतखाम के अलावा किसी के भी आगे अपना सिर नहीं झुकाते थे।
4. **पोशाक-वस्त्र-** सतनामियों का पोशाक काफी अच्छा व साफ सुधरा होता था, वे शानदार वस्त्र,पगड़ी व जूता का उपयोग करते थे।
5. **सवारी-** वे सवारी के लिए घोड़े का उपयोग कर.. ये यह सवारी कुछ स्थानों को छोड़कर लगभग हर गांव के लोग उपयोग में लाते थे। विवाह में डोला का प्रयोग किया जाता था। हालांकि हर परिवार इसका उपयोग नहीं करता था यह आम प्रचलन में नहीं था, लेकिन अगर कोई भी ऐसा चाहे तो कर सकता था।
6. **हथियार-** वे सशस्त्र होते थे घुड़सवार तलवार का उपयोग करते थे। लेकिन आम जन में तब्बल (लम्बे लाठी के शीर्ष में फरसा जुड़ा होता है) काफी लोकप्रिय हथियार था। दूसरे हथियार भी उपयोग में लाये जाते थे।
7. **स्त्री-पुरुष समानता-** सतनामियों में स्त्री और पुरुषों में भेदभाव न कर समानता का व्यवहार किया जाता था। खेती से लेकर संघर्षो तक स्त्री और पुरुष समान रुप से हिस्सा लेते थे।
8. **भू-स्वामी-** इस समय तक बेमेतरा, नवागढ़ व मुंगेली क्षेत्र में सतनामियों के पास पर्याप्त जमीनें थी जबकि दूसरे क्षेत्रों में उनका भूमि-सम्पत्ति छिना जा चुका था इस क्षेत्र में भी कुछ स्थानों पर बेजा कब्जा का प्रयास किया जा रहा था।
9. **पद कार्य के आधार पर-** सतनाम आंदोलन के समय से ही संगठन में पद वंशानुगत न होकर कार्य के आधार पर संगठन के द्वारा तय किया जाता था भुजबल महंत को सतनामियों का प्रधान संगठन के द्वारा नियुक्त किया गया था न कि वंश के आधार पर ।
10. **खड़ैत-** इस अभियान में खड़ैतों का महत्वपूर्ण योगदान था। तात्कालिक समय में हर गांव के प्रत्येक सतनामी घर से खड़ैत तैयार किये जाते थे। यह एक प्रशिक्षित लड़ाके होते थे। सतनाम आंदोलन के प्रारंभ से लेकर इस समय तक इनको महत्वपूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त था।

उपरोक्त बिंदुओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि यह अभिमान और उससे मिले तथ्य गुरुघासीदास जी द्वारा सन् 1820 ई. में प्रारंभ किये गये महान सतनाम आंदोलन का प्रतिबिंब है यह 1860 के बाद तक अपने मूल स्वरुप में मौजूद था। यह बात अलग है कि चौतरफा दमन के चलते यह एक खास क्षेत्र में सिमट चुका था।

(ब) यह अभियान एक प्रेरक गाथा:-

1. यह ऐतिहासिक अभियान गौरव गाथा जातिवादी -सामंतवादी-पूंजीवादी-असमानतावादी तत्वों के खिलाफ समानता व मानवाधिकार के लिए संघर्ष करने वालों को प्रेरित करता रहेगा।
2. इस अभियान में स्त्रियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था। यह हमारे देश के स्त्रियों के लिए स्वाभिमान और समानता के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा तो देता ही है इससे स्त्रियों का स्वाभिमान भी बढ़ा है।

--00--

11 विभिन्न तथ्यों का स्पष्टीकरण व निष्कर्ष

11.1 स्पष्टीकरण–

इस गाथा से संबंधित कई ऐसे तथ्य हैं जिसके विषय में लोगों के बीच कई तरह की भ्रांतियां हैं। इस पर तात्कालीन आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों, उपलब्ध दस्तावेज तथा जानकार लोगों के साक्षात्कार के माध्यम से स्पष्ट करने का प्रयास किया गया, इससे निम्न विवरण/निष्कर्ष प्राप्त हुए।

1. **इस युद्ध में बहुत से लोग मारे गये**-कुंजराम लहरे ने बताया था कि सतनामियों के साथ हुए ''इस युद्ध में कम से कम 10-12 जातिवादी-सामंती मारे गये थे'' भुवनलाल रात्रे व कुछ अन्य जानकार लोगों ने भी सतनामियों के विरोधियों के मारे जाने का जिक्र किया है। इस तथ्य को स्पष्ट करने के लिए कई लोगों से साक्षात्कार लिया गया। कई लोगों ने इस बात का समर्थन नहीं किया कि उस संघर्ष में किसी की मौत हुई थी, इतने भीषण संघर्ष में जहां दो पक्षों के हजारों लोग एक-दूसरे के विरुद्ध लड़े, कोई जनहानि न हुआ हो, ऐसा नहीं माना जा सकता, लेकिन हमें उस घटना से संबंधित कोई दस्तावेज नहीं मिला जिससे यह स्पष्ट हो सके कि इस संघर्ष में लोग मारे गये थे या नहीं।

2. **रनखेत माड़गे संगी रे चिरहुला के लड़ाई म रनखेत माड़गे**- कुछ लोगों के द्वारा इस गीत का उल्लेख किया जाता है। कि यह लोकगीत इस अभियान से संबंधित है इस गीत के बारे में SPM के खोजी दल ने चिरहुला के लगभग सभी जानकार लोगों से साक्षात्कार लिया जिससे यह पता चला कि-

   (1) यह गीत इस ऐतिहासिक अभियान से संबंधित नहीं होकर बहुत बाद में हुई घटनाक्रम (संघर्ष) से संबंधित है जो चिरहुला में हुआ था।

   (2) भगत गुलेरी ने अपने गीत ''देख बरतिया दुश्मन अड़गें'' में ''देख बरतिया दुश्मन.........चिरहुआ के वो मैदान... ...'' में इस बात का समर्थन किया है कि लड़ाई चिरहुला में हुआ था जबकि सभी ने लड़ाई पुरान में होना बताया है।

   (3) भानदास जोशी व अन्य ने बताया है कि यह गीत 1901 से शुरु हुए संघर्ष जो 1976 तक रुक-रुककर चला था से संबंधित है।

   (4) कुंजराम लहरे, भुवनलाल रात्रे, श्यामलाल जोगान्स, भानदास जोशी, गंगा जोशी, गणेश महंत, महाजन जोशी, रंजन जोगान्स सहित सभी लोगों ने पुरान में लड़ाई होना स्वीकारा है।

   अतः इस गाने को इस अभियान के साथ जोड़ना सही नहीं है यह सिद्ध होता है।

3. **भुजबल महंत सतनामियों के पहले महंत थे**-कुंजराम लहरे व कई अन्य लोग कहते हैं कि भुजबल महंत सतनामियों के पहले महंत थे इस बात का समर्थन भगत गुलेरी ने अपने गीत '' ढार नवलपुर के धरती म जन्में'' ये ''पहली महंत के जी उपाधि ल पाये...'' के माध्यम से कहते हैं कि भुजबल महंत पहले या सर्वप्रथम महंत थे। यह वास्तविक प्रतीत नहीं होता क्योंकि यह बात सभी लोग स्वीकार करते हैं कि गुरुघासीदास जी ने अपने समय में सतनाम आंदोलन की शुरुआत में ही संगठन की मजबूती के लिए छड़ीदार (साटीदार) भंडारी, महंत व राजमहंत का पद बनाया था। खोजकर्ता साहेब भुवनलाल रात्रे जी भी मानते हैं कि भुजबल महंत सतनामियों के पहले महंत नहीं थे।

   इसलिए यह तथ्य कि भुजबल महंत सर्वप्रथम या सतनामियों के पहले महंत थे, यह गलत सिद्ध होता है।

4. **सतनामियों ने पहली बार डोला का उपयोग किया**-कुंजराम लहरे कहते हैं कि ''भुजबल महंत ने पहली बार डोला लाया'' इस बात का समर्थन भगत गुलेरी ने अपने गीत '' ढार नवलपुर के धरती म जन्में'' के संवाद ''सुबह नागपुर सुप्रीम कोर्ट....मिलना चाहिये'' व गीत-''देख बरतिया दुश्मन अड़गे'' के संवाद ''सतनामी......का प्रचलन हुआ'' में किया है। इसके अलावा आज बहुत से लोग मिल जायेंगे जो इस बात का समर्थन करते हैं।

यह बात सही है कि भुजबल महतं ने पहली बार डोला लाया लेकिन यह बात सही नहीं है कि सतनामियों के तरफ से पहली बार डोला का उपयोग किया गया, क्योंकि यह बात कई ब्रिटिश अधिकारियों ने उल्लेख किया है तथा भुवनलाल रात्रे भी मानते हैं कि गुरु घासीदास जी के नेतृत्व में सन् 1820 ई. से सतनाम आंदोलन चलाया गया था। इस आंदोलन ने 1741 से 1820 ई. तक के पेशवाशाही मराठाओं द्वारा आम जनता के ऊपर लागू किये गये कई वर्जनाओं को तोड़ा था, अब सामान्य लोग मानव के गरिमा के अनुरुप भोजन, पोशाक, जूता, पगड़ी, आवास, वाहन-सवारी, घोड़ा-डोला आदि का उपयोग करते थे, उन्हें रोकने वाले लोग/समूह इस कार्य में बाधा उत्पन्न करने में असमर्थ थे। इसके बाद भी यह 'डोला' आम प्रचलन का रुप नहीं ले सका क्योंकि सामान्य लोग इसे ज्यादा महत्व नहीं देते थे। इसका मतलब यह भी नहीं है कि यह सतनामियों मे प्रचलित नहीं था।

इसलिए यह कहना कि पहली बार डोला का उपयोग किया गया सही सिद्ध नहीं होता।

5. **लड़ाई बारात में चिरहुला जाते समय हुआ या चिरहुला से बारात वापस होते समय-** कई लोगों ने अपने साक्षात्कार में बताया कि लड़ाई भुजबल महंत के बरातियों के चिरहुला आते समय हुआ, जाते समय शांत था, किसी ने नहीं रोका, कुछ लोगों के अनुसार-बारात के आते समय कुछ नहीं हुआ, बल्कि चिरहुला से बारात वापसी में लड़ाई हुआ। जबकि कुंजराम लहरे, भुवनलाल रात्रे, गणेश महंत व श्यामलाल जोगान्स के अनुसार-बारात के चिरहुला आगमन के समय और चिरहुला के प्रस्थान के समय होने की बात कही है।

इस प्रकार लड़ाई के संबंध में तीन तथ्य सामने आता है, लेकिन लड़ाई हुआ इस बात पर सभी सहमत हैं।

6. **सुन्दरी नेपलिहा गौंटिया की बेटी-** भगत गुलेरी ने अपने गीत ''देख बरतिया दुश्मन अड़गे'' में कहते हैं-''ग्राम चिरहुआ के नेपलिहा गौंटिया के यहां विवाह के रश्मों की अदायगी कर सम्मानपूर्वक ढारा-नवलपुर लौट आये'' आगे गीत ''बहु बिहा के लाये'' में ''चिरहुआ में नेपलिहा गौंटिया के बेटी आय'' इसमें भगत गुलेरी ने सुन्दरी को नेपलिहा गौंटिया की बेटी बताया है। इस तथ्य को चिरहुला के सभी लोगों ने अस्वीकार किया है, महाजन जोशी के अनुसार ''सुन्दरी बखारी की बेटी थी'' उस ऐतिहासिक घटना के समय यहां के किसी के भी पूर्वज का नाम नेपलिहा नहीं था, महाजन जोशी के पिता का नाम नेपाल था, जिनके किसी बेटी का नाम सुन्दरी नहीं था। इस बात का समर्थन भुवनलाल रात्रे, कुंजराम लहरे व गणेश महंत ने भी किया है। बखारी को बखरिया के नाम से जानते थे न कि नेपलिहा।

अतः नेपलिहा की बेटी सुन्दरी होना या भुजबल का उसके घर बारात लाना सही तथ्य नहीं है।

7. **भुजबल से चिरहुला में विवाद तथा बारात को रोका जाना-**''भगत गुलेरी ने अपने गीत ''ढार नवलपुर के धरती म जन्में'' के संवाद ''वहां पर उपस्थित....जा सकते हैं'' में कहते हैं कि भुजबल महंत को चिरहुला में रोक लिया गया। आगे गीत '' पगड़ी बांधे तब्बल धरे'' के संवाद ''राज महंत जी अपनी...... अधिकार नहीं है'' में बरातियों को चिरहुला में रोके जाने का जिक्र करते हैं, उनका यह दोनों ही तथ्यों को साक्षात्कार में नकार दिया गया है। कुंजराम लहरे, भुवनलाल रात्रे, गणेश महंत, श्यामलाल जोगान्स, रंजन जोगान्स सहित सभी लोगों ने स्पष्ट रुप से बताया है कि भुजबल महंत और उनके बारातियों को पुरान गांव में रोका गया था न कि चिरहुला में।

अतः यह बात असत्य है कि भुजबल महंत और बाद में उनके बारात को चिरहुला गांव में रोका गया था।

इसके अलावा भी कई ऐसे तथ्य सामने आये हैं, जो विरोधाभासी व असत्य हैं, जिन्हें स्थानाभाव के कारण उल्लेख नहीं किया जा रहा है।

11.2 निष्कर्ष-

इस महत्वपूर्ण ऐतिहासिक अभियान को विभिन्न लोगों के द्वारा अलग-अलग तरीके से बताया गया। जितने भी लोगों से विवरण प्राप्त किया गया है, उन सभी लोगों ने यह स्वीकार किया है सतनामियों का स्वाभिमानी जीवनशैली जातिवादी सामंती तत्वों को रास नहीं आता था।

सन् 1860 ई. में गुरु बालकदास जी के शहादत के बाद सतनामियों का शक्ति लगातार क्षीण होते जा रहा था, इसी का फायदा उठाते हुए सामंतियों द्वारा भुजबल महंत और उनके साथियों से उनके पहनावे, सवारी आदि को लेकर विवाद और अपमानित करने का असफल प्रयास किया गया।

भुजबल महंत और उनके सहयोगियों के द्वारा नागपुर में ब्रिटिश अधिकारी से सम्पर्क करने के उपरांत दिये गये आश्वासन तथा अपने अधीनस्थ अधिकारियों को शांति व्यवस्था बनाये रखने के निर्देशों के बावजूद सामंती प्रवृत्ति तथा सतनामियों के प्रति शत्रुता और नीचा दिखाने की इच्छा रखने के कारण स्थानीय अधिकारियों ने शांति व्यवस्था के प्रति कोई ध्यान नहीं दिया।

पहली बार खंदक की लड़ाई का जिक्र सभी लोगों ने किया है। जो छत्तीसगढ़ के अलावा संभवतः भारत के लिए नया युद्ध कौशल था इसी के दम पर सामंती तत्व सतनामियों को हराने का दावा कर रहे थे। इससे यह प्रतीत होता है कि जिस प्रकार गुरु बालकदास जी के हत्या का राष्ट्रव्यापी षडयंत्र किया गया था, इसी तरह यह भी एक बड़ा राष्ट्रवादी षडयंत्र था।

इस संघर्ष में जातिवादी सामंत का साथ बाहरी (वर्तमान मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश व अन्य स्थानों के) लोगों ने दिया था। किसी भी स्थानीय छत्तीसगढ़िया आदमी ने प्रत्यक्ष रूप से उसका पक्ष लेकर नहीं लड़ा था। सतनामी अपने अधिकार समानता और स्वाभिमान बचाने के लिए लड़ रहे थे, जबकि जातिवादी-सामंती-असमानतावादी, सतनामियों के अधिकार और स्वाभिमान को कुचलकर उनको नीचा दिखाने और अपने आपको श्रेष्ठ साबित करने के लिए लड़ रहे थे, इस लड़ाई में सतनामी खड़ैतों ने अदम्य साहस, वीरता, युद्ध कौशल और रणनीति का प्रदर्शन किया था। दुश्मनों के हर गतिविधियों पर पैना नजर रखा। उनके हर चाल का तोड़ निकालकर महिला-पुरुष सभी एक होकर उनके ऊपर टूट पड़े।

चूंकि यह घटना लिपिबद्ध नहीं किया गया था और न ही ऐसा कोई दस्तावेज प्राप्त हुआ है जिसमें इस घटना को विस्तार से जाना जा सके। जब कोई घटना पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुनते-सुनाते सामने आता है, तो उसमें कई तथ्य परिवर्तित हो सकता है, तथा भ्रम की स्थिति पैदा होता है। कुछ विरोधाभास के बाद भी मूल घटना पर सभी एकमत हैं तथा इस घटना के महत्व, प्रभाव तथा ऐतिहासिक सत्यता से इंकार नहीं किया जा सकता।

सभी स्रोतों से प्राप्त विवरण के अनुसार इस ऐतिहासिक अभियान जिसमें हजारों लोगों ने भाग लिया था, सतनामी और जातिवादी-सामंती-असमानतावादियों का परस्पर विरोधी गुट बना था, इस संघर्ष में सतनामियों ने अपने दुश्मन को हराकर अपने अधिकार और स्वाभिमान का रक्षा किया था।

--00--

12 उपसंहार

17 मार्च सन् 1860 ई. को गुरु बालकदास जी के शहादत के बाद सतनामियों का दमन शुरु हो गया। गुरु घासीदास, गुरु बालकदास के समय जिन लोगों ने अपनी भूमि व सम्पत्ति पर दोबारा कब्जा किया था, असमानतावादी विचारधारा को त्यागकर समतावादी समाज का निर्माण किया था। उनके खिलाफ चौतरफा दमन कर सतनामियों के हाथ से हजारों-हजार एकड़ भूमि और सम्पत्ति दमनकारियों के कब्जे में आता गया। सतनामियों का सबसे बड़ा ताकत उनका भूमि पर अधिकार और व्यापक एकता धीरे-धीरे खंडित होता गया।

जातिवादी-सामंती-असमानतावादियों ने क्षेत्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर सतनामियों के दमन के लिए मजबूत अघोषित गठजोड़ कर लिया था, ऐसी ही परिस्थितियों में यह घटना होती है। दमनकारियों के द्वारा सतनामियों के भूमि व सम्पत्तियों में कब्जा करने में सफलता प्राप्त करने पर उनके बढ़े हुए हौसले ने आम लोक समाज के लोगों को सन् 1741 से सन् 1820 ई. के बीच की (छत्तीसगढ़ के परिप्रेक्ष्य में) पेशवाशाही-मराठा आक्रमण के बाद व सतनाम आंदोलन के पूर्व की स्थिति में लाने को प्रोत्साहित किया जिसमें मनुष्य को मनुष्य के लायक नहीं समझा जाता उसे समानता का अधिकार नहीं होता। अपनी शक्ति के

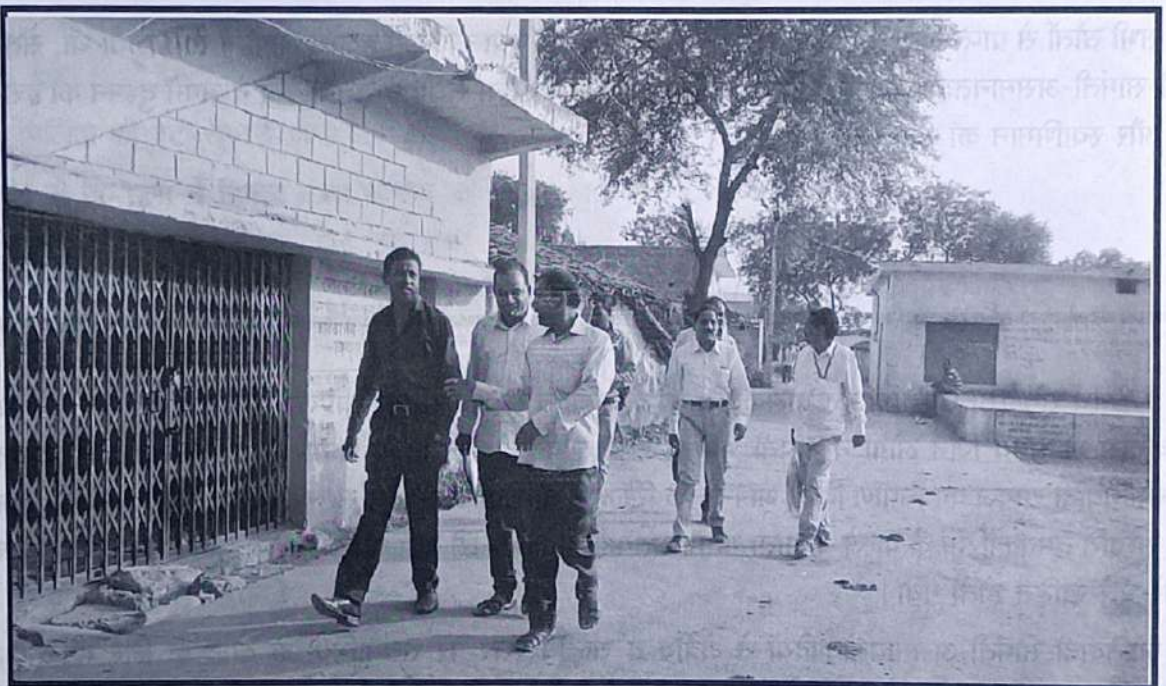
कमजोर होने के बाद भी सतनामी खड़ैतों (लड़ाकों / योद्धाओं) ने सामंतियों का न सिर्फ तगड़ा प्रतिरोध किया बल्कि उन्हें उनके ही घर-गांव में जाकर मार भगाया। बहुत दिनों तक यह गाथा लोक समाज में कायम रहा। धीरे-धीरे वह अब लगभग लुप्त होने के कगार पर है, किसी ने भी इस ऐतिहासिक गौरवशाली घटना को लिपिबद्ध नहीं किया। अगर इस गौरवगाथा को लिपिबद्ध कर लिया गया होता तो भुजबल मंहत, करिया, गजरी, बखारी भण्डारी, घासी और सुन्दरी जोगान्स जैसे लड़ाकों से लोगों को अन्याय-अत्याचार और असमानता के खिलाफ अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा मिलती।

सतनामियों के संघर्षो के कारण ही सतनाम आंदोलन का व्यापक दमन होने के उपरांत भी कम से कम आज छत्तीसगढ़ में किसी भी कथित जाति-वर्ग के आदमी को उनके रहन-सहन, पहनावा-पोशाक, सवारी-बारात में घोड़ी और डोला के प्रयोग करने पर जातिवादी-सामंती-असमानतावादी तत्वों के द्वारा सामूहिक-संगठित रुप से रोकने का साहस नहीं है, लेकिन इससे हमें खुश होने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि जनविरोधी विचारधारा नये-नये रुप में सामने आ रहा है, जहां वे सक्षम हैं वहाँ वे सीधे सामने आते हैं। जहां उन्हें प्रतिरोध की आशंका होती है वहां वे दूसरे रुप में अपने विचारों को मान्य करवाते हैं। अगर समतावादी विचारधारा के मानने वाले उनके षड़यंत्रों को न समझकर निष्क्रिय रहेंगे। तो वह दिन दूर नहीं की जब पूरे देश की तरह छत्तीसगढ़ में भी लोक समाज स्वाभिमान पूर्वक जीवन-यापन करने के लिए असमानतावादियों के इच्छा पर निर्भर रहेंगे।

यह गौरवगाथा सतनामियों के अलावा अन्य उपेक्षित, वंचित, शोषित, पीड़ित, पिछड़े वर्गो, मानवाधिकार के लिए संघर्षरत व्यक्तियों व जनसंगठनों में आत्मविश्वास और स्वाभिमान को बढ़ायेगा, इसी उम्मीद के साथ...

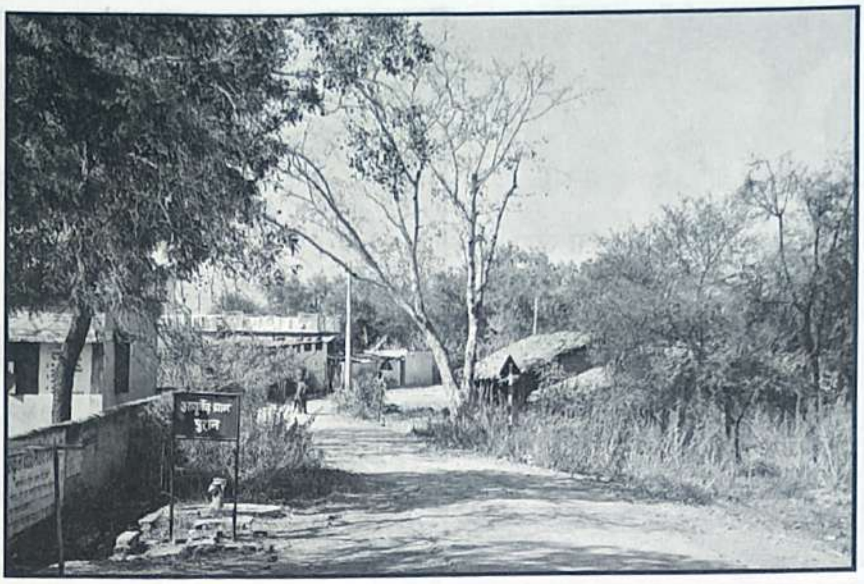
आपका

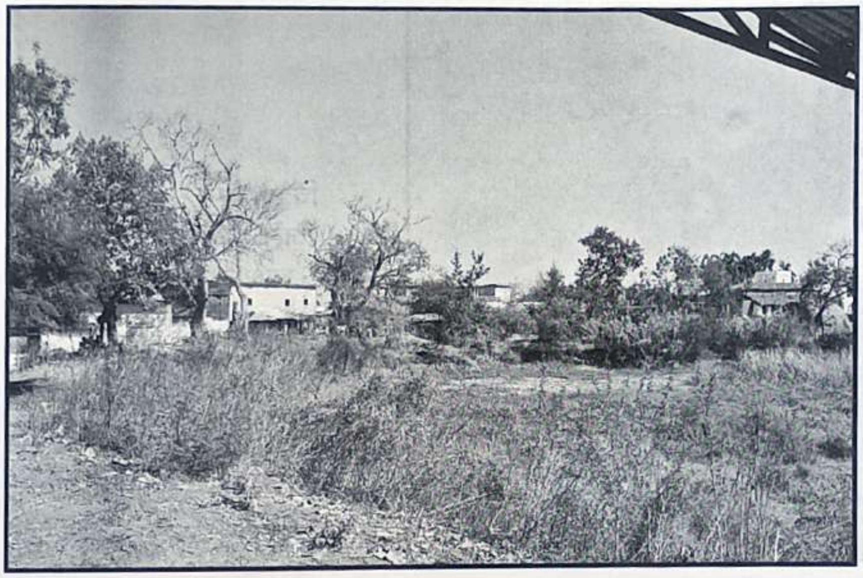
कुमार लहरे, हरीश पांडल



SPM के सदस्यों द्वारा ग्राम-चिरहुला, जिला-मुंगेली (छ.ग.) में शोध दौरा का एक दृश्य

चित्र :1. पुरान गांव, मुंगेली (छ.ग) में वह स्थान जहां जातिवादी सामंती, असमानतावादियों और सतनामी खड़ैतों के बीच संघर्ष हुआ था।





चित्र : 2 पुरान गांव, मुंगेली (छ.ग) में वह स्थान जहां जातिवादी सामंती, असमानतावादियों और भुजबल महंत के बीच विवाद हुआ था।

चित्र : 3. ग्राम-नवलपुर, बेमेतरा (छ.ग) में वह स्थान जहां भुजबल महंत का विशाल बाड़ानुमा निवास स्थान हुआ करता था





चित्र : 4. ग्राम-चिरहुला जहां पूर्व में बखारी भंडारी का 90 हाथ का घर हुआ करता था



चित्र : 5. ग्राम-चिरहुला, जिला-मुंगेली (छ.ग.) में साक्षात्कार लेते हुए SPM के सदस्य



चित्र : 6. ग्राम-चिरहुला, जिला-मुंगेली (छ.ग.) में साक्षात्कार लेते हुए SPM के सदस्य

स्मारिका : मानवाधिकार स्वाभिमान दिवस से संबंधित महत्वपूर्ण चित्रावली

चित्र : 7. ग्राम-चिरहुला, जिला-मुंगेली (छ.ग.) में साक्षात्कार लेते हुए SPM के सदस्य





चित्र : 8. बिलासपुर (छ.ग.) में मशहूर फिल्म अभिनेता श्री राजपाल यादव को स्मारिका प्रदान करते हुए SPM के सदस्य

चित्र : 9. गुरु बालकदास शहादत मेला स्थल ग्राम-मस्तूरी, बिलासपुर (छ.ग.) में केन्द्रीय मानवाधिकार सेवा संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संदीप गौतम जी व साथियों को स्मारिका प्रदान करते हुए



सुन्दरिया माता की वीरता

एक कहानी सूनी थी हमने,
बात अठ्ठारह सौ तिरासी की।
समानतावादी दमनकारियों से लड़ी
वह मर्दानी थी स्वाभिमानी थी ।।
दामिनी ने बिखेरी थी रोशनी
तारों का मंडप आसमां में छाया
अति सुशील सरल सुन्दरिया से
महंत भुजबल बहू बिहाने आया।।
वासुधा पुलकित हो उस दिन
सात सुरों में इकतारा बजाया था।।
सजा-धजा कर बांध शीश मुरैठा
बारात चिरहुला गांव आया था।।
बखरिया भंडारी की बेटी सुन्दरिया
बंधी वो साथ निभाने विवाह बंधन
सज गया डोला आसित हुई बहू
बेटा दयाल के हो गयी वो सुहागन।।
अद्म्य साहस से गये पहुंच खंदक में
बेटा घोड़े पर, बहू डोली सवार हुई थी
फंस गए दमनकारी के कुचक्रों में
टेसुआ नदी के तट युद्ध हुई थी।।
उस दिन सतनामियों के इतिहास में
एक नया सुनहंरा पन्ना जुड़ा था
सुन्दरिया माता ने अपनी वीरता
का अदम्य परिचय दिया था।।
धरती आसमां और चारों दिशा।
एक नारी के शक्ति को देखा था।
हाहाकार मच गया दुश्मनों में ।
म्यान से तलवार चमक आया था।।
अपना विराट रुप दिखाई थी वो।
दुश्मनों को खड़ैत रुप दिखाई थी वो
दुश्मनों को वीरता दिखाई थी वो
अपना स्वाभिमानी रुप दिखाई थी वो।
अन्याय और अनैतिकता के खिलाफ।
खंजर अधिकार का उठायी थी वो।।
देख सतनामी पुलकित हुए थे।
दमकते तलवार के वार से।
वह सुन्दरिया थी या शक्ति थी।
स्वयं वीरता की अवतार से।।
गगन भी वीरांगिनी वीरगाथा।
सहेज कर दिया था पुष्प उपहार।
जख्मी होकर भाग गये दुश्मन ।
आत्मरक्षा के लिए चलायी तलवार।।
आनंदित हुये लोग देख साहस।
प्रकृति ने की अमिट फूलों की वर्षा।
शौर्य का पराक्रम से हुई बारात वापस।
नवलपुर के बच्चे बूढ़े में था हर्षा।



पितृ मानसिकता

अस्तित्व को ढूंढते हुए, समय के साथ चलती रही।
समय का चक्र ऐसा चला, दामन भी मैं ढूंढती रही।।
चल पड़ी थी डगर पे मैं, मंजिलों को ढूंढते हुए
नजर मुझे ऐसे लगी , कि खुद की नजर झुकती रही।
क्या अस्तित्व है मेरा? ख्याल यही आता रहा
नर पिशाचों के भीड़ में, पैरो तले कुचलते रहीं
अस्तित्व को ढूंढते हुए समय के साथ चलती रहो ।
इन रात के हवाओ में, मन मेरा मचल रहा
सूर्य की किरणों में भी, मैं कहां सुरक्षित रही
ना मुझे मंजिल ही मिल रही, ना मिल रहा अस्तित्व है
अस्तित्व को ढूंढते हुए समय के साथ चलती रही ।
पर नहीं अब होगा ऐसा, ढाल मैं खुद बनाऊंगी
उंगली उठी मुझ अबला पे, सुंदरी मैं बन जाऊंगी।
डोला में सवार होकर, इज्जत से ससुराल जाऊँगी।
मंजिल को ढूंढ लिया, नारी को सबल बनाऊंगी
आंख दिखाने वालों को, नाको चने चबाऊंगी।
दमन करने वालों सामंतों को, नष्ट करते जाऊंगी।
अस्तित्व को बनाते हुए, समय के साथ चल रही
सतनाम आंदोलन की ढाल से शक्ति मेरी बढ़ती रही।

ननकी पात्रे
व्याख्याता
शासकीय हाईस्कूल
जिला-बेमेतरा (छ.ग.)

चैलेंज

नई जानच भुजबल महंत औ, तैं का समझत हच मोला रे
तोर म दम हो ही रोक लेबे, मैं ले के आहूँ डोला रे।

1. छोटे बड़े के कदर करै, ये लोकाचर
बेवहार होथे,
मान के बदला मान देना, ये नीत रीत
सदाचार होथे।



परणाम कहे सतनाम कहेंव, मिरची
कस लगगे तोला रे
तोर म दम हो ही रोक लेबे, मैं लेके आहूँ डोला रे।

2. उज्जर ओन्हा पगड़ी,पनही, ये तो तन के सिंगार होथे।
स्वाभिमान से जीये के, हर मनखे ल अधिकार होथे।
हच जलनखोर नइ देख सकच, हावै पापी तोर चोलारे
तोर मा दम हो ही रोक लेबे, मैं लेके आहूँ डोला रे।

3. तैं कान खोल के सुन सामंत, अब तोर हमर टकरार हावै।
आन बान सम्मान खातिर, हर चुनौती स्वीकार हावै
मैं रन म धूल चंटा देहूं, झन आंख देखा तैं मोला रे
तोर म दम हो ही रोक लेबे, मैं लेके आहू डोला रे

4. नवलपुर ले चिरहुला, सज धज बराती आही रे
बखरिहा के बेटी सुंदरी, बन बहू मोर जाही रे
बेमउत जेला मरना हो ही, वो देखाय अंगरी ओला रे
तोर म दम हो ही रोक देबे, मैं लेके आहूं डोला रे।

5. मैं सुने रहेंव अब देख डरेंव, अति आतंक अत्याचार हावै
बिन लड़े हार जे मान लेथे, वो मनखे ल धिक्कार हावैं
जोर जुलूस के आंधी रोके बर, अब भड़क के रहही शोला
रे
तोर म दम हो ही रोक लेबे, मैं लेके आहूं डोला रे।

नई जानच भुजबल महंत औ, तैं का समझत हच मोला रे
तोर म दम हो ही रोक लेबे, मैं ले के आहूँ डोला रे।

जगतारन डहरे
ग्राम-किरारी, पो.-मस्तूरी
जिला-बिलासपुर (छ.ग.)
मो. 9907274869

अब वक्त सफर की



वक्त अब आ गया, सफर तय करने की।
मंजिल, पदासीन, जमीन, जहोद्दत पाने की।।

यू थका हारा न बैठ, बन्द चार दीवारों में।
सैलाब सा आग उगलने मजबूत किनारों में।।
अब तक मंशा हो बारिकियां पढ़ने की।
वक्त अब आ गया, सफर तय करने की।।

न हताशा न तमाशा, न दूर दहलीज।
बैसाखियाँ सहारे, होंगे कब तक अपाहिज।
पन्ने इतिहास के पलट जरा, याद समेटने की।
वक्त अब आ गया, सफर तय करने की।।

तेरे ताकत हर दम चलते साथ हैं।
तू बदल तूफां सा, न आगे मात है।।
अब जहोद्दत है तर्जनी कुछ करने की।
वक्त अब आ गया, सफर तय करने की।।

राजेश कोशले
माकरी कुण्डा, कबीरधाम (छ.ग.)
मो.9993648836

स्वाभिमान की तलवार

स्वाभिमान की तलवार, अंग-अंग में करता वार
यदि छिना ना होता सतनामी से डोला का अधिकार
भुजबल महंत खूब दहाड़े ठाकुरों को है ललकारे
स्वाभिमान पर आंच आया, तो उठा ली तलवारें
जब ठाकुरों के गढ़ में, घोड़ा चढ़कर आया
भुजबल महंत की वेशभूषा देख क्षत्रिय अभिवादन किया।
जय सतनाम का अभिवादन सुन क्षत्रिय बौखलाया।
साहब को विधर्मी समझकर दबाने का प्रयास किया।
गहमा-गहमी खूब हुआ, महंत जी नहीं घबराया।
साहब को हाथ न लगा सके, ठाकुर हिम्मत हार
स्वाभिमान की तलवार अंग-अंग में करता वार।
यदि छीना ना होता सतनामी से डोला का अधिकार...

दमन के दौर में भुजबल महंत, घोड़े की सवारी करते थे।
पुरान में ठाकुर घोड़े से उतरकर, पैदल जाने को कहते थे।
मंजूर नहीं घोड़े से उतरना, भुजबल महंत कह दिये थ।
कायर नहीं क्रांतिकारी हैं, स्वाभिमानी है संस्कार
स्वाभिमान की तलवार अंग-अंग में करता वार।।
यदि छीना ना होता सतनामी से डोला का अधिकार...
और चुनौती दे दी ठाकुर को, तैयार रखना सेना
डोला यहीं से गुजरेगा, अब जो करना है कर लेना।



बहू ब्याह ले जाऊंगा, डोला प्रथा चलाऊंगा।
सतनामी का खून हूं, मैं पीछे नहीं हटूँगा।
स्वाभिमान की तलवार अंग-अंग में करता वार
यदि छीना ना होता सतनामी से डोला का अधिकार...।

वधू को लूटने के इरादे से षड्यंत्र किया
सवर्ण छिपकर बैठे थे, डोला पे प्रहार किया।
साहसी थी सुन्दरी भी, हाथ में हथियार लिया
डोला की ओर आने वाले दुष्टों पे वार किया।
अस्मिता की रक्षा खतिर उठा ली तलवार
स्वाभिमान की तलवार अंग-अंग में करता वार।
यदि छीना ना होता सतनामी से डोला का अधिकार...।
कायर तुम्हारे दादा-परदादा, पीठ पीछे से वार किया
क्षत्रिय कहलाने वाले क्यों, अंधेरे में वार किया।
सतनामी योद्धाओं के आगे फिर भी घुटना टेक दिया
सवर्णो की कुटिल चाल, सतनामियों ने कुचल दिया।
चिरहुला, मुंगेली की लड़ाई, जीता पुरखों ने हमारे
सफेद झंडा लहराया, इतिहास रचा पुरखों ने हमारे।।
स्वाभिमान की तलवार अंग-अंग में करता वार
यदि छीना ना होता सतनामी से डोला का अधिकार...।।

--00--

सम्मान के लिए संघर्ष करो

डोला शब्द का संबंध मानव स्वाभिमान से हैं जो सम्मान व शान का परिचायक है। डोला में बहू बेटियों को विदाई देना मतलब सम्मान देना इनकी महत्ता को कमतर नहीं आंका जा सकता। पुरान की घटना कोई मामूली घटना नहीं हैं, हालांकि इतिहास में इस घटना को जगह नहीं मिली, ये अलग बात है इसलिए नहीं मिला क्योंकि यह जो लड़ाई है वह सीधा सतनामी और स्वर्णो के बीच था। इसमें कोई दोराय नहीं है, किंतु इस लड़ाई को इस नजरिया से देखना भी गलत होगा। यह समस्त मानव जाति का सम्मान व साफ सुथरी पहनावा (जातीय व जन्म आधारित ऊंचनीच व्यवस्था के खिलाफ) मानव स्वाभिमान का लडाई था।

छत्तीसगढ़ में सतनामियों का राजा गुरु बालकदास की हत्या सन् 1860 के बाद मानों सतनामी समाज में क्रांतिवीर पैदा होने का दुःसाहस नहीं करेगा। इस षडयंत्र के तहत गुरु बालकदास की हत्या किया गया था।

''गुरु घासीदास, गुरुबालकदास क्रांति का बीज बोये थे, उस मिट्टी से क्रांति का अंकुरण सूख नहीं सकता। जरुरत है हमें केवल एकता के बरसात होने की, सूरज के किरण पड़ते ही कोई उगने से रोक नहीं सकता।''...

सन् 1883 में भुजबल महंत नाम के एक निर्भिक योद्धा का अस्तित्व सामने आया। सतनामी समाज का नेतृत्व किया। वह छ.ग. के बेमेतरा जिला के ग्राम नवलपुर का निवासी था। भुजबल महंत साहब अपने पुत्र के लिए पुत्र वधु की तलाश में जब

मुंगेली जिला कि तरफ कूच किया तब पुरान नामक गांव में सवर्ण लोग मानवीय गरिमा का अपमान करने का दुःसाहस किया। भुजबल महंत एक निडर व्यक्तित्व के धनी थे, वे खुलकर सवर्णों को मुहतोड़ जवाब दिया। सवर्णों को सबक सिखाने के लिए मन में प्रण ठाना। चिरहुला पहुंचकर लोगों को घटना से अवगत कराया तब भण्डारी अपनी पुत्री सुंदरी का विवाह भुजबल महंत के पुत्र दयालदास से करने को राजी हुए एवं डोला में विदाई देने की समाज के लोगों में सहमती बनी। क्योंकि उस दौर में डोला का अधिकार एकमात्र सवर्णों को था। जो अपने बहू-बेटियों को ससम्मान डोला में विदाई देते थे। एवं अन्य पिछड़ी, जातियों को ऐसा करने की मनाही था। सवर्ण समझते थे कि ऐसा पिछड़े शोषित जातियों के करने से उनके सम्मान पे कुठाराघात तथा परंपराओं का उल्लंघन हैं। इसी हक अधिकार बराबरी मानव सम्मान के लिए सतनामी समाज के क्रांतिवीर पूर्वजों ने जो अपनी कांतिकारी स्वरुप से समाज में क्रांति का बीज बोया था, उनका ही भुजबल महंत साहब जैसे लोग अंकुरण थे। वे पूर्वजों के नक्शेकदम पर चलकर दिखाये। मानव स्वाभिमान एवं बहू- बेटियों की अस्मिता की रक्षा करने क्रांतिकारी कदम उठाया। सवर्ण भी इधर षडयंत्रपूर्वक डोला के साथ वधू को लूटने का योजना बना रखे थे। सतनामी भी पहले से सतर्क थे, सतनामी और सवर्णो के बीच कड़ा संघर्ष हुआ। जो कि छ.ग. में पुरान-मुंगेली की लड़ाई के नाम से जाना जाता है। जिसमें बहू भी तलवार चलाकर दुष्टों पे वार किया और अपने अस्मिता कि रक्षा की। इस तरह सवर्णो को धूल चटाकर सतनामी विजयी हुआ। ''मैं समझता हूं कि भुजबल महंत साहब पूर्वजों के क्रांति रुपी पेड़ में पानी डालकर नव क्रांति विकसित कर अपने लक्ष्य को प्राप्त किया। तब भुजबल महंत का नाम छ.ग. में प्रख्यात हुआ।''

डोला प्रथा के महत्व को समझने के बाद भी पढ़े लिखे लोग नासमझ होने का नाटक या कहे अपरिपक्व बुद्धि का परिचय देते है। क्योंकि इनको समझाने के बाद भी इनका घुन (कीड़ा) मस्तक में पहुंचकर तुरंत संचार साधन का काम करता हैं और संदेश भेजता है कि तुम्हारा डोला से क्या लेना देना हैं? डोला क्या है? डोला प्रथा को चलाते रहने से क्या हासिल होगा? हमारा क्या बिगड़ा? बराबर सम्मान हैं, हम सतनामी रे, ये अहंकार प्रथमतः देखा जाता है। अब मैं शेखचिल्ली के संतानों से कहना चाहता हूं सुनो, डोला हमारी बहू बेटियों की आन-बान-शान हैं। (अस्मत हैं) मानव का स्वाभिमान है, जिसे बचाने के लिए भुजबल महंत (सतनामियों) ने सवर्णो से लोहा लिया था। डोला का लड़ाई कोई सामान्य घटना नहीं है यदि आज के दौर में यही घटनाक्रम आप पें दोहराया जैसा कि- आज तत्कालीन समय में विवाह / बारात जाने के लिए वर पक्ष सम्मानपूर्वक दुल्हा-दुल्हन के लिए मार्शल, बोलेरो आदि परिवहन साधनों का उपयोग करता है, जिसमें ससम्मान बहू बेटियों को विदाई दिया जाता है। किंतु इसके ठीक विपरीत अब सवर्ण आपसे ये कहें कि तुम पिछड़े-शूद्र हो इसलिए मार्शल, बोलेरो जैसे परिवहन साधन का उपयोग नहीं कर सकते इसमें केवल हमारा अर्थात सवर्णो का एकाधिकर हैं तथा वधू पे हमला करे तो तुम्हारा खून खोलेगा कि जीरो डिग्री में चला जायेगा। क्या करोगे? मुकाबला (संघर्ष) या कायर बनकर दुश्मनों का शरणागत। मेरे वीर ऊर्जावान नौजवान सतनामी भाई इसका परिणाम स्वयं सोंचे, इसीलिए हम कहते हैं कि ये सवाल करने से पहले यदि सतनामी उस घुन (बीमारी) को कंट्रोल (हत्या) कर तर्क कि कसौटी में कसता तो सृष्टि का उत्थान / पतन समझ में आता और इतिहास , विरासत, संघर्ष का महत्व समझता।

''शेर कुल के वंशज आज कैसे नहीं दहाड़ रहे। कुत्ता सा दुम हिलाते फिरे इसका मतलब क्या समझे गुलामी है स्वीकार रहे।''

तात्कालिक समय में सतनामी समाज कि स्थिति बद से बदतर हो गया है। जिसका अंतिम परिणाम गुलामी और विनाश को न्योता देने जैसा है। सामाजिक परिवेश को देखने से साफ जाहिर होता है कि सतनामी समाज के नवजवानों को अपने शिक्षा-डिग्री में विश्वास कम बल्कि उन लुटेरों के चरण में ज्यादा हैं जो डिग्रीधारियों के मनोदशा को बयान करता है। ये तर्क और मुद्दों में बात करने से कतराते है। अब बात करते हैं मर्द-मर्दानगी, लाठी-डंडे, तलवार की सतनामी समाज में भी डिग्रीधारियों से लेकर अशिक्षित वर्गो को उनके आका अर्थात् तथाकथित लोगों कि शोभायात्रा व अन्य आयोजनों में तलवार लहराते देखा जा सकता है। अब इनको ये पूछा जाये कि क्या कुछ खतरे में हैं? क्या कोई सामाजिक व्यवस्था परिवर्तन के लिये लड़ाई हैं? तो इनके पास कोई जवाब नहीं होगा। हमारा मानना है कि ये सब अकारण ही शोभा नहीं देता यदि तुम समझते हो कि तलवारे उठा लेने मात्र से तुम्हारा गौरव बढ़ेगा तो ये गलत बात है। जब तक आप अपने सिद्धांतों को स्पष्ट नहीं करते मुद्दों कि लड़ाई नहीं लड़ते और ये नहीं बताते कि किस बात के लिए आप आंदोलनरत हैं, तब तक यह व्यर्थ है, क्योंकि असल मायने

में मर्द वहीं व्यक्ति होता है जो समाज जहांन, शोषित पीड़ित मानवता के लिए अपनी मर्दानगी दिखाये उनके हक-अधिकार की लड़ाई लड़ और कुर्बानी दें।

''दुष्ट बेड़ियां बंद करते थे पुरखों कि एक दहाड़ से, सतनाम धर्म का मुद्दा ही शूरवीरों का हथियार थे।''

सतनामी समाज में बहुत से क्रांतिकारी पैदा हुए जैसे- गुरु घासीदास, गुरु अमरदास, भुजबल महंत, गुरु बालकदास और इनके अंगक्षक सरहा और जोधाई इनमें से अधिकांश योद्धाओं ने समाज खातिर लड़ते हुए वीरगति (शहादत) को प्राप्त हुए। आज समाज सही नेतृत्वकर्ता (तर्क) के अभाव में विचारों की हत्या कर पूर्वजों के विपरीत दिशा में जा रहा है, इन क्रांतिकारियों के नक्शेकदम पर समाज को चलने कि आवश्यकता है।

पूर्वजों के बोये बीज को अंकुरित होने की चाह है- हुआ भी लेकिन दुष्टों की नजर पड़ने से वह अंकुरण मिट्टी में छिप सा जाता है। आज यही बीज संगठन के रुप में विशाल वृक्ष की भांति अपनी जड़े मजबूत कर रहा है लेकिन कुछ तथाकथित ईश्वरवादी व अन्य षडयंत्रकारी स्वार्थी लोगों को रास नहीं आता तथा उसे दबाने षडयंत्र करते रहते हैं। यह बीज इनके दबाने से दबने वाला नहीं यह मिट्टी से बाहर निकलेगा ऐसा हमें विश्वास है और विशाल वट वृक्ष का रुप धारणकर दुष्टों को अपनी एक हिलोर से ही चुकनाचूर कर एक दिन सफल होगा।

चिंतामणी देशलहरे

ग्राम- डोमनपुर पो.-दशरंगपुर

तहसील व जिला-मुंगेली (छ.ग.) 495330

मो. 8959233107

--00--

बखारी के बेटी तैं

गवंई के नोनी तैं, हिम्मत हौसला तोर जागे।
हाथ लपकईया ह रण छोड़ भागे।।
अतेक दिन ले गुमान रहिस, अपने ऊपर भारी।
अपने ले बनाए जाल म, फंदगे होगे ग लाचारी।।
शेर ल सवा शेर मिलगे, ओ चिरहुला के नारी।
पीठ देखाके भागे सामंत, निकलगे ग होशियारी।।
गवाई के नोनी तै, हिम्मत हौसला तोर जागे।
हाथ लपकईया ह रण छोड़ भागे।।
सन् 1883 के इतिहास, चलव सब ला बताईन।
शाम-दाम-दण्डभेद नीति ल, अब झन भुलाईन।।
सुघ्घर कपड़ा, डोला-पालकी, पगड़ी पनही ल अपन बताईन।
स्वाभिमान के हक हे सब ला, सुन्दरी सबला पढ़ाईन।।
गवाई के नोनी तै, हिम्मत हौसला तोर जागे।



हाथ लपकईया ह रण छोड़ भागे।।
गली म उंकर जाके भुजबल, नाक म डालिच नकेल।
षडयंत्र करैया मन के, अब होगे उलट-फेर।
तलवार के धार देख सुन्दरी के, सामंत होगे ढेर।
फेर लागबे सतनामी मन ले, नई रैही तोर खेर।।
गवाई के नोनी तै, हिम्मत हौसला तोर जागे।
हाथ लपकईया ह रण छोड़ भागे।।

टेकचंद पांडल

बिलासपुर छ.ग.

मो. 9977170618

खूब लड़ी सुन्दरी वह तो चिरहुला की मर्दानी थी

सतनामी हरबोलो के मुंह हमने सुनी कहानी थी
खूब लड़ी सुन्दरी वह तो चिरहुला की मर्दानी थी।

स्वाभिमान का शोला रग-रग में भड़का दिया,
सोये हुए समाज को जिसने नींद से जगा दिया,
चिरहुला-नवलपुर को सतनामियों का इतिहास बना दिया,
बखारी भंडारी की बेटी सुन्दरी के शौर्य की कहानी थी,
खूब लड़ी सुन्दरी वह तो चिरहुला की मर्दानी थी।

मत भूलना ऐ साथियों
भुजबल बखारी और सुन्दरी के इतिहास को,
जगा दिया साहस से जिसने हर आमो-खास को
डोला-बारात-सवारी की सामंत ने की मनाही थी
बराबरी का अधिकार है, हमें भुजबल ने कही थी
मानवाधिकार स्वाभिमान की ये अनूठी कहानी थी
खूब लड़ी सुन्दरी वह तो चिरहुला की मर्दानी थी।।

डोला में बैठ सुन्दरी चली नवलपुर की ओर
सामंतों में मची खलबली सतनाम आंदोलन हर ओर
पुरान गांव बन गया अखाड़ा,
सतनामियों ने सामंतों को पछाड़ा,
चमकने लगी तलवार सुन्दरी की धार नहीं पुरानी थी,
खूब लड़ी सुन्दरी वह तो चिरहुला की मर्दानी थी।

हौसले पस्त हो गये सामंतों की सामग्री धरी की धरी रह गई
सन् 1883 की गदर सतनामियों की अमर इतिहास बन गई
मत भूलना वो लड़ाई जो हक अधिकार की कहानी थी,
सतनामी हरबोलो के मुंह हमने सुनी कहानी थी,

खूब लड़ी सुन्दरी वह तो चिरहुला की मर्दानी थी।
खूब लड़ी सुन्दरी वह तो चिरहुला की मर्दानी थी।

हरीश पांडल
बिलासपुर (छ.ग.)
मो. 8889725245

हम वफा की बस्तियां जलने न देंगे



हम वफा की बस्तियां जलने न देंगे,
आस्तिनों में सांप कोई पलने न देंगे,
भील का अंगूठा काट लो तुम
अब अर्जुनों का तीर भी चलने न देंगे।
दल में नहीं तो दिल में फिर कैसे रहोगे,
अब जोर जालिमों का भी चलने न देंगे,
क्यारियां तुमने लगाई थी भुवन जी,
उम्मीदों के शाम भी ढलने न देंगे।
लूटे बहुत हैं नाम को बदनाम करके,
अब भुवन के नाम को डूबने न देंगे।
मत समझ की बाग मेरे बाप की जागीर है,
'मेरसा' हम बदनीयत की शूल भी पलने न देंगे।

है कहां हमदर्द तेरे इस जमाने में

है कहां हमदर्द तेरे इस जमाने में,
वक्त को जाया न कर तुम दर्द गाने में,
झूठ का पड़ला भले ही हो बहुत भारी
सच कभी डिगता नहीं है डिगाने में।
उनकी आंखों की नमी तुम देख मत कहना,
वो बड़े माहिर हैं हंस के गाल फूलाने में,
तुम नदी की धार जरा से रोक लो छलकर।
आग वो तूफां नहीं दबते दबाने में,
कुरबानियां बेकार में जाती नहीं यारों,
नहीं बनता कोई इतिहास कभी पीठ दिखाने में।
कर सकेंगे हम नामुमकीन फतह हासिल,
वक्त लग रहा है अभी धूल हटाने में।

दुर्गा प्रसाद मेरसा
ग्राम-बकरकुदा, पो.आ.-टिकारी
विकासखण्ड-मस्तूरी, जिला बिलासपुर (छ.ग.)
मो. 8319792118

सतनाम धरम ल

सतनाम धरम ल दबाये हे, भुलवाये हे
दमनकारी ग भैया नोहय लबारी
दमनकारी ग भैया नोहय लबारी
दमनकारी ग भैया नोहय लबारी

1. गुरु अमरदास के योग शिक्षा ज्ञान ल
देख नई सकिन वो दमनकारी
गुरु के परमान ल
बहुत बड़े चाल चलिन हे ग बनवादिन ब्रम्हाचारी
ग भैया नोहय लबारी
सतनाम धरमल दबाये हे भुलावाये हे

2. गुरु बालकदास के रावटी ल देखके
दमनकारी मन गुरु ल मारिन
ओमन धोखा दे के
भण्डार, तेलासी ह गिरवी धराये
रहिके गुरु परिवार भारी ग भैया नोहय.
...
सतनाम ....



3. ढारा नवलपुर के भुजबल महंत
वो हु संघर्ष करिस भारी ग
सामंत शाही मन वोहु ल गिरा दिन
लुटलिन खेती बारी ग
सतनाम इतिहास नवलपुर म दबे हे
अब जानव सब सतनामी ग भैया
नोहय लबारी.... सतनाम धरम।

सम्मान गीत

बहू बेटी के इज्जत अउ सम्मान खातिर ग
डोला प्रथा चलाये
ढारा, नवलपुर के भुजबल महंत ग
स्वाभिमान के रस्ता बताये ..
बहू बेटी के ....

1. जुलूम, अत्याचार करइया के संघर्ष रहिस भारी ग
हमरो अधिकार हे चढगे कानून के दुवारी ग
ढारा, नवलपुर के.....
बहू बेटी के ....

2. सतनाम सुनत बैरी के जमके छाती फाटे जी
सहे नई सके बैरी, झगरा बर रोम्हियागे जी।
दारा नवलपुर के...........
बहू बेटी के.............

3. डोला के परमान ले के
भुजबल महंत लाये जी चिरहुला ले
बहूविवाह के नवलपुर म लाये जी
ढारा नवलपुर के............
बहू बेटी के....................

दोहा

1. वो माटी के कदर करव
जे माटी म हमर इतिहास पड़े हे
नारी के सम्मान खातिर सुन्दरी माता,
डोला ले कूद पड़े हे

2. जे माटी ले भुजबन महंत डोला प्रथा चलाये
मानव के स्वाभिमान खातिर
प्राण दांव म लगाये।

गणेश महंत
नवलपुर (ढारा)
जिला-बेमेतरा (छ.ग.)

26 अप्रैल मानवाधिकार स्वाभिमान दिवस की हार्दिक बधाई....

शूरवीर थे भुजबल जिन्होंने स्वाभिमान की मशाल जलाई थी।
चिरहुला और नवलपुर को, समाज की इतिहास बनाई थी।।



मान.अजीत जोगी
संस्थापक अध्यक्ष
जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ (जे)

जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ (जे)
चुनाव चिन्ह
"सर्व वर्ग हिताय, सर्वधर्म सुखाय"



बृजेश साहू
प्रत्याशी
विधानसभा बिलासपुर

---

26 अप्रैल मानवाधिकार स्वाभिमान दिवस की हार्दिक बधाई....

BHUWAN HOSPITAL
HEALTH CARE

भुवन हॉस्पिटल





मधुमेह,टी.वी.एक्सीडेंटल,लकवा,
हृदय रोग, स्टोक, स्त्री रोग,
सभी प्रकार के बीमारियों का
ईलाज एवं भर्ती सुविधा

24 घण्टे आपातकालीन सुविधा

जयरामनगर मोड़ (भुवन चौक) मस्तूरी, जिला-बिलासपुर (छ.ग.) मोबा. 9589882882, 9300733157


26 अप्रैल मानवाधिकार स्वाभिमान दिवस की हार्दिक बधाई....
असीम कुमार महिलांगे (अंगद)
JCB ट्रेक्टर एवं लोकल सप्लायर
उच्चकोटि के लाल ईंट के लिए सम्पर्क करें
असीम कुमार महिलांगे
मोबा. 6261573487
महेन्द्र कुमार महिलांगे
मोबा. 9131563542
पता- ग्राम-लावर (कोनी), वि.खं.-मस्तूरी, जिला-बिलासपुर (छ.ग.)
गोंडवाना स्वदेश
आदिवासी नेतृत्व की हत्या करता भाजपा सरकार
17 मार्च
गुरुबालकदास
शहादत दिवस
कौन थे उनके हत्यारे?
मानवाधिकार स्वाभिमान दिवस
दक्षिण कोसल
तुलकातोंग मुठभेड़ नहीं आदिवासियों का नरसंहार
'स्मारिका / पत्रिका' प्राप्त करने हेतु नीचे लिखे पते पर सम्पर्क करें-
हरीश पांडल, सांईबाबा अस्पताल के सामने, रिंग रोड नं.2, गौरव पथ, बिलासपुर (छ.ग.), मोबा. 8889725245, 7898992499
Master Graphics # 9827958508